ओ३म्

आर्य गीत कोश

संकलनकर्ता : यशपाल शास्त्री

दिनांक	सदस्य संख्या	दिनांक	सदस्य संख्या

आर्य गीत कोश

संकलनकर्ता

यशपाल शास्त्री

आर्य परिवार योजना

प्रकाशक
आर्य परिवार योजना
85, बलदेव पार्क (नजदीक सनातन धर्म मंदिर)
दिल्ली-110051

वितरक
किरण प्रकाशन
85, बलदेव पार्क, दिल्ली-110051

प्रथम संस्करण
2006

आवरण
वरुण

मूल्य
एक सौ पचास रुपये

मुद्रक
संजीव ऑफसेट प्रिंटर्स
कृष्णा नगर, दिल्ली-110051

ARYA GEET KOSH
Collection by : Yashpal Shastri
Price : Rs. 150.00

कुछ बातें आपके लिए

लोक-व्यवहार में गीतों का बड़ा सार्थक महत्त्व है। वैदिक काल, मध्य काल और वर्तमान काल में गीतों को पढ़कर, गाकर तथा सुनकर मनुष्य ने अपने-अपने दुःखों को दूर करने की अनुभूति प्राप्त की है। इसलिए गीत हमारे सुखों को बढ़ाने में भी सहायक होते हैं। लेकिन यहाँ यह ध्यान देने योग्य तथ्य है कि वे गीत अश्लीलता से परे हों तभी वे सुखानुभूति का कारण बन सकते हैं। प्रस्तुत गीत कोश अश्लीलता से पूर्णतः परे है। इस गीत कोश में अनेकानेक महात्माओं और कवियों के गीतों का संग्रह है जिनका गायन और श्रवण आज के व्यक्ति को वास्तविक उद्देश्य की ओर ले जाता है। यह कितने दुर्भाग्य की बात है कि वास्तविक उद्देश्य की प्राप्ति के लिए मनुष्य के पास समय का अभाव है किंतु सांसारिक, नाशवान, भौतिक पदार्थों व ऐश्वर्य को बटोरने के लिए उसके पास समय ही समय है। इस भूल को वह तब अनुभव करता है जब आवश्यकता से भी अधिक बटोरने के बाद भी इच्छाएँ तृप्त नहीं हो पाती तथा इस भाग-दौड़ में ही उसका जीवन-रथ किनारे लग जाता है।

अतः मनुष्य को आवश्यक है कि चुन-चुनकर अपने दोषों को त्यागता जाए और संकल्पपूर्वक एक-एक सद्गुण को धारण करता जाए। वास्तव में इस गीत कोश के गीत मनुष्य को वास्तविक उद्देश्य की ओर प्रेरित करते रहेंगे। अगर इस गीत कोश के गीतों में यह मानवीय मूल्य न होते तो यह गीत कोश भी उसी प्रकार व्यर्थ सिद्ध होता जैसे आपके घर में आई अनेक पत्रिकाएँ बार-बार नहीं पढ़ीं जातीं। यहाँ किसी अनाम कवि की ये पंक्तियाँ ध्यातव्य व श्लाघनीय हैं—

चाहे जितना रूप भरा हो, गंध नहीं तो सुमन व्यर्थ है।
चाहे जीवन-भर मिलना हो, स्नेह नहीं तो मिलना व्यर्थ है।।
उमड़ पड़ा ना दर्द देख जो, सुंदरतम वह नयन व्यर्थ है।
छू न सका जो हृदय किसी का, उस रचना का सृजन व्यर्थ है।।
हृदय कभी न जिसे स्वीकारा, उसके सम्मुख नमन व्यर्थ है।
डाली-डाली जहाँ न पुष्पित, उसको कहना चमन व्यर्थ है।।

यह गीत कोश कुँवर सुबलाल, नाथूराम शर्मा 'शंकर', लक्ष्मणसिंह 'बेमोल' व लोकनाथ तर्क वाचस्पति जैसे अनेक प्राचीन कवियों तथा सत्यपाल पथिक व नरदेव आर्य जैसे नवीन कवियों को समर्पित है तथा इस गीत कोश की एक प्रति आपके कर-कमलों में अर्पित है।

इन्हीं शुभकामनाओं के साथ।

— यशपाल शास्त्री

क्रम

1

अब सौंप दिया

अब सौंप दिया इस जीवन का,
सब भार तुम्हारे हाथों में।
है जीत तुम्हारे हाथों में,
है हार तुम्हारे हाथों में।।

मेरा निश्चय है एक यही,
एक बार तुम्हें पा जाऊँ मैं।
अर्पण कर दूँ जगती भर का,
सब प्यार तुम्हारे हाथों में।।

या तो मैं जग से दूर रहूँ,
या जग में रहूँ तो ऐसे रहूँ।
इस पार तुम्हारे हाथों में,
उस पार तुम्हारे हाथों में।।

यदि मानुष ही मुझे जन्म मिले,
तो तब चरणों का पुजारी बनूँ।
हो मुझ पूजक की पूजा के सब,
तार तुम्हारे हाथों में।।

जब-जब संसार का बंदी बन,
दरबार तेरे में आऊँ मैं।
हो मेरे कर्मों का निर्णय,
सरकार तुम्हारे हाथों में।।

मुझ में तुझ में है भेद यही,
मैं नर हूँ तुम नारायण हो।
मैं हूँ संसार के हाथों में,
संसार तुम्हारे हाथों में।।

2

अच्छे–बुरे विचार

अच्छे-बुरे विचार हृदय में आते - जाते रहते हैं।
बुरे विचार बदल देता है मानव उसको कहते हैं।।
एक विचार कोटि मनुष्यों को सत्य मार्ग दर्शाता है।
एक विचार मनुज को जग में पथभ्रष्ट बनाता है।।
हृदय बेपीर बदल जाते हैं सुन्दर सभी विचारों से।
गिरते हुए संभल जाते हैं ज्ञान के सिर्फ इशारों से।।
पाषाण मुन्ज के हृदय को पल भर में मोम बना डाला।
बेपीर हृदय में दया भरी पुलकित रोम-रोम बना डाला।।
सत्पुरुषों के नीके विचार सत्पथ प्रदर्शक होते हैं।
अज्ञान तिमिर को हर करके, भय, पाप कालिमा धोते हैं।।
राज का ताज भोज को देकर मुन्ज ने वन प्रस्थान किया।
कहै 'राघव' आदर्श भोज का किस्सा मैंने बयान किया।।

3

अमृत वेले जाग

अमृत वेले जाग, अमृत बरस रहा।
प्रभु चिन्तन में लाग, अमृत बरस रहा।।
नीरस जीवन में रस भर ले, धार धर्म भवसागर तर ले।
आलस निद्रा त्याग, अमृत बरस रहा।।
सत्य ज्ञान की ओढ़ चुनरिया, छोड़ चलो तुम प्रेम-नगरिया।
खुल जाए तेरे भाग अमृत बरस रहा।।
परोपकार का लक्ष्य बना ले, ऊँचा अपना हाथ उठा ले।
धो कुसंग के दाग, अमृत बरस रहा।।

बड़े भाग्य से नर तन पाया, देख तुझे सब ने समझाया।
राख इसे बेदाग, अमृत बरस रहा।।

4

अक्षर ओ३म् अनादि

अक्षर ओ३म् अनादि अपार।
जगत्पिता सब के आधार।।
धरती - तल में, नभ - मण्डल में,
मस्त पवन में, पावक जल में,
व्यापक हो तुम हे कर्तार !
जगत्पिता सब के आधार।।1।।
अद्भुत माया पार न पाया।
निराकार निर्लेप अकाया।।
रचा जगत् कैसे साकार ?
जगत्पिता सब के आधार।।2।।

5

अब दहेज की चली बीमारी

अब दहेज की चली बीमारी और कोई न करे इलाज।
बहुत बड़ी है जिम्मेदारी तुम पर महिला आर्य समाज।
बहुत बड़ी है जिम्मेदारी···
कितनी रोज दहेज के कारण जलती हैं कन्याएँ।
सिमट - सिमटकर मिट जाती हैं जीवन की आशाएँ।
हाथ पसारें भरें सिसकियाँ किसी मदद की हैं मुहताज।
बहुत बड़ी है जिम्मेदारी···

पहले बिकती रहीं लड़कियाँ अब बिकते हैं लड़के।
ज्यों-ज्यों धन की हवा लगे यह त्यों-त्यों अग्नि भड़के।
तुम्हें बगावत करनी होगी अपने हाथ उठाकर आज।
बहुत बड़ी है जिम्मेदारी···

घर - घर बैठी युवा बेटियाँ हसरत भरी निगाहें।
निर्धन मांता - पिता निहारें सूनी - सूनी राहें।
कब तक आँसू बरसाएगी बेटी और पिता की लाज।
बहुत बड़ी है जिम्मेदारी···

तुम चाहो तो रुक सकती है पाप जुलम की आँधी
फिर यह गठड़ी नहीं खुलेगी अब तुमने गर बाँधी।
मिलकर उठो बदल के रख दो 'पथिक' ये उलटे रस्मो-रिवाज।
बहुत बड़ी है जिम्मेदारी···

6

अब जाग उठो

अब जाग उठो नर - नारी।
अब जाग उठो नर - नारी।

प्रातः समय है क्यों सोते हो,
अपना जीवन क्यों खोते हो,
पहली प्रथा विसारी। अब···

आलस्य छोड़ो अब शुद्ध कर तन को,
ईश भजन में लगा ले मन को,
बन जा शुद्ध पुजारी। अब···

भला - बुरा क्या कर्म किया है,
किसको सुख और दुख दिया है,
सोचो करनी सारी। अब···

वेद मार्ग पर चलो चलाओ,
पाप रहित धन - धान कमाओ,
जीवन हो सुखकारी। अब···

7

अगर तू कहीं है

अगर तू कहीं है, तो सूरत दिखा दे।
ये मन्दिर व मस्जिद के झगड़े मिटा दे।।
जमाना तुझे ढूँढता फिर रहा है।
ओ पर्दानशीं रुख से पर्दा उठा दे।।
बनाकर ये बाजीगरों की दुनिया।
छिपा है कहाँ दुनिया वाले बता दे।।
हमें अपनी हस्ती से आगाह कर दे।
नहीं तो हमारी भी हस्ती मिटा दे।।
सुना है तू बिगड़ी बनाता है सबकी।
बना दे मुसाफिर की बिगड़ी बना दे।।

8

अरे प्राणी क्यों सोया है

अरे प्राणी क्यों सोया है यह जीवन ढलता जाता है।
मिला अनमोल था हीरा वृथा इसको गँवाता है।
हुआ अब तो सवेरा है–तुझे आलस्य ने घेरा है।
जिन्हें अपना समझता है न इनमें कोई तेरा है।।
यह दुनिया एक सराय है कोई आता कोई जाता है। अरे···

न सम्पत्ति न यह परिवार तेरे साथ जाएँगे।
किये शुभ कर्म जो तूने अन्त में काम आएँगे।।
हैं सब श्मशान तक साथी जगत स्वार्थ का नाता है। अरे···
गर्भ में जो किया वायदा उसे क्यों भूलता बंदे।
ये इक दिन छूट जाएँगे—सभी संसार के धंधे।।
तू क्यों मकड़ी की भाँति जाल दुनिया में बिछाता है। अरे···
तू कर ले साधना साधक यदि मुक्ति को पाना है।
पड़ी मँझधार में किश्ती किनारे जो लगाना है।।
ले आनन्द उसकी गोदी का जगत जननी जो माता है। अरे···
हवन सन्ध्या समाधि में जो मन अपना लगायेगा।
जो परोपकार में नन्दलाल जीवन को बितायेगा।।
वह ही इतिहास के पन्नों में नाम अपना लिखाता है। अरे···

9

अखिलाधार अमर सुख धाम

अखिलाधार अमर सुख धाम, एक सहारा तेरा नाम।
कैसी सुन्दर सृष्टि बनाई, चन्द्र सूर्य-सी ज्योति जगाई।
कैसी अद्भुत वायु बहाई, एक से एक विलक्षण काम।
एक सहारा तेरा नाम।।1।।
सुन्दर सरस सुधा सम पानी, अमृत अन्न खायें सब प्राणी।
गुण गावें ज्ञानी और ध्यानी, भजें निरंतर आठों याम।
एक सहारा तेरा नाम।।2।।
पत्र-पत्र रंग-रूप निराला, पुष्प-पुष्प में गंध विशाल।
फल-फल पृथक् प्रेम रस प्याला, लीला तेरी ललित ललाम्।
एक सहारा तेरा नाम।।3।।
आप अमर सत्पथ के स्वामी, मैं हूँ अमर असत् पथगामी।
एक नाम के दोनों नामी, मैं गुण रहित आप गुण ग्राम।
एक सहारा तेरा नाम।।4।।

10

अगर पाप में

अगर पाप में आपका दिल नहीं है।
तो ईश्वर का मिलना भी मुश्किल नहीं है।।
न हो उसकी मखलूक से प्यार जिसको,
वो आबिद कहाने के काबिल नहीं है।
तुझे दुनिया काबू में कर लेगी नादाँ,
जो काबू में तेरे तेरा दिल नहीं है।
ये हस्ती है किसकी तू रहता है जिसमें,
अगर उसकी हस्ती का कायल नहीं है।
जिसे दुनिया कहते हैं अय दुनिया वालो,
ये रणक्षेत्र है कोई महफिल नहीं है।
जिसे मरना आता नहीं राहे हक में,
वो नामर्द है मर्द कामिल नहीं है।
हथेली पे हो जिसका सर इसमें कूदे,
ये दुनिया है वो जिसका साहिल नहीं है।

11

अन्तर्यामी स्वामी तुमको

अन्तर्यामी स्वामी तुमको बारम्बार प्रणाम है।
तुमने लोक रचाए हैं,
सूर्य चन्द्र चमकाए हैं,
सन्ध्या की ऊषा में तेरी लीला ललित ललाम है।।
अन्तर्यामी......

विद्युत् की गति चंचल में,
वन पर्वत जल में थल में,
अली अवली फूलों फल में,
सघन लताओं में पक्षी गण गाय रहे गुणगान हैं।
अन्तर्यामी……

तू महान् से महान् है,
न कोई तेरे समान है,
वेदों का यह प्रमाण है,
दिया ऋषि ने यह ज्ञान है,
शीतल जगती-तल पर तुमको सुमरे मिले विश्राम है।।
अन्तर्यामी……

12

अपने भक्तों में हमको

अपने भक्तों में हमको बिठा लीजिए।
ठोकरें खा रहे हैं बचा लीजिए।।
नैया जीवन की है नाथ मँझधार में।
करके करुणा किनारे लगा दीजिए।।
छा रहा है अँधेरा मेरे चार सू।
ज्ञान-ज्योति को मन में जगा दीजिए।।
मान होगा किसी को किसी का पिता।
मेरा तू ही है मुझसे लिखा लीजिए।।
वेद-वाणी तेरी नाथ अमृत भरी।
एक प्याला मुझे भी पिला दीजिए।।
'देश' को है पिता इक तेरा आसरा।
संसार-सागर से इसको बचा लीजिए।।

13

अपने घर की गाड़ी को

अपने घर की गाड़ी को, जो चाहो सही चलाना।
सुखदाई व्यवहार हमेशा, पत्नी संग निभाना।। टेक।।
कभी किसी से अपनी पत्नी की मत करो बुराई।
लेकिन उसकी कला-कुशलता की नित करो बड़ाई।।
बाहर से जो कुछ भी लाओ, करके आप कमाई।
वह सारी निज पत्नी को दे दिया करो तुम भाई।।
कोई बात कभी पत्नी से, मन की नहीं छुपाना।।1।।
सुख.......

कभी भूलकर भी पत्नी के, दिल को नहीं दुखाओ।
गलती कोई हो जाए तो, धीरज धर समझाओ।।
आवश्यक हर वस्तु हमेशा, पत्नी के हित लाओ।
विवाह, वर्षी, जन्म-दिवस भी, उसका आप मनाओ।
सच्ची देवी मान सदा, पत्नी का मान बढ़ाना।।2।।
सुख.......

हाव-भाव, मन, इच्छा कुछ-कुछ पत्नी को पहचानो।
मोद मनाती रहे हमेशा, यह मन में व्रत ठानो।।
विष के तुल्य पराई नारी, होती है सच मानो।
अपनी को ही सबसे सुंदर, परी-अप्सरा जानो।।
एक नारी व्रतधारी को ही, कहता श्रेष्ठ जमाना।।3।।
सुख.......

सच्चा साथी जीवन-भर का, मानो है ये नारी।
इसकी रक्षा करने से तुम, सुख पाओगे भारी।।
पूजा करिए मान लक्ष्मी, साँची बात हमारी।
नारी को सुख देने से हो, नैया पार तुम्हारी।।
कह 'नरदेव' हमेशा हँसते-हँसते आयु बिताना।।4।।
सुख.......

14

आर्य कुमारो

आर्य कुमारो यही व्रत धारो–देश जगाना है।
आर्य बनाना है।
कृण्वन्तो विश्वमार्यम् का दे रहा वेद इशारा।
उसे कार्य रूप में लाना है बस काम तुम्हारा।
चौबीस अक्षरी मन्त्र गायत्री सबको सिखाना है।।1।।
सब सत्य विद्या जो पदार्थ विद्या से जाने जाते।
उन सबका है आदि मूल परमेश्वर यह बतलाते।
जो पत्थर पूजें, नाहक जूझें, उन्हें समझाना है।।2।।
वेद का पढ़ना और पढ़ाना, सुनना और सुनाना।
समझें इसको परम धर्म ना कोई करें बहाना।
जो ग्रंथ अशुद्ध हैं, वेद विरुद्ध हैं उनको हटाना है।।3।।
पंच यज्ञ घर-घर में करना सीखें सब नर-नारी।
दुर्व्यसनों से दूर रहें, हों सदाचारी उपकारी।
असली राह है यही भाई, जहाँ तुम्हें जाना है।।4।।
चरित्र और आचार के पक्के, रहें पाप से डर के।
भ्रष्टाचार का नाम न लें, मेटें अन्याय विचर के।
कर्म से, मन से और वचन से, हो एक दिखाना है ।।5।।
मातृवत् परदारेषु पर धन को मिट्टी जाने ।
वैदिक शिष्टाचार न भूलें बरतें ढंग पुराने ।
था यही गुण अन्दर–जिससे वीरेन्द्र झुका जमाना है ।।6।।

15

आर्य कहलाते आप

आर्य कहलाते आप, नियम निभाते नहीं,
आर्य फिर कैसे सारे विश्व को बनाओगे।
ब्रह्म-देव-आदि पंच यज्ञ न करोगे यदि,
कैसे त्रय ताप तोप निधि तर जाओगे।
भिन्नता भरी है भाइयों में भरपूर जब,
प्रेम का पीयूष कैसे घर को पिलाओगे।
ऋषि के बताये हुए कार्य जो करोगे नहीं,
भला ऋषि - ऋण को उतार कैसे पाओगे।।

16

आर्य वीर दल बढ़ता चल

आर्य वीर दल बढ़ता चल, उन्नति शिखर पर चढ़ता चल।
भूले हुए वेद-पथ जन जो, उनकी राहें बदलता चल।।
पावन वैदिक पथ पर चलकर, अपना फर्ज निभाये जा।
हर दिल का कर दूर अँधेरा, पग-पग दीप जलाये जा।।
आँधी या बरसात हो, धूप छाँव या रात हो।
कस्बा, शहर, देहात हो, सत्य मार्ग पर चलता चल।।1।।
भय, विघ्न, विषद और बाधायें सारी दूर भगा डालो।
सुख-शांति सुधारस बरसाकर जन-जन की प्यास बुझा डालो।
शैल, शिला, तरु तोड़कर, पाखंड का सिर फोड़कर।
गर्दन पकड़ मरोड़कर, तू मृग के तुल्य उछलता चल।।2।।
वेद संस्कृति रक्षार्थ को, आर्य वीर तैयार रहो।
ढोंगी धूर्त जनों के लिए बनकर कठोर दीवार रहो।।

ओ३म् ध्वजा ले हाथ में, जोश भरा हो गात में।
ईश्वर तेरे साथ में, सोई तकदीर बदलता चल।।3।।
जैमिनी, कपिल, कणादि, दयानन्द ऋषियों की सन्तान हो तुम।
लंकेश दैत्य रावण की लंका जलाने को हनुमान हो तुम।।
कुटिल कुप्रथा बन्द हो, घर - घर में आनन्द हो।
कहे स्वरूपानन्द वीर बन बब्बर शेर मचलता चल।।4।।

17

आओ मिल प्रभु गुणगान करें

आओ मिल प्रभु गुणगान करें, यह मंगलमय दिन आया है।
उसकी अनुकम्पा से सबने, उत्साह तथा सुख पाया है।।
शुभ मन्त्रों का उच्चारण हुआ, है सुगंधित अपना द्वार हुआ।
उसका ही यह उपकार हुआ, मिल सबने यज्ञ रचाया है।।
कैसा सुंदर संस्कार हुआ, सुख शान्ति-सुधा संचार हुआ।
हर्षित सारा परिवार हुआ, सुख का सब साज सजाया है।
है सजी सभा सब भाइयों की, आती आवाज बधाइयों की।
रौनक है लोग-लुगाइयों की, सब मिल मन मोद मनाया है।।
सर्वत्र दया भगवान करें, आनन्द सुधा का दान करें।
सब कष्ट हरें कल्याण करें, यह मंगल गीत सुनाया है।।

18

आपत्ति आर्यों ने

आपत्ति आर्यों ने इसके लिए उठाई।
प्याले पिये गरल के, तन खाल भी खिंचाई।।
धन, धर्म, प्राण, तन ,मन इस पर सहर्ष वारा।
वैदिक धर्म हमारा, वैदिक धर्म हमारा।।

इसकी पवित्र शिक्षा उर-कोष में भरेंगे।
इसके लिए जियेंगे, इसके लिए मरेंगे।।
हमने 'प्रकाश' मन में अब तो यही विचारा,
वैदिक धर्म हमारा, वैदिक धर्म हमारा।।

19

आया है इस जगत में

आया है इस जगत् में तो शुभ कर्म कमा ले।
गुण ईश के गा ले।।
दर-दर भटक रहा है क्यों उठ ज्ञान-चक्षु खोल।
घट-घट निवासी को तू अपने घट में ही पा ले।।
मन शुद्ध बना ले।।
क्या रंग रहा बावले कपड़ों को रंग में।
मन पहले अपना प्रेम के रंग में तू रँगा ले।।
हठ-दम्भ मिटा ले।।
वह आँख ही क्या जो देख के दुखियों को तर न हो।
वह हाथ ही क्या जो नहीं गिरतों को उठा ले।।
सीने से लगा ले।।
भर लेते अपना पेट श्वान भी हैं जगत् में।
अच्छा तो यही खा ले, और को भी खिला ले।।

20

आकाश सूर्य चन्द्र में

आकाश, सूर्य, चन्द्र, में, उडुगन में ओ३म् है।
जल में, पवन में, दामिनी में, घन में ओ३म् है।।
गिरि, कन्दरा में, वाटिका में, वन में ओ३म् है।
लोचन में ओ३म्, तन में ओ३म्, मन में ओ३म् है।।
व्यापक है अखिल विश्व में विस्तार ओ३म् का।
सब मिल के नारी-नर करो उच्चार ओ३म् का।।1।।
ध्रुव ने बड़े ही प्रेम से इस नाम को ध्याया।
प्रह्लाद ने इसी से अमित नेह लगाया।।
क्रोधित हो असुर ने उसे बहु भाँति सताया।
भय, अग्नि व पर्वत से गिराने का दिखाया।।
त्यागा न किन्तु भक्त ने आधार ओ३म् का।
सब मिल के नारी-नर करो उच्चार ओ३म् का।।2।।
इस नाम के प्रताप दयानंद हुए सबल।
वैदिक विवेक सत्य के साँचे में गए ढल।।

21

आइये मोहन पुनः

आइये मोहन पुनः ब्रज को बचाने के लिए।
तेरे पुजारी जा रहे इसको मिटाने के लिए।।

आकर जरा तो देख तेरे भक्त जन क्या कर रहे।
कर्म कुछ और जाप कुछ जग को दिखाने के लिए।।1।।

पीत पट कछनी नहीं है अब तुम्हारी सी यहाँ।
पतलून पाजामा है टाई गले लगाने के लिए।।2।।

दूध दधि माखन तो यों ही ब्रज में था बहता रहा।
आज बस एक चाय है पीने - पिलाने के लिए।।3।।

मिश्री व मक्खन प्रेम से खाते थे सब ब्रज जन यहाँ।
अब दे लो मुर्गी व बकरे, मछली खाने के लिए।।4।।

आपकी जन्मभूमि में अब स्वांग भरकर नाचते।
राधा बनाकर भीख मँगवाते लजाने के लिए।।5।।

पढ़ते थे पुस्तक धार्मिक जब वेद का प्रचार था।
अब रह गये उपन्यास, नाविल दिल लगाने के लिए।।6।।

गीता के उपदेश पर ध्यान देते हैं नहीं।
स्वांग फिल्मी गीत रसिया हैं सुनाने के लिए।।7।।

सेवा करी गौ मात की पाली रहे घनश्याम खुद।
यहाँ मुर्गियों के खिरक हैं दाना चुगाने के लिए।।8।।

22

आज जवानी पर

आज जवानी पर इतराने वाले कल पछताएगा।
चढ़ता सूरज धीरे-धीरे ढलता है ढल जाएगा।।
तू यहाँ मुसाफिर है ये सरायेफ़ानी है।
चार रोज का मेहमां तेरी ज़िन्दगानी है।।
ज़न, ज़मीं, ज़र, ज़ेवर, कुछ न साथ जाएगा।
तू खाली हाथ आया है, खाली हाथ जाएगा।।
इस कदर तू खोया है इस जहाँ के मेले में।
तू खुदा को भूला है फँसकर इस झमेले में।।
क्या समझकर तू आखिर इससे प्यार करता है।
इस मिटने वाली दुनिया का ऐतबार करता है।।

अपनी-अपनी फिकरों में जो भी है वो बलझा है।
जिन्दगी हकीकत में क्या है कौन समझा है।।
आज समझ ले कल ये मौका हाथ न तेरे आएगा।
ओ गफलत की नींद में सोने वाले धोखा खाएगा।।
मौत ने जमाने को क्या दिखा डाला।
कैसे-कैसे रुस्तम को खाक में मिला डाला।।
याद रख सिकन्दर के हौसले तो आली थे।
जब गया दुनिया से दोनों हाथ खाली थे।।
अब न वो हलाकू है और न उसके साथी हैं।
अब न वो पौरुष है और न उसके साथी हैं।।
कल जो तन के चलते थे अपनी शान-शौकत पर।
शमा न जलती आज उनकी तुरबत पर।।
जैसी करनी वैसी भरनी आज किया कल पाएगा।
सर को उठा के चलने वाले एक दिन ठोकर खाएगा।।
मौत सबको आनी है कौन इससे छूटा है।
तू फना होगा नहीं ख्याल ये झूठा है।।
साँस छूटते ही सब रिश्ते टूट जाएँगे।
बाप माँ बहिन बीवी बच्चे छूट जाएँगे।।
तेरे जितने हैं भाई वक्त का चलन देंगे।
छीनकर दौलत तेरी दो ही गज कफन देंगे।।
तेरी सारी उल्फत को खाक में मिला देंगे।
तेरे चाहने वाले कल तुझे भुला देंगे।।

23

आया है जहाँ में

आया है जहाँ में शुभ कर्म कमा के जा।
देख निराली दुनिया, मत ना जीवन व्यर्थ गमा।।
प्रातः-सायं ओइम् को गा ले।।
परम पिता से प्रीति लगा ले।।
जीवन में उपकार किया कर, मत ना पाप कमा।।1।।
सहस्र करों से दान किया कर।
अमृत बाँट तू अमृत पिया कर।।
जीवन से जीवन बन जाये ऐसी ज्योति जगा।।2।।
मननशील ही व्यक्ति कहावे।
ऐसा लेख वेद बतलावे।।
मनुर्भव उच्चारण करके वेद रहा समझा।।3।।
अमृतमयी वेद की वाणी।
"राघव" पढ़कर देख प्राणी।।
परम धर्म वेदों को पढ़ना, मिथ्या नहीं जरा।।4।।

24

आदर्श वही परिवार है

आदर्श वही परिवार है, जो वैदिक नियम निभाता।।टेक।।
जिसमें सब रहते हों हर्षित।
स्वस्थ सुखी हँसमुख आनन्दित।।
श्रेष्ठ काम होते रहते नित।
होता मंगलचार है, हर मानव खुशी मनाता।।1।। आदर्श…

सुत सुखदायक हो हितकारी।
मात पिता का आज्ञाकारी।।
धीर वीर मर्यादा धारी।
जिसका सद् आचार है, कुल का यश मान बढ़ाता।।2।। आदर्श...
पतिव्रता हो पत्नी प्यारी।
मधुर वचन बोले हितकारी।।
रखे व्यवस्था उत्तम सारी।
पति-पत्नी में प्यार है, वह घर ही स्वर्ग कहाता।।3।। आदर्श...
होय मित्रता श्रेष्ठ जनों से।
दूर रहें जो दुष्ट जनों से।।
करुणा बरतें दुखी जनों से।
यह जीवन का सार है, जो गृहस्थ इसे अपनाता।।4।। आदर्श...
अर्थ धर्म से सदा कमावें।
हर नर मेहनत करके खावें।।
अधर्म का धन कभी न लावें।
उसका बेड़ा पार है, धन जहाँ धर्म से आता।।5।। आदर्श...
पर-सेवा में हो जिनका मन।
नित्य कर्म ईश्वर का चिन्तन।।
मधुर स्वास्थ्यप्रद होवे भोजन।
होते अतिथि सत्कार हैं, भूखा न द्वार से जाता।।6।। आदर्श...
जिस घर में यह लक्षण पावें।
वही श्रेष्ठ गृहस्थी कहलावें।।
स्वर्ग यही 'नरदेव' बतावें।
देखो नजर पसार है, जग उसका ही यश गाता।।7।। आदर्श...

25

आओ मिलकर काम करें

आओ मिलकर काम करें।
आपस के सब द्वेष मिटाकर,
मधुर मिलन अभिराम करें। आ:ओ मिलकर···
पड़े ऋषि के स्वप्न अधूरे।
बोलो कौन करेगा पूरे।
अर्पण करके तन मन धन को,
संकट से संग्राम करें। आओ मिलकर···
हम सब ऋषिवर के अनुयायी।
वैदिकधर्मी बहिन और भाई।
सारे मिलकर इक हो जाएँ,
विश्व विजेता नाम करें। आओ मिलकर···
पर-निन्दा और चुगली छोड़ें।
रगड़ों झगड़ों से मुँह मोड़ें।
मन में सब अच्छे कर्मों का,
चिन्तन आठों याम करें। आओ मिलकर···
बल, बुद्धि और साहस पाएँ।
निर्भय अविचल बढ़ते जाएँ
परमेश्वर से यही याचना,
'पथिक' सुबह और शाम करें । आओ मिलकर···

26

आर्य प्रचारक धन्य

आर्य प्रचारक ! धन्य-धन्य तुझको शत बार बधाई,
मृतकों में दी जान डाल औ' वृद्धों में तरुणाई।
सोई हुई बेसुध जनता को जाकर तू ही जगाता,
विपदाओं के तूफानों से निर्भय हो टकराता।
पाखंडों के गढ़ को ढाता सत्य मार्ग बतलाता,
दयानन्द ऋषिवर का तू घर-घर संदेश सुनाता।
सूरज सम अज्ञान तिमिर की तूने रात्री हटाई,
आर्य प्रचारक ! धन्य-धन्य तुझको शत बार बधाई।
सुना वीररस युवकों का तू रक्त गर्म कर देता,
कायर सुस्त निकम्मों में भी चेतनता भर देता।
मधुर सुधामय वाणी से तू मन सबका हर लेता,
तेरे दम से बने अनेकों नेता वीर विजेता।
आर्यसमाज वाटिका सुरभित सुमनों से सरसाई,
आर्य प्रचारक ! धन्य-धन्य तुझको शत बार बधाई।
देश विदेश नगर गाँवों में वैदिक नाद बजाया,
लट्ठ, तेग, गोली व जेल, फाँसी से कब घबराया।
बन्धु विधर्मी हुए शुद्ध करके फिर आर्य बनाया,
यथाशक्ति तूने ऋषि का पावन आदेश निभाया।
करता तू न प्रचार कोटि जन होते यवन ईसाई,
आर्य प्रचारक ! धन्य-धन्य तुझको शत बार बधाई।
घूम रहे हैं आज सहस्रों जग में आर्य प्रचारक,
वानप्रस्थ संन्यासी जन जीवन उद्धारक तारक।
तजकर प्रिय परिजन प्रचार संलग्न सुविप्र विचारक,
महोपदेशक, भजनोपदेशक सुकवि विविध गुणधारक।
देश विदेशों में है पावन ओ३म् ध्वजा फहराई,
आर्य प्रचारक ! धन्य-धन्य तुझको शत बार बधाई।

आर्य प्रचारक ! जग में वैदिक धर्म प्रचार किए जा,
ऋषि सम अमृत पिला और को खुद विष घूँट पिए जा।
आर्य समाजोन्नति हित तन मन धन सर्वस्व दिए जा,
सर्वाधार ईश का ही 'राघव' आधार लिए जा।
आर्य जगत में होगी तेरी निश्चय कीर्ति बड़ाई,
आर्य प्रचारक ! धन्य-धन्य तुझको शत बार बधाई।

27

आर्य समाज न होता तो

आर्य समाज न होता तो देश में
कौन भला नव जागृति लाता ?
कौन सनातन वेद के अर्थ सही
शुचि यज्ञ - महत्त्व बताता ?
कीचड़ में ही सने रहते शुचि
हीरा हमें फिर कौन बनाता ?
आर्य समाज के हैं हम पुत्र तो
आर्य समाज हमारी है माता।।

28

आज मंगल गान गाएँ

आज मंगल गान गाएँ।।
पुष्प सुन्दर खिल रहे हैं,
क्यों न प्रेम-विभोर हो हम
सब मिलें खुशियाँ मनाएँ।
आज मंगल गान गाएँ।।

यज्ञ सुन्दर हो रहा है,
सुरभिमय घर हो रहा है,
क्यों न हम सुकृत सुरभि से,
विश्व को सुरभित बनाएँ।
आज मंगल गान गाएँ।।
दूर हों सब आपदाएँ,
पूर्ण हों शुभ कामनाएँ,
पूर्ण प्रभु की पूर्ण करुणा से,
प्रकाशानन्द पाएँ।
आज मंगल गान गाएँ।।

29
आज मिल सब गीत गाओ

आज मिल सब गीत गाओ उस प्रभु के धन्यवाद।
जिसका यश नित गाते हैं गन्धर्व मुनिजन धन्यवाद।।
मन्दिरों में, कन्दरों में, पर्वतों के शिखर पर।
देते हैं लगातार सौ-सौ बार मुनिवर धन्यवाद।।
करते हैं जंगल में मंगल, पक्षीगण हर शाख पर।
पाते हैं आनन्द मिल गाते हैं स्वर भर धन्यवाद।।
कूप में, तालाब में, सागर की गहरी धार में।
प्रेम रस में तृप्त हो करते हैं जलचर धन्यवाद।।
शादियों में, कीर्तनों में, यज्ञ-उत्सव आदि में।
मीठे स्वर में चाहिए, करें नारी-नर सब धन्यवाद।।
गान कर 'अमीचन्द' भजनानन्द ईश्वर स्तुति।
ध्यान धर सुनते हैं श्रोता कान धर-धर धन्यवाद।।

30

आदिकाल से रीत यही है

आदिकाल से रीत यही है, करो नमस्ते ही···
वेदों में ही इसको पाया, ऋषि-मुनियों ने यही बताया।
देश-विदेश कहीं पर जाओ, करो नमस्ते जी···
रामायण भी यही सिखाती, गीता भी इसके गुण गाती।
महाभारत भी यही बताती, करो नमस्ते जी···

राम-कृष्ण वेदों के पुजारी, जिनको जाने दुनिया सारी।
उनकी आज्ञा को अपनाओ करो नमस्ते जी···
हिन्दू, मुस्लिम, सिख, ईसाई, मिले मित्र या भाई-भाई।
आदर प्रेम की श्रेष्ठ विधि है, करो नमस्ते जी···

सब नर-नारी करो नमस्ते, बच्चे-बूढ़े हँसते-हँसते,
विश्व प्रेमी के पाठ को पढ़ते, करो नमस्ते जी···
जो चाहते हैं भव से तरना, राग-द्वेष छल-कपट न करना,
उल्टा रास्ता छोड़ के चलना, सीधे रास्ते जी,
करो नमस्ते जी···

'प्रेमी' कष्ट मुसीबत सहना, संघर्षों से कभी न डरना,
सुख हो या दुख, हर हालत में हँसते रहना जी,
करो नमस्ते जी···

31

आनंद स्रोत बह रहा

आनंद स्रोत बह रहा, पर तू उदास है।
अचरज है जल में रह के भी मछली को प्यास है।।
फूलों में ज्यों सुबास, ईख में मिठास है।
भगवान् का त्यों विश्व के कण-कण में वास है।।

टुक ज्ञान चक्षु खोल के तू देख तो सही।
जिसको तू ढूँढ़ता वो सदा तेरे पास है।।
कुछ तो समय निकाल आत्मशुद्धि के लिए।
नर जन्म का उद्देश्य न केवल विलास है।।
आनंद स्रोत को न पा सकेगा तब तलक।
जब तलक तू 'प्रकाश' इंद्रियों का दास है।।

32

इक ओ३म् नाम जग में

इक ओ३म् नाम जग में है, सर्व सुखों का सार।
जीवन की नैया का, बस वही एक पतवार।।
वह है सारे जग का स्वामी
घट - घट वासी अन्तर्यामी
उसको छोड़ किसे मैं ध्याऊँ
और कौन से प्रीति लगाऊँ
देख लिया है मैंने सारा मतलब का संसार।
इक ओ३म् नाम जग में है सर्व सुखों का सार।।
कण-कण में प्रभु आप समाये
पास रहे पर दीख न पाये
वही न्यायकारी है ऐसा
जैसी करनी फल दे वैसा
महिमा अपरम्पार गये ऋषि, मुनि विज्ञानी हार।
इक ओ३म् नाम जग में, है सर्व सुखों का सार।।
बिगड़ी तुम्हीं बनाने वाले
संकट शूल मिटाने वाले

हम आपको भूल जाते हैं
आप ना भूल हमें पाते हैं
दीजै भक्ति दान "राघव" को दीन बन्धु दातार।
इक ओ३म् नाम जग में है सर्व सुखों का सार।।

33

इतनी शक्ति हमें देना

इतनी शक्ति हमें देना दाता।
मन का विश्वास कमजोर हो ना।।
हम चलें नेक रस्ते पे हम से।
भूलकर भी कोई भूल हो ना।।
दूर अज्ञान के हों अँधेरे।
तू हमें ज्ञान की रोशनी दे।।
हर बुराई से बचते रहें हम।
जितनी भी दे भली जिंदगी दे।।
वैर हो ना किसी का किसी से।
भावना मन मे बदले की हो ना।।
हम चलें नेक रस्ते पे हम से।
भूलकर भी कोई भूल हो ना।।
हम ना सोचें हमें क्या मिला है।
हम ये सोचें किया क्या है अर्पण।।
फूल खुशियों के बाँटे सभी को।
सबका जीवन ही बन जाए मधुबन।।
हम चलें नेक रस्ते पे हम से।
भूलकर भी कोई भूल हो ना।।

34

इक तेरी दया का दान

इक तेरी दया का दान मिले, इक तेरा सहारा मिले जाए।
भव सागर में बहती मेरी, नैया को किनारा मिल जाए।।

जीवन की टेढ़ी राहों में, चलकर ना तुझको जान सका।
आशाओं की झोली भर जाए, इक तेरा दुवारा मिल जाए।।

मैं दीन हूँ दीनदयाल है तू, अल्पज्ञ हूँ मैं सर्वज्ञ है तू।
अज्ञान का पर्दा हट जाए, तेरा उजियाला मिल जाए।।

इस दुर्लभ अवसर को पाकर, कोई उत्तम कर्म कमा न सका।
अब दिल की तड़प ये कहती है, कहीं प्रीतम प्यारा मिल जाए।।

अपने मुझको अपना न सके, औरों को उल्हाना क्यूंकर दूँ।
तू सर्व वरों का दाता है, वरदान तुम्हारा मिल जाए।।

मैं नर हूँ तू नारायण है, इतना तो भेद जरूरी है।
यदि शरण मैं तेरी पा न सकूँ, नर तन तो दुबारा मिल जाए।।

है विनती एक यही मेरी, यही एक निवेदन है मेरा।
इस जन्म-मरण के बंधन से अब तो छुटकारा मिल जाए।।

35

ईश्वर का गुणगान

ईश्वर का गुणगान किया कर, कष्ट-क्लेश मिटाने को।
जीवन की यह नाव मिली है, भव सागर तर जाने को।
उस दाता ने हाथ दिये हैं, नेक कमाई कर प्यारे।
इन अपने पावन पाँवों को, पावन मग पर धर प्यारे।

नुस्खा है यह इस दुनिया में, जीवन अमर बनाने को
ईश्वर···

दर्द पराया देख के तुझको, दर्द उठे अपने तन में,
हर्षित को लख हर्ष मनायें, भावना भर दे जन मन में।
यत्न किया कर पतझड़ में भी मधुर बसन्त खिलाने को।
ईश्वर···

सुख की शीतल छाया कर दे, दुखिया जन की कुटिया में,
अपने घर में पड़ा रहा गर, आलसी बनकर खटिया पर।
मानव चोला फिर न मिलेगा, तुझको मौज उड़ाने को।
ईश्वर···

विश्व बगीचे के माली की, रचना प्यारी-प्यारी है,
रंग-बिरंगे पुष्प खिलाये, शोभा जिनकी न्यारी है।
अन्त नहीं बेअन्त है माया कह गये सन्त जमाने को।
ईश्वर···

परमेश्वर का भक्त वही जिस शुभ गुण जीवन में धारे।
पाप के जहरीले कीटाणु सब चुन-चुन करके मारे।
'हंस' तेरा मन मन्दिर है, भक्ति की ज्योति जलाने को।
ईश्वर···

36

ईश्वर तुम्हीं दया करो

ईश्वर तुम्हीं दया करो तुम बिन हमारा कौन है।
दुर्बलता दीनता हरो, तुम बिन हमारा कौन है।
माता तू ही पिता तू ही, बन्धु तू ही तू ही सखा।
तू ही हमारा आसरा, तुम बिन हमारा कौन है।
ईश्वर तुम्हीं···

जग को रचाने वाला तू, दुखड़े मिटाने वाला तू।
बिगड़ी बनाने वाला तू, तुम बिन हमारा कौन है।
ईश्वर तुम्हीं···
तेरी दया को छोड़कर कुछ भी नहीं हमें खबर।
जायें तो जायें हम किधर तुम बिन हमारा कौन है।

37

ईश्वर तेरी महिमा

ईश्वर तेरी महिमा का न पाया पारावार है।
तू ही है निर्माता जग का, तू ही सर्वाधार है।।
रंग-बिरंगे फूलों में तो तेरी खुशबू आ रही,
तेरी खुशबू आ रही।
हरियाली पत्तों की सबके मन को है हरषा रही,
मन को है हरषा रही।
पत्ता-पत्ता डाली-डाली का तू ही आधार है।
ईश्वर···
सूर्य-चाँद-पृथ्वी-नभ-तारे करें इशारा आपका,
पर्वत-जंगल-नदियों में सौन्दर्य है भगवान् आपका,
सौन्दर्य हैं भगवान् आपका।
प्रातः-सायं पक्षी गाते, अद्भुत यह संसार है।।
ईश्वर···
नर तन-सा अनमोल रत्न, यह देन तेरी भगवान् है,
यह देन तेरी भगवान् है।
सत्पथ से विचलित होकर, ठोकर खाता इन्सान है,
ठोकर खाता इन्सान है।

38

ईश्वर को भी तू याद

ईश्वर को भी तू याद किया कर कभी-कभी।
आत्मिक तृषा को भी बुझा लिया कर कभी-कभी।।
दुनिया के झंझटों में पड़ ईश भुलाया।
भूले हुए की याद किया कर कभी-कभी।।
उसकी कृपा से तूने, नर तन है यह पाया।
धन्यवाद उस प्रभु का किया कर कभी-कभी।
भोगों के भोगने में समय तूने बिताया।
भोगों के देने वाले को सिमरा कर कभी-कभी।।
जिस दिल में तू बसा, वह बड़ा खुशनसीब है।
उस पर तेरी कृपा भी होती है कभी-कभी।।
ईश्वर की रचना देखकर होती है हैरानी।
खो जाया कर तू 'इन्द्र' उसी में कभी-कभी।।

39

ईश्वर को मानते हैं

ईश्वर को मानते हैं लोग जानते नहीं।
मृत्यु को जानते हैं मगर मानते नहीं।
कैसा अंधेर है यह कि छोटी - सी बात की,
असलियत जानते हुए भी जानते नहीं
दुनिया को लूटते हैं बड़े इल्मो हुनर से,
चादर फरेब की ये कभी तानते नहीं।
तिनका किसी की आँख का देखें ये बार-बार,
अपनी में हो शहतीर भी तो मानते नहीं।

सच्चाई जिन्दगी में भूलकर न आ सकी,
कहने को कभी झूठ ये बखानते नहीं।

मतलब पड़े तो लोग इर्द - गिर्द घूमते,
जब वक्त निकल जाए तो पहचानते नहीं।

बस एक ही को जानकर उसी के हो गए,
दर-दर की खाक हम तो 'पथिक' छानते नहीं।

40

ईश्वर की अनुकम्पा से

(पिता का पुत्री को उपदेश)

ईश्वर की अनुकम्पा से, शुभ घड़ी यह आज आई।
हो गया सुता का मेरी, प्रिय पाणिग्रहण सुखदाई।।
है साथ हर्ष के पीड़ा, वर्णन हो कब बैनों से।
है बहा जा रहा मेरा दिल पिघल-पिघल नैनों से।।
हो रही विदा है देखो, उजियाली मेरे घर की।
कन्या पितु ही जानेगा, पीड़ा मेरे अन्दर की।।
हे बेटी मेरे घर की शोभा लाडली कली तू।
झूली सूख के झूले में, पावन प्यार पली तू।।
पितु मात बहिन भाई की, आँखो की है पुतली तू।
तजकर सब सखी सहेली, पति-गृह की ओर चली तू।।
तू समझदार है बेटी, मैं क्या समझाऊँ तुझको।
फिर भी कुछ शिक्षा देना, इस समय उचित है मुझको।।
सबका तू आदर करना, सबसे मिल-जुलकर रहना।
निज मुख से कभी किसी को, तू कड़वे वचन न कहना।।
मिथ्या आडम्बर तजना, आभूषण व्यर्थ न चाहना।
है विद्या विनय, सरलता, नारी का सुन्दर गहना।।

प्रिय आर्य सभ्यता की ही, मन से अनुयायी होना।
कर नकल योरुप फैशन की, धन धर्म न अपना खोना।।
कर सेवा सास श्वसुर की, आशीष सर्वदा लेना।
तू दान दीन दुखिया या सज्जन सुपात्र को देना।।
निज श्वसुर सासु जी को ही, तू समझ पिता और माता।
जेठों, देवरों को ही अपने समझना भ्राता।
दिवरानी प्यारी अथवा प्रिय ननद पूज्य जेठानी।
उनको प्रिय बहन समझना, हे मेरी बेटी रानी।।
मन, वचन, कर्म से रहना पति के दुखः-सुख की संगी।
सर्वस्व निछावर करना, बनकर सच्ची अर्द्धांगी।।
हाँ ! कभी कर्म यदि पति से, कुछ दोषपूर्ण हो जाए।
समझाया जाए विधि से, मन में न मलिनता आये।।
पर पति का सीधापन भी, हो जाता है दुःखदाई।
अच्छा करने को देना, कड़वी भी कभी दवाई।।
आ जाये कठिन समय तो, रखना धीरज मजबूती।
आदर्श बने जगती को, तेरी पवित्र करतूती।।
तू नहीं निरर्थक अबला, तू नहीं पाँव की जूती।
तू मातृ-शक्ति कल्याणी, तू है सौभाग्य विभूति।।
"साम्राज्ञी भव" वेदों ने तुझको उपदेश दिया है।
नारी का करो समादार, मनु ने आदेश किया है।।
बलिदान त्याग युग - युग से नारी करती आई है।
प्राणादपि प्रिय सतीत्व हित, जीती-मरती आई है।।
सीता सावित्री का ही तू भी आदेश निभाना।
गृह-कार्य, देश सेवा में, शुभ कर्मो में चित्त लगाना।।
वेदोक्त आर्ष ग्रन्थों को, नित पढ़ना और पढ़ाना।
गप्पों में, सोने में ही, अनमोल समय न गँवाना।।
सुख में न कभी इतराना, दुःख में न कभी घबराना।
जगदीश्वर के गुण गाना, हर हालत में मुस्कराना।।

मत कभी किसी की करना, व्यर्थ निन्दा चुगली तू।
बनना न चापलूसों के, हाथों की कठपुतली तू।।
यदि कभी सास, पति तुझसे, हो जायें रुष्ट अकारण।
कुछ तर्क विवाद न करना, बस चुप्पी करना धारण।।
है परम प्रसिद्ध कहावत, सौ को चुप एक हराती।
हर बात बतंगड़ से तो, कटुता कलह बढ़ जाती।।
यदि कभी जेठानी बिगड़े, तो मन में मैल न लाना।
बस समझ वैद्य की कड़वी औषधि पी जाना।।
हाँ नेह - नीर दिवरानी, ननदों पर सदा छिड़कना।
सेवक अथवा छोटों को मत तेवर चढ़ा झिड़कना।।
हे सुते ! बोलना मीठा, जिसने भी सीख लिया है।
सच तो यह उसने सबके हृदयों में राज्य किया है।।
व्रत सदाचार सेवा का जीवन में सदा निभाना।
भूखे रह - रहकर नाहक, मत अपनी देह सुखाना।।
मत कभी भूल के भी तू खोटी संगति में जाना।
पाखण्डी, ढोंगी जन के, मत बहकावे में आना।।
मुसटण्डों को भर थाली, मृदु घी, हलवा सूजी का।
पर दिया न सास श्वसुर को, लोटा ठण्डे पानी का।।
सपने में भी करना मत ऐसी नादानी बेटी।
इन कुलक्षणों से होती, कुल की मर्यादा हेटी।।
जिन, भूत-प्रेत की झूठी शंका मत मन में लाना।
मत सयाने दीवानों से, गंडे, ताबीज बँधाना।।
मन मन्दिर में बसते हैं वे जगदीश्वर अविनाशी।
मत उन्हें ढूँढ़ने जाना, मथुरा, हरिद्वार वा काशी।।
आराध्य देव सुखदाता, उनके सम और न दूजा।
नित सायं प्रातः उन्हीं की, श्रद्धा से करना पूजा।।
यदि मेरी इस शिक्षा पर, हे सुते ! ध्यान देगी तू।
तो निश्चय अपना जीवन आदर्श बना लेगी तू।।

तेरे उत्कृष्ट गुणों को तेरे पति भी जानेंगे।
बाँदी न तुझे समझेंगे, देवी तुझको मानेंगे।।
है यह विश्वास सभी विधि, वह सुखी करेंगे तुझको।
तू उनको सब विधि सुख दे, तब परम शान्ति हो मुझको।।
मिल जा पति-गृह में ऐसे, जैसे सागर में सरिता।
दो कुल की हितैषिणी होकर, नाम कर सार्थक दुहिता।।
है यही कामना जग में तेरा सौभाग्य अचल हो।
प्रभु प्रेम प्रकाश हृदय हो, सद्गुण विवेक हो, बल हो।।

41

उठो आर्य बहनो !

उठो आर्य बहनो ! अब तुमको करके कुछ दिखलाना है।
सर्व भाँति सबला बनिये, अब अबला नहीं कहाना है।।
पश्चिमीय सभ्यता कर रही है सबके अशान्त जीवन।
शान्तिदायिनी आर्य-संस्कृति का महत्त्व बतलाना है।।
गृह, परिवार, समाज, राष्ट्र क्या, जग-कल्याण तुम्हीं पर है।
सर्व भाँति होकर सचेत तुमको दायित्व निभाना है।।
नारी-चित्र अर्द्ध-नंगे चलचित्रों में दिखलाते हैं।
इन गन्दे प्रदर्शनों पर अब शीघ्र रोक लगवाना है।।
जुआ-मांस-मंदिरा का दिन-दिन प्रचार बढ़ता जाता।
ये सब बुरे व्यसन लोगों से करके यत्न छुड़ाना है।।
आज सांस्कृतिक कार्यक्रमों में नाच रही हैं कन्याएँ।
मातृ-शक्ति को विनोद का यूँ साधन नहीं बनाना है।।
कभी राष्ट्र के यही बनेंगे कर्णधार बच्ची, बच्चे।
देकर इन्हें उच्च शिक्षा सब भाँति सुयोग्य बनाना है।।
पाती नहीं योग्य वर कितनी ही कन्याएँ आह! यहाँ।
यह दहेज का रोग भयंकर बहनो ! तुम्हें मिटाना है।।

जिसका है अस्तित्व जगत में सबके लिए सौख्यदायी।
मातृ-स्वरूपा उस गौ का अब जीवन तुम्हें बचाना है।।
आए प्रश्न देश-रक्षा का तो बैरी-दल के सम्मुख।
लक्ष्मी बाई, झाँसी रानी सम जौहर दिखलाना है।
चलो साथ मिलकर सब बोलो, सबके हृदय एक-से हों।।
यह 'प्रकाश' सन्देश वेद का घर-घर में पहुँचाना है।
उठो आर्य बहनो ! अब तुमको करके कुछ दिखलाना है।।

42

उलझ मत दिल

उलझ मत दिल बहारों में, बहारों का भरोसा क्या।
सहारे छूट जाते हैं सहारों का भरोसा क्या।।
तमन्नाएँ जो तेरी हैं फुहारें हैं वो सावन की।
फुहारें सूख जाती हैं फुहारों का भरोसा क्या।।1।।
दिल से जो जहाँ के हैं वो सब रंगीं बहारें हैं।
बहारें रूठ जाती हैं बहारों का भरोसा क्या।।2।।
तू संबल नाव का लेकर किनारों से किनारा कर।
किनारे छूट जाते हैं किनारों का भरोसा क्या।।3।।
अगर विश्वास करना है तो कर दुनिया के मालिक पर।
धनी, अभिमानी, लोभी दुनिया वालों का भरोसा क्या।।4।।
परम प्रभु की शरण लेकर विकारों से सजग रहना।
कहाँ तक मन भटक जाये विकारों का भरोसा क्या।।5।।
तू अपनी अकलमंदी पर, विचारों पर न इतराना।
जो लहरों की तरह चंचल विचारों का भरोसा क्या।।6।।
जबकि किश्ती में भर जाये पापों का पानी।
समझ ले कि है डूबने की निशानी।।

43

उन्नत जीवन

उन्नत जीवन जो करना है, तुम ओ३म् जपो सब ओ३म् जपो।
भव-सागर पार उतरना है, तुम ओ३म् जपो सब ओ३म् जपो।।
संकट के बादल घिर आयें, छा जाए निराशा जो मन में।
भयभीत् हृदय भी कितना हो, तुम ओ३म् जपो सब ओ३म् जपो।।
विषयों के जब तूफान उठे, मन में चंचलता आ जाये।
जब बुद्धि-नैया डोल उठे, तुम ओ३म् जपो सब ओ३म् जपो।।
चिन्ता की अग्नि धधक उठे, मन में व्याकुलता छा जाये।
सच्ची निष्ठा आधार बना, तुम ओ३म् जपो सब ओ३म् जपो।।
मन दुर्गम हो कितना चाहे, और जाना भी हो दूर भले।
ऐ 'पाल' हृदय विश्वास लिए, तुम ओ३म् जपो सब ओ३म् जपो।।

44

उस प्रभु की है कृपा बड़ी

उस प्रभु की है कृपा बड़ी याद कर ले घड़ी दो घड़ी
घंटी बज जाए कब कूच की,
मौत हर दम सिरहाने खड़ी
याद कर ले घड़ी दो घड़ी···
किन्हीं शुभ कर्मों का फल है यह,
तुझे मानव का चोला मिला, जो आया है जाएगा वो,
बंद होगा न ये सिलसिला,
याद कर ले घड़ी दो घड़ी···
इस जवानी पे इतरा न तू,
बातों - बातों में झुक जाएगी।

उभरा सीना सिकुड़ जाएगा
और कमर तेरी झुक जाएगी,
टेककर के चलेगा छड़ी...
याद कर ले घड़ी दो घड़ी
जो करना है ले आज कर
कुछ खबर प्यारे कल की नहीं,
मानव चोले को कर ले सफल
ढील दे इसमें पल की नहीं,
टूट श्वासों की जाए लड़ी।
याद कर ले घड़ी दो घड़ी...

45

एक महाशय जी

एक महाशय जी गाँव पधारे गाँव में जाय उपदेश सुनायो,
वेद मन्त्र उच्चारण करके सत्स-असत्य मार्ग बतलायो।
एक ईश्वर व्यापक कण-कण में मुख्य ओ३म् को नाम बतायो,
उसी ईश के बनो उपासक जगह-जगह क्यों मन भटकायो।
एक चौधरी उठ के बोला महाशय जी इस ओर लखाओ,
इस भाषण को बन्द करो अब कोई फिल्मी गीत सुनाओ।
इतनी सुनकर उठे सभा से मैंने वृथा समय गवांयो,
ना काले कम्बल पर चढ़े रंग ज्यों भैंस के आगे बीन बजायो।

46

ए दुनिया बता

ए दुनिया बता इससे बढ़कर फिर और सदाकत क्या होगी।
जाँ दे दी तलाशे हक के लिए फिर और अबादत क्या होगी।

यूँ तो हर रात की तारीकी देती है पयाम उजाले का।
जिससे यह जहाँ पुर नूर रहे उस रात की कीमत क्या होगी।
खंजर भी दिखाए अपनों ने जहर भी पिलाये अपनों ने।
अपनों के ही एहसाँ क्या कम हैं गैरों से शिकायत क्या होगी।
औरों के लिए मरने वाले मरकर भी हमेशा जीते हैं।
जिस मौत पे दुनिया रश्क करे, उस मौत की अजमत क्या होगी।
सदियों की खिजाँ के बाद खिला इक फूल उसे भी तोड़ लिया।
कलियों के मसलने वालों से फूलों की हिफाजत क्या होगी।

47

एक ओ३म् नाम

एक ओ३म् नाम जग में, है सर्व सुखों का सार।
जीवन की नैया का, बस वही एक पतवार।।
वह है सारे जग का स्वामी, घट-घट वासी अन्तर्यामी।
उसे छोड़कर किसको ध्याऊँ और कौन से प्रीत लगाऊँ।।
देख लिया है मैंने सारा, मतलब का संसार।।1।।
कण-कण में प्रभु आप समाये, पास रहे पर नजर न आये।
वही न्यायकर्ता है ऐसा, जैसी करनी फल दे वैसा।।2।।
महिमा अपरम्पार गए ऋषि-मुनि विज्ञानी हार।
बिगड़ी तुम्हीं बनाने वाले, संकट शूल मिटाने वाले।
हम तो तुम्हें भूल जाते हैं, आप न हमें भूल पाते हैं।।
दीजे भक्ति दान "राघव" को दीनबन्धु दातार।
एक ओ३म् नाम जग में है, सर्व सुखों का सार।।3।।

48

ऐसी कृपा हो भगवान् (नित्य कर्म)

ऐसी कृपा हो भगवान्, घर-घर में यज्ञ-हवन हो।
वर्षा हो शान्ति की, सुख की भरी पवन हो।।
उपकार हो सभी का, पूजा हो देवताओं की।
अरु वेद की ध्वनि से, छाया हुआ गगन हो।।1।।
मिलकर सभी तुझे हम, सत्प्रेम से रिझावें।
सत्संग में तेरे ही, गुण ज्ञान का कथन हो।।2।।
भक्ति तेरी की निश-दिन, लहरा रही हो क्यारी।
सन्ध्या उपासना का, फूला-फला चमन हो।।3।।
सूखे न वह विषय की, जलती हुई हवा से।
रक्षा में बस इसी की, सच्ची सदा लगन हो।।4।।
श्रद्धा व प्रेम-जल से, सींचा करें इसे हम।
चारों फलों को पायें, ऐसा कोई यतन हो।।5।।
कुल इष्ट मित्र मिलकर, परिवार संग अपने।
सबका उसी चमन में, दोनों समय भ्रमण हो।।6।।

49

ऐ मातृ शक्ति जाग तू

ऐ मातृ शक्ति जाग तू ले होश अब सँभाल।
जागेंगे भाग्य देश के होंगे सभी निहाल।
दयानन्द गांधी शिवा को दी हमने लोरियाँ
बिसमिल व भक्त चूमते फाँसी कर डोरियाँ।
तूने ही देश को दिये राणा शिवा से लाल।
सिनेमा क्लब व पार्टी में जा तू न मचल
गलियों बजारों होटलों में सज के न निकल,

फिर देखे बुरी नजर से है किस की यह मजाल।
जो चाहे गिराना तुझे दे धूल में मिला,
अपमान करने वाले का दे नाम तक मिटा,
गुंडे उठायें आँख तो तू आँख दे निकाल।
सीता व पद्मा दुर्गा बन तू लक्ष्मीबाई,
ना सामने आये तेरे कोई आतताई।
संकट के समय ले उठा तलवार और ढाल।।
चंचल कुमारी ने थी गत मुगलों की बनाई,
झाँसी में धूम लक्ष्मीबाई ने मचाई,
भारत की देवियों का है, इतिहास बे-मिसाल।

50

ऐसी कमाई कर लो

ऐसी कमाई कर लो कि जो संग जा सके।
मुश्किल पड़े तो राह में कुछ काम आ सके।
ऐसी कमाई कर लो कि…
संसार में आता कोई साथी नजर नहीं।
बस नाम के साथी हैं ये साथी मगर नहीं।
साथी बनाओ उसको जो साथी कहा सके।
ऐसी कमाई कर लो कि…
पापों में सदा मन को लगाते चले गए।
बदियों का ही सामान बढ़ाते चले गए।
लेकिन कभी न धर्म को अपना बना सके।
ऐसी कमाई कर लो कि…
दुनिया की चकाचौंध में जीवन बिता दिया।
अनमोल समय पा के भी यों ही गँवा दिया।
मानव वही है इसका जो फायदा उठा सके।
ऐसी कमाई कर लो कि…

चिंता की नहीं बात जो चिंतन से काम लो।
शुभ कर्म करो अब से ही ईश्वर का नाम लो।
संभव है 'पथिक' आपके बंधन छुड़ा सके।
ऐसी कमाई कर लो कि···

51
ओ३म् ही रक्षक हमारे

ओ३म् ही रक्षक हमारे सब गुणों की खान हो।
अजर अमर अभय अव्यय विश्व विद्वान हो।।
भूः सब प्राणियों के प्राण के भी प्राण हो।
आप हे जगदीश सब संसार के कल्याण हो।।
भुवः सब दुख दूर करते आप कृपा निधान हो।
स्वः सदा सुखरूप मुखमय सुखद सुखधि महान हो।।
तत् वही सुप्रसिद्ध ब्रह्मन वेद वर्णित सार हो।
देव सवितुः सर्व उत्पादक व पालनहार हो।।
शुभ वरेण्यं वरण करने योग्य भगवन् आप हो।
शुद्ध भर्गः मल रहित भजनीय हो निष्पाप हो।।
दिव्य गुण देवस्य दिव्य स्वरूप देव अनूप के ।
धीमहि धारें हृदय में दिव्य गुण रूप के।।
धियो यो नः वह हमारी बुद्धियों का हित करें।
ईश प्रचोदयात् नित सन्मार्ग में प्रेरित करें।।
बुद्धि का शुभ दान दे अपनी शरण में लीजिए।
वेद पथ का कर पथिक हमको अमर पद दीजिए।।

52

ओ३म् नाम गुण गाइए

ओ३म् नाम गुण गाइए,
हुण ओ३म् नाम गुण गाइए।
मानुष जन्म अमोलक हीरा,
मुड़ के हत्थ नहीं ओणा बीरा।
एह न मुफ्त गँवाइए,
हुण ओ३म् नाम गुण गाइये।
हुण ओ३म् नाम गुण गाइए।
ओ३म् नाम है प्रभु प्यारा।
ओ३म् नाम है सुख की धारा,
जीवन सफल बनाइये।
हुण ओ३म् नाम···
ओ३म् नाम है ईश्वर वाचक।
पापों दुखों का है यह नाशक।
मोह माया नु भुलाइए।
हुण ओ३म् नाम···

53

ओ३म् जपो सब

ओ३म् जपो सब प्राणी मिलकर ओ३म् जपो।
सफल बने जिन्दगानी मिलकर ओ३म् जपो।
ओ३म् नाम है सबसे न्यारा।
सबसे उत्तम सबसे प्यारा।
कोई न जिसका सानी मिलकर ओ३म् जपो···

घट-घट वासी अन्तर्यामी।
सबका मालिक सबका स्वामी।
प्रियतम दिलबर जानी मिलकर ओ३म् जपो।...
जिसने सारा जगत रचाया।
यह धरती आकाश बनाया।
रचे आग और पानी मिलकर ओ३म् जपो।...
कष्ट विनाशक और सुखदायक।
रक्षक पालक परम सहायक।
धन, बल यश का दानी मिलकर ओ३म् जपो।...
पृथ्वी सूरज चाँद सितारे।
ऋषि मुनि योगी गुरुजन सारे।
जपते ज्ञानी, ध्यानी मिलकर ओ३म् जपो।...
न कोई लगता पैसा धेला।
न कोई मुश्किल न ही झमेला।
बड़ी 'पथिक' आसानी मिलकर ओ३म् जपो।...

54

ओ३म् विश्वानि देव

ओ३म् विश्वानि देव सवितर्दुरितानि परा सुव।
यद्भद्रं तन्न आसुव।।

भावार्थ

हे! सर्वेश सकल सुखदाता।
व्यापक ब्रह्म विशुद्ध विधाता।।
सर्व नियन्ता विश्व प्रकाशक
पाप, ताप, अभिशाप विनाशक।।
नष्ट सकल दुःख दुर्गुण कीजे।
जो है भद्र हमे वह दीजे।।

ओ३म् अग्ने नय सुपथा राये अस्मान् विश्वानि देव वयुनानि विद्वान्। युयोध्यस्मज्जुहुराणमेनो भूयिष्ठां ते नम उक्तिं विधेम।

भावार्थ

प्रभो ! धर्म-अनुकूल प्रिय पुण्य पथ से,
हमें शीघ्र कल्याण की ओर ले चल।।
परम देव ! तू जानता है हमारें,
सकल कृत्य जो हैं मलिन और निर्मल।।
सभी पाप, दुष्कर्म कर नष्ट जिससे,
मनुज-जन्म हो पूर्ण सार्थक समुज्जवल।।
अमित्त स्नेह, श्रद्धा-सहित कर रहे हैं,
कि तेरे लिए हम नमस्कार प्रतिपल।।

55

ओ३म् का नाम

ओ३म् का नाम क्यों तुझको भाता नहीं?
क्यों शरण में तू वेदों की आता नहीं?
काहे रटना लगाये सिया राम की।
बाट जोहे क्यों नाहक तू घनश्याम की।
जन्म लेके सदा रहने पाता नहीं।।1।। क्यों···
छोड़कर तेरा सच्चा सहारा प्रभु।
तज के वेदों का पौराणिक सहारा गहूं।
इस अवस्था में तो चैन पाता नहीं।।2।। क्यों···
जीवित माता - पिता का अनादर किया।
बाद मरने के श्रद्धा से तर्पण किया।
शास्त्र में जिसका प्रमाण पाता नहीं।।3।। क्यों···

जबकि सृष्टिकर्ता निराकार है।
फँस अविद्या में माना क्यों साकार है ?
योग-साधन बिना उसको पाता नहीं।।4।। क्यों···
'बालकृष्ण' दिया जिसने मार्ग दिखा।
उस प्रभु का दिया जिसने मार्ग बता।
उस ऋषि के तू क्यों गान गाता नहीं।।5।। क्यों··

56

ओ३म् अखिलेश

ओ३म् अखिलेश अजन्मा अमर अकाया है।
मूर्ति जिसकी नहीं यह वेद ने बतलाया है।।
सारे ब्रह्माण्ड में आकाशवत् समाया है।
सर्व कल्याणमयी उसकी छत्रछाया है।।

57

ओ३म् नाम प्रिय बोल

ओ३म् नाम प्रिय बोल रे तोहे शान्ति मिलेगी।।
चहुँ दिशि प्रभु की ज्योति निरख ले
ज्ञान-चक्षु को खोल रे तोहे शान्ति मिलेगी।।
धर्म - कर्म की हाट लगा ले
पूरा-पूरा तोल रे तोहे शान्ति मिलेगी।।
दम्भ, द्वेष, छल, स्वार्थ त्याग दे
प्रेम-प्रीतिरस घोल रे तोहे शान्ति मिलेगी।।
विषयों में मत खो 'प्रकाश' तू
मानुष तन अनमोल रे तोहे शान्ति मिलेगी।।

58

ओ३म् अनेक बार बोल

ओ३म् अनेक बार बोल प्रेम के प्रयोगी!
है यही अनादि नाद निर्विकल्प निर्विवाद।
भूलते न पूज्य याद, वीतराग योगी।। ओ३म्···
वेद को प्रमाण मान, अर्थ-योजना बखान
गा रहे गुणी सुजान, साधु स्वर्ग - भोगी। ओ३म्···
ध्यान में धरें, विरक्त भाव से भजें सुभक्त।
त्यागते अधम, अशक्त, पोच, पाप - रोगी।। ओ३म्···
'शंकर' अनादि नित्य नाम,
जो भजे विसार काम।
तो बने विवेकधाम, मुक्ति क्यों न होगी।। ओ३म्···

59

ओ३म् सुख-कन्द से

ओ३म् सुख - कन्द से, सच्चिदानन्द से याचना है,
श्रेयपथ पर चलूँ कामना है।
कृत कुकर्मों की जब याद आती
आँख है अश्रुधारा बहाती
मन में सन्ताप की, घोर अनुताप की वेदना है। श्रेय०
पाया नर-तन, न पर साधना की
कुछ भी मैंने न प्रभु-आराधना की
मन में तृष्णा भरी, काम-मद-लोभ की वासना है। श्रेय०
भक्तजन की सुनो करुण कविता,
विश्व दुरितों को हे देव ! सविता,
दूर कर दीजिए, भद्र भर दीजिए भावना है। श्रेय०

'स्वस्ति पन्थामनुचरेम' भगवन्
सूर्य औ' चंद्र के तुल्य भगवन्
दान दूँ, ज्ञान लूँ, बन रहूँ प्रार्थना है। श्रेय०
ले चलो सुपथ पै सर्वज्ञाता,
कुटिल अघ से बचूँ सिर नवाता,
'पाल' दो आत्मबल, जिससे होवे सफल साधना है। श्रेय०

60

ओ३म् नाम नित बोल

ओ३म् नाम नित बोल अरे मन अज्ञानी!
ओ३म् ही प्रभु का नाम है प्यारा
जीवन का है यही सहारा
जगह - जगह मत डोल। अरे मन०
हरदम अंग - संग रहे तेरे
सन्ध्या करिये शाम - सवेरे
हृदय के पट खोल। अरे मन०
जीवन अपना सफल बना ले
वेदों का मारग अपना ले
तेरा मानव - तन अनमोल। अरे मन०
मेरा - मेरा करके फूला
माया के बस प्रभु को भूला
तेरे बजे कान पै ढोल। अरे मन०
सिर पर मृत्यु खड़ी है 'राघव'
अमर नहीं तन तेरा मानव
होय बिस्तरा गोल। अरे मन०

61

ओ३म् नाम प्यारा है

ओ३म् नाम प्यारा है।
माता-पिता, भाई-बन्धु, सखा वह हमारा है।
ओ३म् नाम प्यारा है जी ओ३म् नाम प्यारा है।।
निराकार है वह जर्रे-जर्रे में समाया है।
महिमा है अपार, अन्त किसी ने ना पाया है।
पत्ता-पत्ता, डाली-डाली करे यह इशारा है।। ओ३म्०
पृथ्वी, पहाड़, नदी, नाले क्या बनाए हैं।
रंगदार फूल बिना हाथों के खिलाए हैं।
लेता है प्रकाश उससे सूर्य-चन्द्र-तारा है।।ओ३म्०
ऋषि, मुनि, योगी सारे उसे ही ध्याते हैं।
गीत प्रभुभक्ति के झूम - झूम गाते हैं।
तोता, मैना, कोयल ने भी उसी को पुकारा है।
वेदानुसार जीवन अपना जो बनाते हैं।
आत्मा को शुद्ध कर मुक्ति को पाते हैं।
'नन्दलाल' उसी की जय-जय करे जग सारा है।।ओ३म्०

62

ओ३म् है जीवन हमारा

ओ३म् है जीवन हमारा, ओ३म् प्राणाधार है।
ओ३म् है कर्ता विधाता, ओ३म् पालनहार है।।
ओ३म् है दुःख का विनाशक, ओ३म् सर्वानन्द है।
ओ३म् है बल-तेजधारी, ओ३म् करुणाकन्द है।।
ओ३म् सबका पूज्य है, हम ओ३म् का पूजन करें।
ओ३म् ही के ध्यान से, हम शुद्ध अपना मन करें।।

ओ३म् के गुरु मन्त्र जपने से, रहेगा शुद्ध मन।
बुद्धि दिन-प्रतिदिन बढ़ेगी, धर्म में होगी लगन।।
ओ३म् के जप से हमारा, ज्ञान बढ़ता जाएगा।
अन्त में यह ओ३म् हमको, मुक्ति तक पहुँचाएगा।।

63

आरती (ओ३म् जय जगदीश हरे)

ओ३म् जय जगदीश हरे, स्वामी जय जगदीश हरे।
भक्त जनों के संकट क्षण में दूर करे। ओ३म्... ।।1।।
जो ध्यावे फल पावे दुःख विनशे मन का।
सुख-संपत्ति घर आवे कष्ट मिटे तन का। ओ३म्... ।। 2।।
मात-पिता तुम मेरे शरण गहूँ किसकी।
तुम बिन और न दूजा आस करूँ जिसकी। ओ३म्... ।।3।।
तुम पूरण परमात्मा तुम अंतर्यामी।
पारब्रह्म परमेश्वर तुम सबके स्वामी। ओ३म्... ।।4।।
तुम करुणा के सागर तुम पालनकर्ता।
मैं सेवक तुम स्वामी कृपा करो भर्ता। ओ३म्... ।।5।।
तुम हो एक अगोचर सबके प्राणपति।
किस विधि मिलूँ दयामय दो मुझको सुमति। ओ३म्... ।।6।।
दीनबंधु दुःखहर्ता तुम रक्षक मेरे।
करुणा - हस्त बढ़ाओ शरण पड़ा तेरे। ओ३म्... ।। 7।।
विषय - विकार मिटाओ पाप हरो देवा।
श्रद्धा - भक्ति बढ़ाओ संतन की सेवा। ओ३म्... ।। 8।।

64

ओ३म् का सुमरन

ओ३म् का सुमरन किया करो, प्रभु के सहारे जिया करो।
जो दुनिया का मालिक है, नाम उसी का लिया करो।।

सुर दुर्लभ मानव तन तूने, बड़े भाग्य से पाया है।
विषयों में फँसकर क्यों बंदे, हीरा जन्म गँवाया है।।
दुष्ट संग ना किया करो, सज्जनों से गुण लिया करो।
जो दुनिया का मालिक है, नाम उसी का लिया करो।।1।।

पता नहीं कब रुक जाए यह चलते-चलते श्वासा।
इक क्षण सब खत्म हो जाए जग का सभी तमाशा।।
सुबह-शाम जप किया करो, याद प्रभु को किया करो।
जो दुनिया का मालिक है, नाम उसी का लिया करो।।2।।

हर प्राणी से प्यार करो, सबमें वही समाया है।
मिलकर रहना सब हैं अपने, कोई नहीं पराया है।।
दुःख ना किसी को दिया करो, द्वेष भाव ना किया करो।
जो दुनिया का मालिक है, नाम उसी का लिया करो।।3।।

सच्चा सुख है प्रभु भक्ति में, बात न समझो झूठी।
वही अमर पद पाते हैं, जो पीते ओ३म् की बूटी।।
ओ३म् नाम रस पिया करो, 'राघव' भूल न किया करो।
जो दुनिया का मालिक है, नाम उसी का लिया करो।।4।।

65

ऋतुओं में बसन्त

ऋतुओं में बसन्त का, वीरों में हनुमन्त का।
दयानन्द सन्त का ऊँचा स्थान है।।1।।

संगीत में साज का, जीवन में सुकाज का।
आर्यसमाज का, ऊँचा स्थान है।।2।।

गर्मी में पवन का, सत्संग भवन का।
संध्या और हवन का, ऊँचा स्थान है।।3।।

पशुओं में गाय का, वेदों में स्वाध्याय का।
वृद्धों की राय का, ऊँचा स्थान है।।4।।

सप्ताह में सण्डे का, मास्टर के डण्डे का।
ओ३म् के झण्डे का, ऊँचा स्थान है।।5।।

नदियों में गंग का, साजों में मृदंग का।
भगवे रंग का, ऊँचा स्थान है।।6।।

बदन में शीश का, गिनती में इक्कीस का।
प्रभु जगदीश का, ऊँचा स्थान है।।7।।

सावन में खीर का, युद्ध में वीर का।
गाय के क्षीर का, ऊँचा स्थान है।।8।।

66

ऋषि ने जलाई है

ऋषि ने जलाई है जो द्विय ज्योति
जहाँ में सदा यों ही जलती रहेगी।
हजारों व लाखों को रस्ता मिलेगा
करोड़ों के जीवन बदलती रहेगी।

अविद्या, अभाव और अन्याय जड़ से
हिलाने, जलाने, मिटाने की खातिर।
दयानन्द के जां निसारों की टोली
कफन बाँध सर पे निकलती रहेगी।

जिधर से भी गुजरेगी जिस वक्त लेकर
यह हाथों में पाखण्ड खण्डनी पताका।
धर्म देश जाति के सब दुश्मनों को
यह पैरों के नीचे मसलती रहेगी।

पहाड़ों से भिड़ना तूफानों से लड़ना
जनम से ही हमको सिखाया ऋषि ने।
सदा मुश्किलों से निडर जूझने की
तमन्ना दिलों में मचलती रहेगी।

सुनो कान धर कर ऐ दुनिया के लोगो,
'पथिक' आज से इन दीवानों की मस्ती।
सदाचार का भाल ऊँचा करेगी
दुराचार का सर कुचलती रहेगी।

67

ऋषिवर देव दयानन्द (पाँच महायज्ञ)

ऋषिवर देव दयानन्द की पद्धति हमें सिखलानी है।
पाँच महायज्ञों की महिमा घर-घर में पहुँचानी है।
पाँच महायज्ञों की महिमा···
प्रातः सायं सन्ध्या और स्वाध्याय वेद बतलाता है।
यह है पहला महायज्ञ जो ब्रह्मयज्ञ कहलाता है।
आत्म-चिन्तन प्रभु-मिलन की विधि अत्यन्त पुरानी है।
पाँच महायज्ञों की महिमा···

देव यज्ञ है अग्निहोत्र और महायज्ञ यह दूजा है।
इसी से होती जड़, चेतन देवों की सच्ची पूजा है।
नित्य नियम से किया करो यदि काया स्वस्थ बनानी है।
पाँच महायज्ञों की महिमा...

महायज्ञ बलिवैश्वदेव को चौथा यज्ञ समझ लेना।
पका अन्न पहले अग्नि और जीव-जन्तुओं को देना।
फिर आपस में बाँट के खाना प्रीत की रीत निभानी है।
पाँच महायज्ञों की महिमा...

'पथिक' पाँचवें महायज्ञ को अतिथियज्ञ कहते सारे।
संन्यासी, विद्वानों की घर पर सेवा करना प्यारे।
जहाँ ये पाँचों महायज्ञ हों वह घर स्वर्ग निशानी है।
पाँच महायज्ञों की महिमा...

68.

ऋषिराज दयानन्द

ऋषिराज दयानन्द भारत में इक ज्योति जलाये गये,
सुनो सजनो।

टंकारे में जन्म लिया, शिवरात्री ब्रत धार लिया।
शिव के ऊपर चूहे को लख, शिव से नेह विसार दिया।।
सच्चे शंकर की खोज करी, पाखण्ड मिटाय गये।1। सुनो...

अगर दयानन्द ना आते, बुरी तरह हम मिट जाते।
आज हमें जो ज्ञान हुआ है, ऐसा ज्ञान कहाँ पाते।।
फैली थीं जितनी कुरीतियाँ, वह ध्यान दिलाय गये।2। सुनो...

वेद बिना हम भटके थे, मत पंथों में अटके थे।
कुरान, बाइबिल और पुराणों के फंदों में लटके थे।।
सत्यार्थ प्रकाश बना करके, भ्रम भूत भगाय गये।3। सुनो...

राज्य विदेशी छाया था, देश गुलाम बनाया था।

ऐसी कठिन समस्या में, उस ऋषि ने हमें जगाया था।।
नरदेव देश आजादी का शुभ पाठ पढ़ाय गये।।4।। सुनो···

69

क्या करना हमको

क्या करना हमको, कर बैठे क्या आज।।
वेद प्रचारक ऋषि दयानन्द ने आवाज लगाई थी।
आर्य जाति जो सोई थी वह फिर से आय जगाई थी।
जिसे देखकर पोप मंडली सबकी सब दहलाई थी।।
पाखंड खंडनी ध्वजा कुंभ के मेले में फहराई थी।
बतलाई थी वेद सभ्यता बदला सभी समाज। 1। क्या···
दयानन्द के अनुयायी श्री लेखराम झन्डा ठाया।
श्रद्धानन्द ने तो शुद्धि का काम पूर्ण कर दिखलाया।।
कितने आर्य वीरों ने खुद को फाँसी पर लटकाया।
देख देख तप त्याग हमारा, अंग्रेजी दल घबराया।।
धाया वह अंग्रेज यहाँ से, देकर हमें स्वराज।2। क्या···
चला गया अंग्रेज किन्तु कुछ बीज रह गया बाकी है।
खान-पान पहरान दे गया सिखा गया चालाकी है।।
बदल गया इतिहास देश का करके अति नालाकी है।
पागल बना गया लोगों को चलाई उल्टी चाकी है।।
आंकी है ना चाल कोम अब बिगड़ी बे-अन्दाज।3। क्या···
आजादी को पाकर के अब हम ऐसे आजाद हुए।
धर्म-कर्म ईश्वर को भूले, बिल्कुल बे-मर्याद हुए।।
नये-नये मत पंथ बने हैं झगड़े और विवाद हुए।
एक-दूसरे से कर घृणा इस कारण बरबाद हुए।।
दंग हुए नरदेव देखकर यह बेढंगा साज।4। क्या···
क्या करना हमको, कर बैठे क्या आज।।

70

क्या सुन्दर समय (विवाह अवसर पर)

क्या सुन्दर समय सुहाया है,
गुण गाओ परमेश्वर का।। टेक।।
दो गृहस्थ घनिष्ठ मिले हैं।
फूलों की भाँति खिले हैं।।
सब मन का मैल मिटाया है।। 1।। गुण…
समधी सम बुद्धि वाले।
रंग के हैं गोरे काले।।
पर दिल में दीप जलाया है।। 2।। गुण…
ज्यों जल में जल मिल जाता।
फिर अलग नहीं हो पाता।।
ऐसे सम्बन्ध मिलाया है।। 3।। गुण…
वर वधू वीर ब्रह्मचारी।
दोनों की शोभा प्यारी।।
वैदिक विधि ब्याह रचाया है।। 4।। गुण…
यह चलें वेद के रस्ते।
सबको नित करें नमस्ते।।
जो ऋषियों ने बतलाया है।। 5।। गुण…
हे भगवन् विनय हमारी।
शुभ हो यह रिश्तेदारी।।
'नरदेव' गीत कथ गाया है।। 6।। गुण…

71

कर ओ३म् नाम से प्यार

कर ओ३म् नाम से प्यार, जगत में कोई नहीं अपना।
जब तक आती-जाती श्वासा,
तब तक दुनिया बीच तमाशा।
जिस दिन टूटे इसका तार, डालकर ले जाते कफना।।1।।
जिसको समझे था तू मेरा,
उसने फूँक दिया तन तेरा।
ऐसा जग का व्यवहार, समझ ज्यों नींद बीच सपना।।2।।
मत कर इस जीवन में भूल,
ये मानव तन बहुत अमूल्य।
इसको मत करना बेकार, लगाकर आलस में झपना।।3।।
गर तू फेर मनुष्य तन चाहे,
क्यूँ ना प्रभु से प्रीत लगाये।
'राघव' हो जाये बेड़ा पार, प्रेम से ओ३म् नाम जपना।।4।।

72

कब तक शराब (मद्यपान-निषेध)

कब तक शराब की ये पीते रहोगे प्याली ?
करते रहोगे कब तक आबाद गन्दी नाली ?
पीने पै घूँट, होतीं फिर बोतलें हैं खाली।
छुटती कभी नहीं है आदत बुरी जो डाली।।
सेहत खराब होती, दौलत तबाह होती।
सब लोग देख हँसते, लड़के बजाते ताली।।
मानो 'प्रकाश' का यह कहना भला जो चाहो।
पीना न मय की प्याली बरबाद करने वाली।।

73

कहीं पर जीत होती है

कहीं पर जीत होती है कहीं पर हार होती है।
यही है जिन्दगी प्यारे जो दिन दो-चार होती है।
जो पेड़ों को लगाते हैं सभी तो फल नहीं खाते,
यहाँ प्रारब्ध भी कोई चीज आखिरकार होती है।
किसी भी काम में जब तक न हो मरजी विधाता की,
बड़ी कोशिश करे कोई मगर बेकार होती है।
कभी खिलवाड़ फूलों से कभी आकाश से बातें,
कभी तूफान में नैया पड़ी मंझधार होती है।
यह बचपन ही सहारा है जवानी और बुढ़ापे का,
अजी यह नींव है जिस पर खड़ी दीवार होती है।
यह जीवन एक नदिया है तो सुख-दुख दो किनारे हैं,
ये दोनों साथ रहते हैं जहाँ जलधार होती है।
यह दौलत नाव ही समझो जो आती और जाती है,
कभी इस पार होती है कभी उस पार होती है।
'पथिक' मंजिल पे सब पहुँचे कोई आगे कोई पीछे,
कि हर इनसान की जग में अलग रफतार होती है।

74

कर लै सच्चे प्रभु नाल प्यार

कर लै सच्चे प्रभु दे नाल प्यार बन्देया।
इस जिन्दगी नूँ ऐंवें न गुज़ार बन्देया।
इस दुनियाँ दे विच तेरा कौन अपना।
प्रभु अपने दा भुलेया तूँ नाम जपना।

अजे वेला ई सोच ते विचार बन्देया।
कर लै सच्चे प्रभु दे नाल···

तेरे सिर ते खड़ा है बन्दे काल कूकदा।
ओहने करना निशाना अपनी बन्दूक दा।
गोली मौत लंघ जाणी सीने पार बन्देया।
कर लै सच्चे प्रभु दे नाल···

अग्गे खूह है चौरासी लख मील गैहरा।
विच डिग्गेयाँ नहीं लभना निशान तेरा।
वेखीं पैर न वधांवीं खबरदार बन्देया।
कर लै सच्चे प्रभु दे नाल···

नहियों दम दा भरोसा मिट्टी दे शरीर नूँ।
छड्ड दुनिया दा मेला चलना अखीर नूँ।
'पथिक' मुड़ के नहीं औना दूजी वार बन्देया।
कर लै सच्चे प्रभु दे नाल···

75

कण–कण में बसा प्रभु

कण-कण में बसा प्रभु देख रहा चाहे पुण्य करो चाहे पाप करो।
कोई उसकी नजर से बच न सका चाहे पुण्य करो चाहे पाप करो।
कण-कण में बसा प्रभु···

यह जगत रचा है ईश्वर ने जीवों के कर्म करने के लिए।
कुछ कर्म नए करने के लिए जो पहले किए भरने के लिए।
यह आवागमन का चक्र चला चाहे पुण्य करो चाहे पाप करो।
कण-कण में बसा प्रभु···

इनसान शुभाशुभ कर्म करे अधिकार मिला है ज़माने में।
कर्मों में स्वतंन्त्र बना है मगर परतन्त्र सदा फल पाने में।
है न्याय प्रभु का बहुत कड़ा चाहे पुण्य करो चाहे पाप करो।
कण-कण में बसा प्रभु···

सब पुण्य का फल तो चाहते हैं पर पुण्य कर्म नहीं करते हैं।
फल पाप का लोग नहीं चाहते जिसमें दिन-रात विचरते हैं।
मिलता है सभी को अपना किया चाहे पुण्य करो चाहे पाप करो।
कण-कण में बसा प्रभु…
इस दुनिया में कृत कर्मों का फल हरगिज माफ नहीं होता।
जब तक न यहाँ भुगतान करो यह दामन साफ नहीं होता।
रहे याद 'पथिक' यह नियम सदा चाहे पुण्य करो चाहे पाप करो
कण-कण में बसा प्रभु…

76

करो न कभी दौलत का झूठा अभिमान

करो न कभी दौलत का झूठा अभिमान।
कुचल के रख दे अभिमानी को।
ईश महा-बलवान। करो न कभी…
दौलत से भोजन मिल जाए और बहुत सी चीजें।
भूख का मिलना महा कठिन है करो लाख तरकीबें।
दौलत से दवा मिल जाए, पर सेहत कहाँ से आए।
इस बात पे दीजे ध्यान। करो न कभी…
दौलत बेटा दे सकती पर पुत्र नहीं दे पाए।
पुत्र है वो जो राम समान पिता का हुक्म बजाए।
चाहे दुःख की बिजली टूटे पर धर्म कभी न छूटे।
आयें लाखों तूफान। करो न कभी…
तुमको दौलत से मिल सकती, ऐनक खूब निराली।
लेकिन कभी न मिल सकती आँख रोशनी वाली।
चाहे ढूँढ़ो दुनिया भर में, न मिलेगी किसी भी नगर में।
मैं करता हूँ एलान। करो न कभी…

दौलत देकर कार कोठियों के बन जाओ मालिक।
लेकिन शान्ति जैसी वस्तु का है पाना मुश्किल।
औरत भी मिले दौलत से, पर पत्नी मिले किस्मत से।
सम्मुख लाखों प्रमाण। करो न कभी···

77
करो प्रभु से प्यार

करो प्रभु से प्यार, अमृत बरसेगा।
हो जाए बेड़ा पार, अमृत बरसेगा।।
दया - धर्म भवसागर तर ले।
प्रेम - प्रीति से भक्ति कर ले।
हो जाए बेड़ा पार अमृत बरसेगा।। करो प्रभु०
सत्य ज्ञान की पहनो चुनरिया।
छोड़ कपट चलो प्रेम-नगरिया।
हो जाए तेरा उद्धार, अमृत बरसेगा।। करो प्रभु०
परोपकार की बान पकड़ ले।
दस इन्द्रियाँ और मन को जकड़ ले।
कर दे 'देश' सुधार, अमृत बरसेगा।। करो प्रभु०

78
कर्मों की जंजीर न तोड़ी

कर्मों की जंजीर न तोड़ी प्यार प्रभु का तोड़ दिया।
मोहमाया में अंधा बनकर, पाप से नाता जोड़ लिया।।
आया था तू इस दुनिया में जीवन ज्योति जलाने को,
तजकर आया झूठे धंधे, प्रभु के दर्शन पाने को।
पर पग तेरे नहीं उठते हैं, प्रभु के दर तक जाने को,

प्रभु भक्ति को दिल से भुलाकर, सच्चा रास्ता छोड़ दिया।।1।।
गई जवानी आया बुढ़ापा, अब क्यों बैठा रोता है,
बीत गई सो जाने दे अब, शेष बची क्यों खोता है।
सफल है जग में जीवन उसका, धर्म के बीज जो बोता है,
गंदे कर्मों में फँसकर, अनमोल जनम क्यों खोइ दिया।।2।।
शाम - सवेरे हरदम दिल में, रहती तेरे माया है,
सोना - चाँदी देख - देखकर, डोली तेरी काया है।
मोह अज्ञान का घोर अँधेरा, तेरे तन पर छाया है,
होके दिवाना इस दुनिया में, प्रभु से मुखड़ा मोड़ लिया।।3।।

79

कर्म खोटे तो ईश्वर

कर्म खोटे तो ईश्वर का भजन करने से क्या होगा,
किया परहेज कुछ भी न, दवा खाने से क्या होगा।

समय पर एक ही ठोकर बदल देती है जीवन को,
जो ठोकर से भी न समझे तो, उसे समझाने से क्या होगा।
कर्म खोटे...

समाँ बीता हुआ हरगिज कभी न हाथ आएगा,
लिया चुग खेत चिड़ियों ने, अब पछताने से क्या होगा।
कर्म खोटे...

मुसीबत तो टले मरदानगी के थपेड़ों से,
मुकद्दर पर भरोसा करके, सो जाने से क्या होगा।
कर्म खोटे...

तू मुट्ठी बाँधकर आया और खाली हाथ जाएगा,
'पथिक' मालिक करोड़ों का भी कहलाने से क्या होगा।
कर्म खोटे...

80

कर गए देश का बेड़ा पार

कर गए देश का बेड़ा पार, टंकारे वाले स्वामी।। टेक।।
सत्यार्थ प्रकाश बनाया। काशी को जाय हिलाया।
आया जीत पोप गए हार।। 1।।
जो रामकृष्ण के प्यारे। हमसे थे दूर बिचारे।।
करके शुद्धि लिए सुधार।। 2।। टंकारे···
नारी का मान बढ़ाया। शिक्षा अधिकार दिलाया।।
बतलाया वेदों का सार।। 3।। टंकारे···
खुलवाई फिर गौशाला। विधवाओं का दुख टाला।।
पाले दलितों के परिवार।। 4।। टंकारे····
वेदों की बीन बजाई। पोपों की आफत आई।।
आई अब 'नरदेव' बहार।। 5।। टंकारे···

81

कैसे होवेगा कल्याण

कैसे होवेगा कल्याण, आज नर-नार हैं दुखी।।
किसी समय सब देश निवासी प्रतिदिन हवन रचाते।
सामग्री हर ऋतु की अपने हाथों स्वयं बनाते।।
कितना ऊँचा था विज्ञान। 1। आज···
हर बीमारी को यज्ञों से दूर किया करते थे।
वायु मण्डल शुद्ध बनाके अधिक जिया करते थे।।
पौष्टिक थे सारे सामान। 2। आज···
आज सुबह से रोज शाम तक होते उल्टे काम।
नर-नारी मिल धूम्रपान का करते. प्राणायाम।।
जाने माने ना इन्सान। 3। आज···

बिना यज्ञ के वायु मण्डल है अब दूषित भारी।
तरह-तरह की बढ़ीं देश में अनगिनती बीमारी।।
जिनका होता नहीं निदान। 4। आज···
वायु शुद्ध करने का जग में केवल एक तरीका।
बड़े-बड़े यज्ञों को करिये, कर्म श्रेष्ठतम नीका।।
सुखमय होगा सकल जहान। 5। आज···
अगर भलाई चाहो तो सब वैदिक पथ अपनाओ।
ऋषियों की मर्यादा सीखो, सबको सदा सिखाओ।।
करते कवि 'नरदेव' बयान। 6। आज···

82

कैसे जानेंगे भगवान् को

कैसे जानेंगे भगवान् को नर पापी हो गये।
मन मंदिर में कभी किसी दिन झाड़ू नहीं लगाया।
दुर्गुण दुर्व्यसनों से सारा जीवन मलिन बनाया।
भूले हैं वेदों के ज्ञान को।। नर०
झूठे वाद-विवादों में नित वक्त कीमतें खोवें।
मानव चोला पाकर के भी पड़े आलसी सोवें।
तज के धर्म-कर्म-ईमान को।। नर०
खाना - पीना ही जीवन का समझा सच्चा सार।
इसी लगन में आज देख लो दौड़ा सब संसार।
अमृत समझ रहे विषपान को।। नर०
तन के उजले मन के मैले बगुला जैसे भेष।
भ्रष्टाचारी भक्त बने हैं अब नर-नार विशेष।
गावें ना ईश्वर के गान को।। नर०
ईश्वर से क्यों विमुख हुए यह कारण हमने जाना।
कह 'नरदेव' अविद्या में फँस गये लोग यह माना।
अच्छा समझ रहे अज्ञान को।। नर०

कौन कहता आर्य जन

कौन कहता आर्य जन कुछ भी न कर दिखला रहे।
आज ऋषिवर की बताई, राह पर सब आ रहे।।
मूर्ति पूजा को जिन्होंने स्वर्ग की सीढ़ी कहा।
आज देखो स्वयं इसकी हानियाँ बतला रहे।1।
ईश का अवतार होता धर्म रक्षा के लिए।
अब अनेकों ईश्वरों से भक्त जन घबड़ा रहे।2।
शूद्र की छाया पड़ी तो मानते खण्डित हुए।
आज देखो होटलों में साथ भोजन खा रहे।3।
श्राद्ध, मृतक भोज में जो पोप मस्ती छानते।
आज घर बैठे विचारें, रो रहे पछता रहे।4।
नारियों को नीच कहकर जो न पढ़ने भेजते।
आज वह ही लड़कियों को वेद तक पढ़वा रहे।5।
बालकों के ब्याह करने से न आते बाज जो।
आज अपनी भूल को स्वीकार करते जा रहे।6।
ब्याह विध्वा का कहैं थे धर्म के विपरीत है।
आज इसको धर्म के अनुकूल खुद समझा रहे।7।
काम जितने भी जहाँ में हो रहे उत्थान के।
है दयानन्द की दया 'नरदेव' सब यों गा रहे।।8।।

84

कौन निराश्रित

कौन निराश्रित दीन - दुखी
विधवा व अनाथ को धीर बँधाता?
पादरी मुल्लों के चंगुल से
प्रिय राम की संतति कौन बचाता?
शुद्धि का चक्र चला करके फिर
कौन हमें बिछुड़ों से मिलाता?
आर्यसमाज न होता तो निश्चय
हिन्दु यहाँ पर दृष्टि न आता।।

85

किसी के काम जो आवे

किसी के काम जो आवे उसे इन्सान कहते हैं 2।।
पराया दर्द अपनावे उसे इन्सान कहते हैं 2।।
कभी धनवान है कितना कभी इन्सान निर्धन है।
कभी सुख है कभी दुख है इसी का नाम जीवन है।
जो मुश्किल में न घबराए उसे इन्सान कहते हैं।
ये दुनिया एक उलझन है कहीं धोखा कहीं ठोकर।
कोई हँस-हँस के जीता है कोई जीता है रो-रोकर।
जो गिरकर फिर सँभल जावे उसे इन्सान कहते हैं।
अगर गलती रुलाती है तो ये राह भी दिखाती है।
बशर गलती का पुतला है ये अक्सर हो ही जाती है।।
जो गलती करके पछतावे उसे इन्सान कहते हैं।।
अकेले ही जो खा-खाकर सदा गुजरान करते हैं।
यूँ भरने को तो दुनिया में पशु भी पेट भरते हैं।
'पथिक' जो बाँटकर खाए उसे इन्सान कहते हैं।।

86
किसी से तेरा पार

किसी से तेरा पार जाए न पाया।
तू बेअन्त है तेरी बेअन्त माया।
तेरी लगन ही योगियों को सताए।
तपस्वी तेरी धुन में तप करता जाए।
गये हार तो अब सिर है झुकाया। तू बेअन्त…
तुझे ढूँढ हारे सभी दुनिया वाले,
तेरे खेल देखे सभी ने निराले,
तू क्या है किसी ने न पूरा बताया। तू बेअन्त…
ऋचाएँ ऋषि तेरी मस्ती में गायें,
तेरी चर्चा को हर जबाँ पर ही पायें,
हिमाला ने सन्देश तेरा सुनाया। तू बेअन्त…
तेरी खूबियाँ फिर लिखे कोई कैसे,
तुझे तू ही जाने कि हैं आप कैसे,
किसी को तेरा अन्त कुछ भी न आया। तू बेअन्त…

87
खुदगर्जी के दिलों में

खुदगर्जी के दिलों में तूफान नजर आते हैं।
सपनों में भी पराए नुक्सान नजर आते हैं।
अपना ही उल्लू सीधा दुनिया में जो हैं करते।
अपने लिए हैं जीते, अपने लिए हैं मरते।
हैवाँ हैं दरअसल वो इन्सान नजर आते हैं।
खुदगर्जी के दिलों में…

खिलते हैं झाड़ियों में गुल बेमिसाल अक्सर।
सच है कि गुदड़ियों में मिलते हैं लाल अक्सर।
दुनिया की ठोकरों में गुणवान नजर आते हैं।
खुदगर्जी के दिलों में...
कुछ लोग लखपति हैं और हैं कंगाल दिल के।
कुछ रखते हैं चार तिनके पर हैं विशाल दिल के।
मुझको तो ऐसे निर्धन धनवान नजर आते हैं।
खुदगर्जी के दिलों में...
जब भूख-प्यास है पर देती नहीं दिखाई।
आँखों की 'पथिक' ऐसे नहीं ईश तक रसाई।
अन्दर के पट खुलें तो भगवान नजर आते हैं।
खुदगर्जी के दिलों में...

88

खुशी नगर में हुई

(नामकरण संस्कार)

खुशी नगर में हुई, निर्धन को दौलत पा गई,
सुन्दर बालक मिला बड़ी हरषाई है,
बनी सपूती घर - घर बँधी बधाई है।
मुख बार - बार चूम गले से लगाती रही।
पलने में झुलाती कभी गोदी में डुलाती रही।
पकड़-पकड़ उँगली उसे आँगन में खिलाती रही।।
झुन झुना बजाकर उसे बोलना सिखाती रही।।
लिया समरकन्द रख नाम खुशी अति छाई है।
बनी सपूती घर - घर बँटी बधाई है।।1।।
उजड़े हुए गुलशन में फिर से बहार आई।
पूर्णिमा का चन्द्र निरख कली - कली मुस्कराई।।

माँ का प्यार मिला शिशु होने लगा पुष्ट भाई।
रोता हँसता रहता कभी हो जाता रुष्ट भाई।।
समरकन्द मकतब में दिया पठाई है।
बनी सपूती घर - घर बँटी बधाई है।।2।।
लाड़ चाव प्यार से आनन्द मनाने लगा।
आठ साल बीते कुँवर पाठशाला जाने लगा।
खेल-कूद पढ़ने में सबसे फस्ट आने लगा।
बेगम को आयतें कुरान की सुनाने लगा।
जुग - जुग जीओ कुँवर को रही सुनाई है।
बनी सपूती घर - घर बँटी बधाई है।।3।।
एक दिन बेगम समरकन्द को सुनाने लगी।
मुख चूम - चूम बातें पुरानी बतलाने लगी।।
शहजादे को किस्सा सारा बूंदी का समझाने लगी।
जिसे सुन-सुनकर तबियत श्याम की घबराने लगी।।
बात 'स्वरूपानन्द' न छिपी छिपाई है।
बनी सपूती घर - घर बँटी बधाई है।।4।।

89

खुल गई, खुल गई रे

खुल गई, खुल गई रे पोपों की सारी पोल।
ऋषिवर तेरे आने से।।
पीर और पैगम्बर सारे भागे छोड़ अखाड़े हैं।
रच सत्यार्थ प्रकाश ऋषि ने सबके पैर उखाड़े हैं।।
एजी ढोंगी पाखण्डी हुए हैं डाँवाडोल।1।
वेद शास्त्र को छोड़ गीत जो गाने लगे पुराणों।
ऋषियों के वंशज बन बैठे, चेला रंडी भांड़ों के।।
एजी उनकी होती है अब चारों ओर मखोल।2।

नाम धर्म का लेकर भारी पाप कमाए जाते थे।
जड़ देवों पर भैंसे, बकरों की बलि खूब चढ़ाते थे।।
एजी स्याने भक्तों के भी फूटे हैं ढप-ढोल।3।
दयानन्द की दया हुई अब भूले पथ को जान गये।
तर्कों और प्रमाणों से सब बात हमारी मान गये।।
एजी अब तो गाते हैं 'नरदेव' वेद के बोल।।4।।

90

खुशी आने से पहले

खुशी आने से पहले जाने को तैयार रहती है।
गमी आकर सदा इन्सान को गमखार रहती है।
खुशी दहलीज को ही छू के वापस लौट जाती है।
गमी आठों पहर बन करके पहरेदार रहती है।। खुशी०
खुशी को ढूँढने जब आदमी उस पार जाता है।
तो किस्मत कहती है जाओ खुशी उस पार रहती है।। खुशी०
खुशी है जीत पर यह जीत जो जीती नहीं जाती।
गमी है हार यह हरदम गले का हार रहती है।।
खुशी बदतर है 'नत्थासिंह' भुला देती है ईश्वर को।
गमी बेहतर है जिस याद में वो सरकार रहती है।। खुशी०

91

गर भला किसी का

गर भला किसी का कर न सको तो बुरा किसी का मत करना।
अमृत का घूँट पिला न सको तो जहर पिलाते भी डरना।।
अच्छा है कि तुम अपने धन से नाशाद दिलों को शाद करो।
जिसके ना आँसू पोंछ सको, उस आँख में आँसू मत भरना।।

खामोश रहो तो बेहतर है, गर बोलो तो मीठा बोलो।
मीठा भी अगर न बोल सको, तो जहर की बारिश मत करना।।
देवता अगर नहीं बन सकते अच्छे इन्सान ही बन जाओ।
यदि सन्मार्ग अपना न सको तो पापों में पग मत धरना।।
अच्छा है किसी उजड़े घर को, आबाद करो इमदाद करो।
आबाद नहीं कर सकते तो बरबाद कभी भी मत करना।।
हमदर्दी का मरहम रख करके घायल के घाव को ठीक करो।।
जख्मों पर छिड़ककर खारा नमक सुख-चैन किसी का मत हरना।।
नन्हा-सा चिराग किसी कुटिया में जलता है तो उसको जलने दो।
महलों की हवा खा करके कभी कुटिया में अँधेरा मत करना।।
जगती में 'प्रकाश' है धन्य वही नर जो गिरतों को संभालते हैं।
तज के पर निन्दा जो जीवन को सदाचार के सांचे में ढालते हैं।।
लगती मुख कालिमा है उनके शुभ कार्य में विघ्न जो डालते हैं।
उनके कर ही सनते पहले कि जो ओरों पे कीचड़ उछालते हैं।

92

गर देश में बढ़ती रहीं

गर देश मे बढ़ती रहीं यों ही नादानियाँ।
किस काम आयेंगी फिर ये जवानियाँ।
किस काम आयेंगी क़हो···
आलस में पड़े सो रहे तुमको खबर नहीं।
घर लूटने वालों को फिर किसी का डर नहीं।
दिन-रात बहुत हो रहीं भारत की हानियाँ।
किस काम आयेंगी कहो···
सोचो जरा दिमाग से हिम्मत से काम लो।
गिरती है दशा देश की बढ़कर के थाम लो।
मिटती हैं बुजुर्गों के पाँवों की निशानियाँ।
किस काम आयेंगी कहो···

योद्धाओं और शहीदों का इतिहास बिन पढ़े।
जिन्दों पे कभी जिन्दगी का रंग न चढ़े।
पढ़ते रहे नावल तथा किस्से-कहानियाँ।
किस काम आयेंगी कहो…
मौका सुनहरी हाथ से गर यों ही खो दिया।
यौवन के इस जहाज को खुद ही डुबो दिया।
होंगी न 'पथिक' वक्त की फिर मेहरबानियाँ।
किस काम आयेंगी कहो…

93

गति जीव आत्मा की

गति जीव आत्मा की कोई समझाए।
कहाँ से यह आए कहाँ लौट जाए।
कहाँ लौट जाए। गति जीव…
कभी इसका आना-जाना किसी ने न जाना।
कहाँ का निवासी है यह कहाँ है ठिकाना।
किसी को भी कोई अपना पता न बताए।
कहाँ लौट जाए। गति जीव…
मिली एक नगरी इसको अयोध्या निराली।
जो है आठ चक्रों और नौ द्वारों वाली।
सिर्फ चार दिन ही इसका बादशाह कहाए।
कहाँ लौट जाए। गति जीव…
प्रभु ने हज़ारों तोहफे बनाकर दिए हैं।
कुदरती नज़ारे जग में इसी के लिए हैं।
इन्हें छोड़ क्यों जाता है समझ में न आए।
कहाँ लौट जाए। गति जीव…

'पथिक' यह प्रभु की माया प्रभु जानता है।
प्रभु के सिवा न कोई पहचानता है।
जो महान् शक्ति सारे विश्व को चलाए।
कहाँ लौट जाए। गति जीव···

94

गाए जा, गाए जा

गाए जा, गाए जा भगवान की महिमा गाए जा।
शाम-सवेरे इस मन-मंदिर में झाड़ू रोज लगाए जा।
तरह - तरह के खेल हैं इसमें दुनिया एक तमाशा है।
कहीं खुशी और कहीं गमी है आशा कहीं निराशा है।
चाहे यह हँसाए तुझे चाहे यह रुलाए बस अपना फर्ज निभाए जा।
गाए जा, गाए जा भगवान की···
चिन्ता और चिता इस जग में एक समान कहलाती हैं।
इक जिन्दा को इक मुर्दे को दोनों सदा जलाती हैं।
दुःख जो दिखाये वो ही दुखड़े मिटाये तू चिन्ता दूर हटाए जा।
गाए जा, गाए जा भगवान की···
कौन हमेशा रहा जगत में किसका यहाँ ठिकाना है।
बाँध ले अपना बिस्तर बाबा यह तो देश बेगाना है।
दुनिया सराय कोई आए कोई जाए।
यह सबको 'पथिक' समझाए जा।
गाए जा, गाए जा भगवान की महिमा गाए जा।

95

गाया कर नित्य गाया कर

गाया कर नित्य गाया कर तू गीत प्रभु के गाया कर।
प्रातः सायं प्रेमपूर्वक ओ३म् ही ओ३म् ध्याया कर।
गीतों में भर प्यार हृदय के वाणी से बिखराता चल,
जीवन की इस रागिनी से तू गीतों को गूँजाता चल,
कोई सुने न सुने तुम्हारी अपने को ही सुनाया कर।
गीतों की पावन धारा में अन्तर-मल को मिटा के देख,
राग,द्वेष, छल,कपट से प्यारे अपना आप बचा के देख,
गीतों से फिर प्रेम सुधा का सबको पान कराया कर।
एकाग्र करके मन अपना निज को मस्त बना लेना,
गीतों के आनन्द में ही तू मन की जोत जगा लेना,
औरों की चिन्ता न कर तू अपने को समझाया कर।

96

गोलियाँ सीने पे खा के

गोलियाँ सीने पे खा के चल दिये।
प्यास कातिल की बुझा के चल दिये।।
रक्त से वैदिक बगीचा सींचकर।
धर्म हित मरना सिखा के चल दिये।। 1।।
झुक रहीं संगीन सीना सामने।
कदम आगे को बढ़ा के चल दिये।। 2।।
गंगा तट जंगल में मंगल कर दिया।
काँगड़ी गुरुकुल बना के चल दिये।। 3।।
जामा मस्जिद पे खड़े हो एक दिन।
वेद ध्वनिसब को सुनाके चल दिये।। 4।।

पाठ समता का पढ़ाया आपने।
चक्र शुद्धि का चला के चल दिये।।5।।
भाई से भाई मिलाया था गले।
प्रेम की गंगा बहा के चल दिये।।6।।

97

गौ माता करे पुकार

गौ माता करे पुकार दुःखी मन तड़प रही।
बेकस बेबस लाचार दुःखी मन तड़प रही।
सबको अमृत दूध पिलावे।
सबकी जीवन जोत जगावे।
करे सभी से प्यार दुःखी मन तड़प रही। गौ माता करे...
हिन्दु मुस्लिम सिख ईसाई।
गौ माता सब को सुखदाई।
झेले कष्ट अपार दुःखी मन तड़प रही। गौ माता करे...
राम कृष्ण के भक्तो जागो।
अपनी लापरवाही त्यागो।
मिटे ये अत्याचार दुःखी मन तड़प रही। गौ माता करे...
गुरु गोबिन्द सिंह के सरदारो।
राणा वीर शिवा के प्यारो।
गरज उठो इक बार दुःखी मन तड़प रही। गौ माता करे...
दयानन्द स्वामी के चेलो।
गौ माता हित संकट झेलो।
करो न सोच-विचार दुःखी मन तड़प रही। गौ माता करे...
बूचड़खाने बन्द करावो।
गौ माता के प्राण बचावो।
रहो 'पथिक' तैयार दुःखी मन तड़प रही। गौ माता करे...

98
गौ–रक्षा हो, गौ–रक्षा हो

गौ-रक्षा हो, गौ-रक्षा हो !
भारत में हे भारतवालो !
गौ-रक्षा हो, गौ-रक्षा हो।
हे आर्य जाति के प्रिय लालो !
गौ-रक्षा हो, गौ-रक्षा हो।।
नृप दिलीप गौ के सेवक थे
श्रीकृष्ण गऊ के रक्षक थे।
तुम भी गौ के संकट टालो,
गौ-रक्षा हो, गौ-रक्षा हो।।
परवशता सम है ताप नहीं
गौ-वध सम जग में पाप नहीं।
यह कुकर्म बन्द करा डालो
गौ-रक्षा हो, गौ-रक्षा हो।।
सेवा 'प्रकाश' हो गौओं की
फिर शुद्ध मिले घी, दूध, दही।
कुत्तों के झुण्ड नहीं पालो
गौ-रक्षा हो, गौ-रक्षा हो।।

99
गेह की शोभा

गेह की शोभा है दीप से, देह की
नैन सें, राजा की राज से शोभा।।
कूप की नीर से, धेनु की क्षीर से
मानव की शुभ काज से शोभा।।

रैन की चन्द्र से, मेघ की बिन्जु से
जैसे है नारी की लाज से शोभा।
तैसे 'प्रकाश' है शहर व ग्राम की पावन आर्यसमाज से शोभा।।

100

गुरुदेव प्रतिज्ञा है मेरी

गुरुदेव प्रतिज्ञा है मेरी पूरी कर के दिखला दूँगा।
इस वैदिक धर्म की वेदी पर मैं जीवन भेंट चढ़ा दूँगा।
गुरुदेव प्रतिज्ञा है मेरी···
धन पास नहीं तन मन अपना श्री गुरुचरणों में धरता हूँ।
गुरु आज्ञा पालन करने की मैं आज प्रतिज्ञा करता हूँ।
अपना सर्वस्व लुटाकर भी अपना कर्त्तव्य निभा दूँगा।
इस वैदिक धर्म की वेदी पर···
जन हित के लिए विष के प्याले अमृत कर के मैं पी लूँगा।
उफ तक न करुँगा शोलों पर हँसते-हँसते मैं जी लूँगा।
कांटों से भरी इन राहों पे फूलों की तरह मुस्का दूँगा।
इस वैदिक धर्म की वेदी पर···
पश्चिमी सभ्यता के बढ़ते तूफानों का मुँह मोडूँगा।
मैं सागर को मथ डालूँगा पर्बत का मस्तक फोडूँगा।
वेदों की अमृतवाणी का मैं घर-घर नाद बजा दूँगा।
इस वैदिक धर्म की वेदी पर···
जब शिष्य आपका उठकर के वेदों का बिगुल बजाएगा।
इक बार जमाना ऋषियों का फिर 'पथिक' लौटकर आएगा।
भारत की पावन धरती को फिर से मैं स्वर्ग बना दूँगा।
इस वैदिक धर्म की वेदी पर···

101

चमकेंगे जब तलक यह

चमकेंगे जब तलक यह सूरज व चाँद तारे।
हम हैं ऋषि दयानन्द तब तक ऋणी तुम्हारे।
भारत की जब यह नैय्या मँझधार में पड़ी थी,
तूने ही बन के खेवट पहुँचा दिया किनारे।
चमकेंगे जब तलक...
हमको पिलाया अमृत खुद जहर पी गया तू।
तूने हमारी खातिर सब कष्ट थे सहारे।
चमकेंगे जब तलक...
कातिल को अपने स्वामी जीवन का दान दे तू।
तेरी जान के भी दुश्मन तुझे जान से थे प्यारे।
चमकेंगे जब तलक...
तू वो दिया था जिसने लाखों के दिये जलाये।
दी रोशनी 'पथिक' वो घर जगमगाये सारे।
चमकेंगे जब तलक यह सूरज व चाँद तारे।
हम हैं ऋषि दयानन्द तब तक ऋणी तुम्हारे।

102

चंचल मन नित ओ३म्

चंचल मन नित ओ३म् जपा कर,
ओ३म् जपा कर ओ३म्।
पल-पल, छिन-छिन, घड़ी-घड़ी, निशदिन,
ओ३म् जपा कर ओ३म्।।
प्रातः समय की शुभ - वेला में,
सन्ध्या की पुलकित रजनी में।

रोम - रोम से निकले तेरे,
ओ३म् जपा कर ओ३म्।।1।।

गहरा सागर टूटी नैय्या,
जीवन तरनी ओ३म् खिवैया।
पार करेंगे ओ३म्,
ओ३म् जपा कर ओ३म्।।2।।

सार तत्त्व की खोज किये जा,
नाम सरस रस रोज पिये जा।
पार करेंगे ओ३म्,
ओ३म् जपा कर ओ३म्।।3।।

103

चली जा रही है

चली जा रही है यह जीवन की रेल।
समझकर खिलौना इसे यों ना खेल।।
कुशल कारीगर ने है इसको बनाया।
बड़ी अकलमन्दी से इसको चलाया।।
पड़े इसके इंजन में कर्मों का तेल। चली जा रही है...
किसी को चढ़ावे किसी को उतारे।
घड़ी दो घड़ी के मुसाफिर हैं सारे।।
यहीं पर जुदाई यहीं पर हो मेल। चली जा रही है...
जरा-सी खराबी अगर इसमें आवे।
कदम एक भी यह सरकने न पावे।।
सदा के लिए एक पल में हो फेल। चली जा रही है...
न अपनी खुशी से यहाँ लोग आये।
मगर सबने आकर यहाँ दिन बताये।।
कोई समझे मन्दिर कोई समझे जेल। चली जा रही है...

रहे कुछ सफर भर में रोते-चिल्लाते।
मगर कुछ महापुरुष हँसते-हँसाते।।
गये हर मुसीबत को हिम्मत से झेल। चली जा रही है...
'पथिक' रेलगाड़ी पै जो भी चढ़ा है।
कहीं न कहीं पर उतरना पड़ा है।।
समय ने है डाली सभी को नकेल। चली जा रही है...

104

चाँद पे जाने वालों में

चाँद पे जाने वालों में विज्ञान तो है पर ज्ञान नहीं।
मौत का ढंग तो जानते हैं पर जीवन की पहचान नहीं।
तुम्हीं कहो कि चाँद के ऊपर पहुँच भी गये तो क्या होगा।
आसमान पर कब्जा करने पर फिर भी झगड़ा होगा।
इन खुदगर्जी खुदाओं के हाथों संसार तबाह होगा।
है आसान मिटाना मगर बनाना कोई आसान नहीं।
मौत का ढंग तो जानते हैं...
जितने बने हैं गोलियाँ-गोले यह फूलों के हार नहीं।
तोपों और बन्दूकों से होते आपस में प्यार नहीं।
एक-दूसरे के कातिल कपटी बन सकते यार नहीं।
अमन भंग करने वाले राक्षस हैं इन्सान नहीं।
मौत का ढंग तो जानते हैं...
सदियों से प्यासी दुनिया को प्यार का अमृत पीने दो।
ऋषियों का सन्देश सुनो खुद जीओ औरों को जीने दो।
नफरत से जो चाक हैं सीने उन सीनों को सीने दो।
इनसानों का खून बहाना मानवता की शान नहीं।
मौत का ढंग तो जानते हैं...

105

चाँद–सूर्य कौन है चमका रहा

चाँद - सूर्य कौन है चमका रहा।
फूलों में बैठा हुआ मुसका रहा।
किस तरफ हैं नदियाँ-नाले जा रहे।
कौन अपनी ओर इनको बुला रहा।
ऊँचे पर्वत ओढ़े हैं चादर सफेद।
कौन मीठे झरनों में है गा रहा।
सर्दी-गर्मी, रात - दिन कैसे बने।
विश्व में यह चक्कर कौन चला रहा।
प्रभु भक्तों के हृदय-मन्दिर में देख।
प्रेम की ज्योति है कौन जला रहा।
एक ही उत्तर है इन सब प्रश्नों का।
जर्रे - जर्रे में है ओइम् समा रहा।

106

चाँदी और नोटों के

चाँदी और नोटों के बदले, विद्वान खरीदे जाते हैं।
धनवान हुकूमत करते हैं, गुणवान खरीदे जाते हैं।
है निराकार वह परमेश्वर, पर जयपुर के बाजारों में
मिट्टी, पत्थर, संगमरमर के भगवान खरीदे जाते हैं।
कुछ धर्म-करम का पता नहीं निर्धन मजदूर किसानों को
रोटी कपड़े के नारों से, नादान खरीदे जाते हैं।
हरिद्वार के पण्डों को देखो जाकर के हर की पौड़ी पर
आपस में करें इशारे और यजमान खरीदे जाते हैं।
'नन्दलाल' गऊ वध होता है गऊ माँस के बदले बाहर से
पौडर, सुर्खी और सिनेमा के सामान खरीदे जाते हैं।

107
चोर और ज्वारी

चोर और ज्वारी, शराबी, व्यभिचारी,
चरित्रहीन नारी के साथ न रहिये।
यार दगाबाज से, नारी बेलिहाज से,
साधु नशेबाज से, बात नहीं करिये।
गुण्डों की जमात में, ओलों की बरसात में,
झगड़े की बारात में, पैर न धरिये।
कोढ़ी की काया का, बादल की छाया का
सपने की माया का, विश्वास न करिये।।

108
छोटी-सी मेरी

छोटी-सी मेरी नैय्या को ईश्वर पार लगा दो तुम।
बिगड़ी मेरी तकदीर को एक बार बना दो तुम।।
तुमको दयालु कहते हैं हम पर भी दया करो।
बार-बार विनय करूँ अज्ञानता मिटा दो तुम।।
छोटी-सी मेरी नैय्या···
साथी नहीं कोई मेरा दर्द किसे सुनाऊँ मैं।
दर्द तुम्हें सुना रहे दर्द हमारा मिटा दो तुम।।
छोटी-सी मेरी नैय्या···
कैसे लगेगी पार यह नैय्या मेरी तेरे बिना।
शरण में अपनी लीजिये भवसागर पार लगा दो तुम।।
छोटी-सी मेरी नैय्या···

109

जड़-पूजा करनी छुड़वाई

जड़-पूजा करनी छुड़वाई।
एक ईश की भक्ति सिखाई।।
असत्, अनीति, कुरीति मिटाई।
उत्तम वैदिक रीति चलाई।।
कर के धर्म प्रचार।
तुझ पर जाऊँ बलिहार।।
जहाँ कहीं भी जाऊँगा मैं,
तेरे ही गुण गाऊँगा मैं।।
तेरे नियम निभाऊँगा मैं,
तुम पर भेंट चढ़ाऊँगा मैं।
तन, मन, धन, घर - द्वार।
तुम पर जाऊँ बलिहार।।
प्रान्त-प्रान्त में, नगर-नगर में,
डगर-डगर में अरु घर-घर में,
हो 'प्रकाश' तेरा जग-भर में,
बोले दुनिया ऊँचे स्वर में,
तेरी जय - जयकार।
तुम पर जाऊँ बलिहार।।

110

जगत् साकार बनाया है

जगत् साकार बनाया है निराकार प्रभु।
क्या अजब खेल रचाया है निराकार प्रभु।।

लेता अवतार है—भगवान कई कहते हैं,
साफ वेदों ने बताया है निराकार प्रभु।
कर्म करता है बिना हाथ, बिना पाओं के,
'देखो रामायण में आया है निराकार प्रभु।
चाँद-सूर्य व सितारों में है और जल थल में,
तेज बह्माण्ड में छाया है निराकार प्रभु।
देखना चाहे उसे बाहर की आँख से जो,
उसको दृष्टि में न आया है निराकार प्रभु।
है कहा स्पष्ट श्रुति ने कि 'न तस्य प्रतिमास्ति'।
किसी बन्धन में न आया है निराकार प्रभु।।
ज्ञान चक्षु ही उसे 'हँस' देख सकते हैं।
मन के मन्दिर में समाया है निराकार प्रभु।।

111

जगत् में उनकी मिटी है चिन्ता

जगत् में उनकी मिटी है चिन्ता जो तेरे चरणों में आ गिरे हैं।
वही हमेशा हरे-भरे हैं जो तेरे चरणों···
न पाया राजा-वजीर बनकर, न पाया तुझको फकीर बनकर,
उसी को तेरे हुए हैं दर्शन जो तेरे चरणों में आ गिरे हैं।
जगत् में उनकी मिटी है चिन्ता···
न पाया तुझको किसी ने छल से, न पाया तुझको किसी ने बल से,
वही परम पद को पा गए हैं जो तेरे चरणों···
किसी ने जग में करी बुराई, किसी ने जग में करी भलाई,
वही सुमार्ग पर चल पड़े हैं जो तेरे चरणों···
जगत् में उनकी मिटी···

112
जब तेरी डोली निकाली जाएगी

जब तेरी डोली निकाली जाएगी।
बिन मुहूर्त ही उठा ली जाएगी।। जब०
सब महल और माढ़ियाँ यहाँ रह जाएँगी।
तन से जब यह जो निकाली जाएगी।। 1।। जब०
वक्त है कुछ कूच का सामान कर।
फिर तबीयत कब संभाली जाएगी।। 2।। जब०
जर्रे - जर्रे में नजर आएगा वह।
आँख जब उससे मिला ली जाएगी।। 3।। जब०

113
जब तक राग-द्वेषों की

जब तक राग-द्वेषों की जलन मन से मिटे नहीं,
लोभ, मोह, काम की रमी रहे वासना।
हर घड़ी लगा रहे मन पाप चिन्तन में,
इन्द्रियों की दौड़ चहुँ ओर, मिटी प्यास ना।
सत्य आचरण नहीं, धर्म-कर्म जाने नहीं,
बन नहीं पाई हो सात्त्विकी भावना।
शुद्ध आचार, आहार, व्यवहार बना नहीं,
उससे बनेगी नहीं ईश की उपासना।

114

जग में जीना–मरना सीखो

जग में जीना-मरना सीखो, स्वामी श्रद्धानन्द से।
जो कहना वह करना सीखो, स्वामी श्रद्धानन्द से।।
गुरुकुल की उत्तम शिक्षा फिर चालू करने के लिए,
धवल धाम, धंन, सुख के साधन, सभी निछावर कर दिये।
सब कुछ अर्पण करना सीखो, स्वामी श्रद्धानन्द से।।1।।
रुपया तीस सहस्त्र न जब तक गुरुकुल के हित लाऊँगा,
प्रण है मेरा तब तक घर को नहीं लौटकर आऊँगा।
प्रण से कभी न टरना सीखो, स्वामी श्रद्धानन्द से।।2।।
कभी कुसंगति में पड़ स्वामी दुर्व्यसनों में थे सने,
दयानन्द ऋषि की शिक्षा से पूर्ण महात्मा थे बने।
यूँ सब भाँति सँवरना सीखो, स्वामी श्रदानन्द से।।3।।
सीना खोल ब्रिटिश की संगीनों के आगे डट गए,
देख आत्म-बल स्वामी का लज्जित हो सैनिक हट गए।
सिंह समान विचरना सीखो, स्वामी श्रद्धानन्द से।।4।।
गांधी जी को जनता हित धन की आवश्यकता पड़ी,
भेजा अफ्रीका धन शिष्यों सँग कर मजदूरी कड़ी।
सेवाव्रत आचरना सीखो, स्वामी श्रद्धानन्द से।।5।।
कर लाखों को शुद्ध, देश के सच्चे भक्त बना लिये,
कर के दलितोद्धार-कार्य प्रिय दलित बन्धु अपना लिये।
दुखियों के दुःख हरना सीखो, स्वामी श्रद्धानन्द से।।6।।
धारण करें सचाई को, सब हिन्दू मुस्लिम एक हों,
भारत मातृभूमि के प्रति सब वफादार हों, नेक हों।
प्रेम-भावना भरना सीखो, स्वामी श्रद्धानन्द से।।7।।
तीन गोलियाँ हत्यारे की वे सीने पर खा गए,
तीन ओ३म् अक्षर वे 'प्रकाश' मानो दिल में दिखला गए।
भव-सागर से तरना सीखो, स्वामी श्रद्धानन्द से।।8।।

115
जगत् में चिन्ता मिटी है

जगत् में चिन्ता मिटी है उनकी शरण में तेरी जो आ पड़े हैं।
वही हमेशा हरे-भरे हैं, शरण में तेरी जो आ पड़े हैं।।
न पाया तुझको अमीर बनकर, न पाया तुझको फकीर बनकर।
वही परम पद को पा गए हैं, शरण में तेरी जो आ पड़े हैं।।1।।
न पाया तुझको किसी ने बल से, न पाया तुझको किसी ने छल से।
उन्हीं को दर्शन हुए हैं 'दर्शन' शरण में तेरी जो आ पड़े हैं।।2।।
जो तेरे दरबार का बना भिखारी, लगन है जिसको एक बस तुम्हारी।
उन्हीं को मिलती सफलता भारी, शरण में तेरी जो आ पड़े हैं।।3।।
हजारों मज़हब हजारों फिरेक—बना के आपस में लड़ते-झगड़ते।
मगर वही शांतचित्त रहते हैं शरण में तेरी जो पड़े हैं।।4।।
न मन्दिरों में तू नजर आया, न गिरजा, मस्जिद में तुझको पाया।
उन्हीं को दर्शन हुए है तेरे शरण में तेरी जो आ पड़े हैं।।5।।

116
जग में वेदों की

जग में वेदों की बँसुरिया बजाई ऋषि ने ।
बजाई ऋषि ने, बजाई ऋषि ने, जग में...
भूले हुए मार्ग अपने को, भारत के नर-नारी।
छाई हुई अविद्या की थी, जग में घोर अंधियारी।।
सबको वैदिक धर्म डगरिया, बताई ऋषि ने।।1।।
विद्यालय, गुरुकुल खुलवाये, जारी करी पढ़ाई।
जहाँ अविद्या का डेरा वहाँ ज्ञान की गंगा बहाई।
बन के अमृत की बदरिया बरसाई ऋषि ने।।2।।

भैंसा, बकरा काट-काट, देवी पर खून बहाते।
यज्ञों में पशुबलि देते वे, कैसा पाप कमाते।।
सिर से पापों की गठरियाँ गिराईं ऋषि ने।।3।।
विधवा, दीन, अनाथों का ऋषि बनकर रहा सहारा।
पोप और पाखंडी डरकर कर गये साफ किनारा।।
'राघव' डूबती नवरिया बचाई ऋषि ने।।4।।

117

जग को जगाने वाला

जग को जगाने वाला आर्यसमाज है।
जग की पुकार है वह युग की आवाज है।।
ईश की उपासना का रास्ता दिखा दिया।
जड़ की आराधना के पाप से बचा लिया।।
ढोंग-ढाँग जिसके भय से डोल रहा आज है।
ठाकुरों की ठोकरों ने कर दिया बेहाल था।
दम्भियों का ओर-छोर फैला हुआ जाल था।।
जिसने दीन, देश, जाति की बचाई लाज है।
नारियाँ भी वेद का पुनीत गान कर रहीं।
रूढ़ियाँ, कुरीतियाँ हैं अपने आप मर रहीं।।
वेद के प्रकाश का जो कर रहा सुकाज है।
कौन है जो आर्यों की भावना जगा गया।
कौन मौत से हमें जो जूझना सिखा गया।।
श्रद्धानन्द, लेखराम, प्यारा हंसराज है।
देश हित में वार दी अनेक ही जवानियाँ।
इसने रक्त से लिखी हैं देश की कहानियाँ।।
लाजपत लुटा के आज पा लिया स्वराज है।

कौन भोगवाद से जो विश्व को बचायेगा।
पाप, पुण्य क्या है कौन आज यह सुझायेगा।।
मानवीय रोग का तो एक ही इलाज है।
जग को जगाने वाला आर्यसमाज है।।

118

जग में ऋषी दयानन्द आया

जग में ऋषी दयानन्द आया,
यह सोया देश जगाया।।
राम, कृष्ण के भक्त रात-दिन, यवन इसाई होते थे।
शुद्धि करना पाप समझते, गैरों के घर रोते थे।।
होते थे बरबाद पुनः से शुद्धि चक्र चलाया।1। यह…
जिससे हो निर्माण मनुज का, उसको नीच बताते थे।
नारी को न पढ़ाओ भाई, ऐसे लेख दिखाते थे।
नारी-शिक्षा का ऋषिवर ने आकर पाठ पढ़ाया।2। यह…
गंगा नहाओ पाप कटेंगे, ढोंगी जन बहकाते थे।
इसीलिए तो पापी मानव, गंगा नहाने जाते थे।।
कर्मों का फल पड़े भोगना, ऋषि ने अटल बताया।3। यह…
विधवा, बाल, अनाथ भटकते, मिलता नहीं सहारा था।
गऊ माता की गर्दन ऊपर चलता रोज दुधारा था।।
टाला था दुख दलितों का भी बेड़ा पार लगाया।4। यह…
सारे भू-मण्डल में अब तक ऐसा कहीं न आया है।
दयानन्द-सा वेद-भाष्य तो कोई ना कर पाया है।
ब्रह्मचर्य का व्रत लेकर जीवन-पर्यन्त निभाया।5। यह…
विद्या-बल के द्वारा सारे भू-मण्डल को हिला गया।
दुनिया-भर को ऋषी दयानंद वैदिक अमृत पिला गया।।
चला गया 'नरदेव' देवता, जग-भर ने यश गाया।6।
यह सोया देश जगाया।।

119

जन्म से नहीं मनुष्य

जन्म से नहीं मनुष्य कर्म से महान है।
अन्यथा तो पशु - पक्षियों के समान है।
जन्म से नहीं मनुष्य कर्म से...
नींद, खान-पान, विषय-वासना की दौड़ में,
आदमी व जानवर की एक-सी उड़ान है।
जन्म से नहीं मनुष्य कर्म से...
धर्म, कर्म, दान, पुण्य, सभ्यता, उदारता,
इन गुणों से आदमी की जान व पहचान है।
जन्म से नहीं मनुष्य कर्म से...
बेमिसाल बुद्धि रूप रत्न प्रभु ने दिया,
जिसकी चमक सूझ-बूझ, तर्क और ज्ञान है।
जन्म से नहीं मनुष्य कर्म से...
एकमात्र यह मनुष्य जन्म ही विशेष है,
जिसमें मिले हाथ, हँसी, भाषा का वरदान है।
जन्म से नहीं मनुष्य कर्म से...
हैं अनन्त योनियाँ विशाल विश्वलोक में,
सर्वश्रेष्ठ योनि इस मनुष्य को प्रदान है।
जन्म से नहीं मनुष्य कर्म से...
कर भविष्य के लिए प्रबन्ध तू निवास का,
'पथिक' यह मकान तो सराय का मकान है।
जन्म से नहीं मनुष्य कर्म से...

120

जन्मदिन आज फिर आया

(जन्मदिन पर)

जन्मदिन आज शुभ आया बधाई हो बधाई हो।
खुशी का रंग है छाया बधाई हो बधाई हो।
हवन से है सुगन्धित हो गया वातावरण सारा।
ऋचाएँ वेद की बोली गईं, गूँजा गगन सारा।
यह दिन ईश्वर ने दिखलाया बधाई हो बधाई हो···
कहीं बैठे पड़ोसी हैं कहीं बैठे हैं सम्बन्धी।
कहीं पर कहकहे उठते कहीं उठती है सुगन्धी।
सभी ने प्रेम से गाया बधाई हो बधाई हो···
जिधर देखो उधर मिलते नजारे ही नजारे हैं।
दिलों में फूट निकले आज खुशियों के फव्वारे हैं।
बाग परिवार लहराया बधाई हो बधाई हो···
जिए सौ साल तू राजा रहे खुशहाल जीवन में।
बहारें झूम के आएँ तुम्हारे दिल के आँगन में।
रहे मन खूब हर्षाया बधाई हो बधाई हो···
करे विद्या ग्रहण इतनी कि जग में नाम हो रोशन।
जहाँ में चाँद सूरज की तरह हर काम हो रोशन।
बुजुर्गों का रहे साया बधाई हो बधाई हो···
हृदय अन्दर सच्चाई हो मधुर वाणी सदा बोले।
धर्म की राह पर चलते हुए तिल-भर नहीं डोले।
'पथिक' नीरोग हो काया बधाई हो बधाई हो।

121

जय-जय पिता

जय-जय पिता परम आनन्द - दाता।
जगदादि कारण मुक्ति - प्रदाता।।
अनन्त और अनादि विशेषण हैं तेरे।
सृष्टि का स्रष्टा तू धर्ता संहर्ता।।1।।
सूक्ष्म से भी सूक्ष्म तू है स्थूल इतना।
कि जिसमें यह ब्रह्माण्ड सारा समाता।।2।।
मैं लालित व पालित हूँ पितृस्नेह का।
यह प्राकृत सम्बन्ध है तुझसे ताता।।3।।
करो शुद्ध निर्मल मेरी आत्मा को।
करूँ मैं विनय नित्य सायं व प्रातः।।4।।
मिटाओ मेरे भय आवागमन के।
फिरूँ न जन्म पाता और बिलबिलाता।।5।।
बिना तेरे है कौन दीनन का बन्धु।
कि जिसको मैं अपनी अवस्था सुनाता।।6।।
'अमी' रस पिलाओ कृपा करके मुझको।
रहूँ सर्वदा तेरी कीर्ति को गाता।।7।।

122

जयति ओ३म् ध्वज

टेक– जयति ओ३म् ध्वज व्योम-विहारी
विश्व-प्रेम-प्रतिमा अति प्यारी।।
सत्य-सुधा बरसाने वाला, स्नेह-लता सरसाने वाला।
सौम्य-सुमन विकसाने वाला।
विश्वविमोहक भव-भयहारी।। जयति०।।1।।

इसके नीचे बढ़ें अभय मन, सत्पथ पर सब धर्म-धुरी-जन।
वैदिक रवि का हो शुभ उदयन।
आलोकित होवें दिशि सारी।। जयति०।। 2।।
इससे सारे क्लेश शमन हों, दुर्मति-दानव द्वेष दमन हों।
अति उज्ज्वल अति पावन मन हो।
प्रेम - तरंग बहे सुखकारी।। जयति०।। 3।।
इसी ध्वजा के नीचे आकर, ऊँच - नीच का भेद भुलाकर।
मिले विश्व मुद मंगल गाकर, पंथाई पाखण्ड विसारी।।
जयति०।। 4।।
इस ध्वज को हम लेकर कर में, भरें वेद-ज्ञान घर-घर में।
सुभग शान्ति फैले घर-घर में, मिटे अविद्या की अंधियारी।।
जयति०।। 5।।
विश्व-प्रेम का पाठ पढ़ावें, सत्य, अहिंसा को अपनावें।
जग में जीवन-ज्योति जगावें, त्यागपूर्ण हो वृत्ति हमारी।।
जयति०।। 6।।
आर्य-जाति का सुयश अक्षय हो, आर्यध्वजा की अविचल जय हो।
आर्य जनों का ध्रुव निश्चय हो, आर्य बनायें वसुधा सारी।।
जयति०।। 7।।

123

जपना जी जपना

जपना जी जपना प्रभु दा नाम हर दम जपना जी।
सारी खलकत दा जो खालिक।
जो है कुल दुनिया दा मालिक।
रचना जिदी तमाम हरदम जपना जी। जपना जी…
प्रभु नाम दी चढ़े खुमारी।
पी के वेखो सब इक वारी।
बड़ा अनोखा जाम हरदम जपना जी। जपना जी…

सन्तां दा उपदेश वी एहो।
वेदां दा सन्देश वी एहो।
ऋषियाँ दा पैगाम हरदम जपना जी। जपना जी···
जो नहीं उसदा नाम ध्यांदे।
दर - दर रुलदे ठेडे खांदे।
मिलदा नहीं आराम हरदम जपना जी। जपना जी···
प्रभु नाम दी ढाल बना लौ।
इस नाल अपना आप बचा लौ।
जीवन है संग्राम हर दम जपना जी। जपना जी···
ऋषि मुनि योगी सब कैंहदे।
टुरदे फिरदे उठदे बैंहदे।
'पथिक' सुबह ते शाम हर दम जपना जी। जपना जी।···

124

जन्म–दिवस श्रीराम का

जन्म-दिवस श्रीराम का, ऋतु बसन्त बहार।
शुक्ल पक्ष नौमी तिथी, महामानव तनधार।।
सुविख्यात है जगत् में, पुरी अयोध्या धाम।
नृप दशरथ घर प्रकटे, पुरुषोत्तम श्रीराम।।
उदय हुआ रघुकुल रवि, किया ज्ञान प्रकाश।
भूतल-तम का कर दिया, श्रीराम ने नाश।।
राजमहल में हो रहे, सुन्दर मंगलाचार।
वेद-ध्वनि आने लगी, हर्षित सब नर-नार।।
दृढ़वती, जितेन्द्रिय, आर्यवीर, विद्वान।
सत्यवादी महा-मनुज, अति उत्तम संतान।।
वैदिक मर्यादामय, जीवन-भर पर्यन्त।
शूरवीर क्षत्रिय प्रबल, किया दुष्टों का अन्त।।

रघुकुल राघव राम को, जाने देश तमाम।
लाखों वर्षों बाद भी अमर राम का नाम।।
पितु वाक्य पालन किया, नहीं उल्लंघन कौन।
ईश भक्त रघुकुल तिलक, इच्छाकु वंश कुलीन।।
वेद-पथिक, युग-परिवर्तक, दृढ़प्रतिज्ञ श्रीराम।
दशरथ नन्दन राम को, कोटि-कोटि प्रणाम।।
जन्मोत्सव यह आपका, मना रहे हरषायः।
सुपथ प्रेरिक राम तुम, प्रकटो फिर से आज।।

125

जपो प्यारेयो सच्चा नाम

जपो प्यारेयो सच्चा नाम ओंकार दा।
ऋषि मुनियाँ दा ओ३म् प्यारा।
कुल दुनिया दा पालनहारा।
अपनेयाँ प्यारेयाँ नूँ एहो तारदा सच्चा नाम ओंकार दा—
नाम प्रभु दा जो कोई ध्यावे।
जीवन अपना सफल बनावे।
दुनिया च दुःखी हुन्दा जो विसारदा सच्चा नाम ओंकार दा—
भगत जनां दे कष्ट मिटावे।
दुःख बिसरा के सुख बरसावे।
गमां विच तपदेयाँ दिला नूँ ठारदा सच्चा नाम ओंकार दा—
पल विच होवे दूर हनेरा।
रौशन कर दए चार चुफेरा।
सुखां दियां दौलतां सिरां तों वारदा सच्चा नाम ओंकार दा—
अमृत रस दा प्याला पीवे।
बेफिकरी दे नाल ओह जीवे।
दिल रूपी शीशे विच जेहड़ा धारदा सच्चा नाम ओंकार दा—

अपने-अपने भाग जगा लौ।
उस ईश्वर दे सब गुण गा लौ।
'पथिक' जो दाता सारे संसार दा सच्चा नाम ओंकार दा–

126

जगदीश शान्त हृदय को मेरे बनाइए

जगदीश शान्त हृदय को मेरे बनाइए।
प्रकाश अपनी कृपा का मुझको दिखाइए।।

होकर के साक्षात् मेरे मन में आइए।
और आ के यहाँ से कभी बाहर न जाइए।।

अन्तःकरण को ज्ञान से भरपूर कीजिए।
प्रकाशयुक्त बुद्धि को मेरी बनाइए।।

हो लीन आपमें रहे भागा फिरे न मन।
इसके लिए विवेक का पहरा बिठाइए।।

भूला फिरूँ हूँ खाता हूँ पग-पग पै ठोकरें।
कृपा से मुझको रास्ता सीधा दिखाइए।।

अनुकूल जिसके अपने चलन को बनाऊँ मैं।
उपदेश वैदिक धर्म का मुझको सुनाइए।।

भिक्षा मैं माँगता हूँ विनयपूर्वक यही।
भक्ति का अपनी दान अब मुझको दिलाइए।।

बस आपका भरोसा है, हूँ आपकी शरण।
दुःखों से मरने-जीने के मुझको बचाइए।।

अभिलाषा मेरे मन की है 'केवल' इसी कदर।
चरणों में अपने ध्यान को मेरे लगाइए।।

127

जय ऋषिराज ज्ञान के सागर

(ऋषिराज चालीसा)

जय ऋषिराज ज्ञान के सागर, जय हो विश्व वंद्य करुणाकर।
गुर्जर प्रांत नगर टंकारा, उसमें जन्म लिया जग तारा।।
पुत्र यशोदा बाई जी का, आत्मज कर्षण जी का नीका।
बांधव जन ने नाम धराया, सुंदर नाम मूल जी आया।।
सीस मुड़ाय गेरुआ धारा, दयानंद बन जगत् सुधारा।
वज्रांगी अति विक्रम धारी, सत्यव्रती निर्भय हितकारी।।
कनक समान चमत्कृत देहा, गठित शरीर मंजुता गेहा।
वेद शास्त्र पढ़ने के रसिया, सत्य रूप शिव मन में बसिया।।
दिव्य चक्षु गुरुवर पै आए, सत्य रूप शिव उन दिखलाए।
हाथ ओ३म् ध्वज वेद विराजे, सिर उष्णीष मनोहर साजे।।
जग में वैदिक धर्म प्रचारा, प्राणिमात्र को मिला सहारा।
निखिल जगत् तुम्हारा यश गावे, तव करणी को सीस झुकावे।।
ईसाई मूसाई सारे, दादू पंथी गुरु के प्यारे।
देव समाजी ब्रह्म समाजी, भक्त कबीरा काजी हाजी।।
सभी करें अनुकरण तुम्हारा, मन में आदर भाव अपारा।
दलित जातियों को अपनाया, राज-सभा तक जा पहुँचाया।।
अबलाओं में बल संचारा, विधवाओं का दुःख निवारा।
दीनजनों के कष्ट मिटाए, उच्चासन उनको दिलवाए।।
कन्याशाला जब दिख पाए, नाम तुम्हारा मन में आए।
जिसने मंत्र तुम्हारा माना, उसने प्राप्त किए सुख नाना।।
कठिन कार्य थे जग में जेते, सुगम हुए करणा ते तेते।
अमित तेज अपना दिखलाया, पाखंडों का दुर्ग गिराया।।
भूत पिशाच प्रेत भग जाएँ, नाम तुम्हारा जब सुन पाएँ।
ब्रह्मचर्य रखना सिखलाया, अतुल सुबल अपना दिखलाया।।

सबके संकट मेटन हारे, कर्म वचन मन एक तुम्हारे।
गोकरुणानिधि को छपवाया, गोरक्षा का लाभ बताया।।
दृढ़ता से सत्यार्थ प्रकाशा, तब दंभिन को हुई निराशा।
सब विधि रिद्धि-सिद्धि के दाता, वेद धर्म रक्षक जन त्राता।।
ओ३मूकार है जपन तुम्हारा, ओ३मूकार प्राणों से प्यारा।
जनम-जनम के पाप मिटाए, सब हितकर शुभ मार्ग बताये।।
जीवन का उद्देश्य बताया, कल्पित पूजा-पाठ छुड़ाया।
जो नर तब आज्ञा अपनावें, सुख से भवसागर तर जावें।।
जय जय जय ऋषिराज तुम्हारी, धर्म धुरंधर सत्य प्रचारी।
प्राणिमात्र हैं ऋणी तुम्हारे, सबके सब विधि कष्ट निवारे।।
मोक्ष मार्ग सबको दर्शाया, भक्तजनों का मन हर्षाया।
तब करुणा का पार न पाया, नव जीवन सब जग ने धारा।।
ईश भक्ति, गुरु भक्ति सिखाई, देश भक्ति महिमा समझाई।
जो तुम्हारे विश्वासी प्यारे, छल-कपटों से रहते न्यारे।।
जो छलछिद्री कपटाचारी, बगुला भक्त बड़े अधिकारी।
उनको सत्य शस्त्र संहारे, उनका पाप उन्हीं को मारे।।
चालीसा ऋषिराज का, पढ़ो प्रेम मन धार।
कल्पित माया जाल छल - छोड़ तरो संसार।।

128

जब उत्कट इच्छा पैदा हो

जब उत्कट इच्छा पैदा हो कल्याण तुम्हारा तब होगा।
मस्तक में आज्ञाचक्र खुले, भय भ्रान्ति निवारण तब होगा।।
अपने ही पैर-अँगूठे के नाखून में अपना मुख देखें।
जब आयें दोष नजर अपने पाप पलायन तब होगा।।
भय, शंका, लज्जा धारण से सम्मान विवेक का होता है।
जब ऋतम्भरा प्रज्ञा जागे उत्थान तुम्हारा तब होगा।।

गुरुजन की शिक्षा धारण कर, जब प्रत्याहार-सिद्धि होगी।
भोगस्थल तज योगस्थल में प्रस्थान तुम्हारा तब होगा।।
ऊपर-नीचे के दाँतों में यदि जीभ-नोक रख ध्यान करें।
रसना वाणी के दोष मिटें, गुणगान तुम्हारा तब होगा।।
तालू में जीभ लगाने से, शीतलता मिल ही जाती है।
मधुर सोमरस टपकेगा, रसपान तुम्हारा तब होगा।।
हँसमुख आकृति रखने से, चिन्ता कुवासना जल जाएँ।
जब तुरिया अवस्था आ जाए, भगवान तुम्हारा तब होगा।।

129

जाग री ! जाग अब

जाग री ! जाग अब बहुत सो ली बहिन।
जाग री ! जाग अब बहुत सो ली बहिन।।

बैठ सत्संग में बात सुन ज्ञान की।
कर हृदय से सदा भक्ति भगवान् की।।
ढोंग पाखण्ड को मार गोली बहिन।
जाग री ! जाग अब बहुत सो ली बहिन।।

तज अविद्या जहाँ तक बने विद्या पढ़।
उन्नति के शिखर पर सभी भाँति चढ़।।
विद्या के बिन बहुत ख्वार हो ली बहिन।
जाग री ! जाग अब बहुत सो ली बहिन।।

रह निठल्ली नहीं कार्य में मग्न हो।
देख अनमोल अपने समय को न खो।।
व्यर्थ मत कर हँसी और ठिठोली बहिन।
जाग री ! जाग अब बहुत सो ली बहिन।।

130

जीवन की घड़ियाँ

जीवन की घड़ियाँ वृथा न खो
ओ३म् जपो ओ३म् जपो
चादर न लम्बी तान के सो, ओ३म् जपो ओ३म् जपो,
ओ३म् ही सुख का सार है, जीवन है जीवन आधार है।
प्रीति न उसकी मन से तजो, ओ३म् जपो ओ३म् जपो,
चोला यही है कर्म का, करने को सौदा धर्म का।
इसके सिवाय मार्ग न कोई, ओ३म् जपो ओ३म् जपो,
मन की गति सम्भालिए, ईश्वर की ओर डालिये।
धोना जो चाहे मन को तू, तो ओ३म् जपो ओ३म् जपो,
साथी बना ले ओ३म् को, मन में बिठा ले ओ३म् को।
देख रहा क्यों भाग्य को रो, ओ३म् जपो ओ३म् जपो···

131

जीवन यात्रा के बीस सूत्र

आनन्द—जीवन एक आनन्द है, इसे कीजिए प्राप्त।
सब तेरे हो जायेंगे, बाधा विपद समाप्त।।
संघर्ष—जीवन एक संघर्ष है, रखिए इसका गौर।
डटकर करिए सामना, बन करके सिरमौर।।
चुनौती—जीवन एक चुनौती, सहर्ष करो स्वीकार।
ओ३म् नाम प्रिय ईश का, सुमरो बारम्बार।।
संगीत—जीवन एक संगीत है, मधुर स्वरों का ज्ञान।
तन, मन, चेहरे पर सदा बनी रहे मुस्कान।।
यात्रा—जीवन है एक यात्रा, हँसकर करिए पार।
नाव किनारे पर लगे, डूबे नहीं मँझधार।।

स्वप्न—जीवन यह एक स्वप्न है, इस पर करो विचार।
हृदय अन्दर धारिए, एक नाम ओंकार।।
खेल—जीवन यह एक खेल है, ठीक तरह से खेल।
लाइन पर चलती रहे, इस जीवन की रेल।।
पहेली—जीवन है एक पहेली, पूछो इससे बात।
शुद्धाचरण बनाइए, सुधर जाए हालत।।
दौड़—जीवन यह एक दौड़ है, बढ़कर बाजी जीत।
पहला नम्बर जीतिए, गाओ मधुमय गीत।।
धर्म—जीवन यह एक धर्म है, पालन कर चित्त लाय।
करते रहिए कार्य शुभ, मन में अति हरषाय।।
अवसर—जीवन यह अवसर भला, इससे लाभ उठायें।
एक-एक क्षण अनमोल है, इसे वृथा न गमाएँ।।
दर्द—जीवन यह एक दर्द है, काबू इस पर लायँ।
रहो स्वस्थ, नीरोग तन, औषधि ऐसी खायँ।।
वरदान—जीवन एक वरदान है, लीजे कण्ठ लगाय।
पाए परमानन्द फिर, मन इच्छा फल पाय।।
प्यार—जीवन यह एक प्यार है, ले इसका आनन्द।
देते रहेंगे प्रेरणा, ओ३म् सच्चिदानन्द।।
सुन्दरम्—जीवन है एक सुन्दरम्, सराओ बारम्बार।
प्रीतिपूर्वक सुखद से, याद करे संसार।।
वचन—जीवन यह एक वचन है, अच्छी तरह निबाह।
तज कुपन्थ गह वेद पथ, यही सुखदाई राह।।
खुशी—जीवन यह एक खुशी, बाँट दिये प्रसाद।
करिये ईश उपासना, तज आलस प्रमाद।।
दर्पण—जीवन दर्पण सम समझ, धब्बा नहीं लग जाए।
उन्नति पथ अपनाइये, जग में यश फैलाय।।
श्रेष्ठ—जीवन यह एक श्रेष्ठ है, ऊँचा रखिए नाम।
वृथा नहीं गमाइए, हो जाओ बदनाम।

अमानत—जीवन है एक अमानत, रखिए इसे सम्भाल।
फिर जीवन में निरखिए, आयु के सौ साल।।

132

जीवन सफल बनाना है

जीवन सफल बनाना है तो वेद पढ़ो और वेद पढ़ाओ।
नर तन लाभ उठाना है तो वेद पढ़ो और वेद पढ़ाओ।
जीवन सफल बनाना है तो...
वेद प्रभु की अमृत वाणी। पावन सुखद सदा कल्याणी।
धन बल यश को पाना है तो वेद पढ़ो और वेद पढ़ाओ।
जीवन सफल बनाना है तो...
चार वेद सद्ज्ञान -ग्राम हैं। ऋक्, यजु, साम, अथर्व नाम हैं।
सोया भाग्य जगाना है तो वेद पढ़ो और वेद पढ़ाओ।
जीवन सफल बनाना है तो...
सूरज चढ़े अन्धेरा जाए। ज्ञान बढ़े अज्ञान मिटाए।
मन-मन्दिर चमकाना है तो वेद पढ़ो और वेद पढ़ाओ।
जीवन सफल बनाना है तो...
जीवन-धारा सरस बहेगी। कोई समस्या नहीं रहेगी।
उलझन को सुलझाना है तो वेद पढ़ो और वेद पढ़ाओ।
जीवन सफल बनाना है तो...
ऊँच-नीच और जात-पाँत को। भेद-भाव और छूत-छात को।
जड़ से मार मिटाना है तो वेद पढ़ो और वेद पढ़ाओ।
जीवन सफल बनाना है तो...
मानवता बस यहीं मिलेगी। और कहीं पर नहीं मिलेगी।
'पथिक' सत्य अपनाना है तो वेद पढ़ो और वेद पढाओ।
जीवन सफल बनाना है तो...

133

जो नारी अपने जीवन को

(पत्नी का कर्त्तव्य)

जो नारी अपने जीवन को, सुखमय श्रेष्ठ बनाये।
वैदिक नियम सर्व हितकारी, जीवन में अपनाये।। टेक।।
पति को ही पति रक्षक माने, जीवन भर का साथी।
देव सखा गुरु पूजनीय है, सच्चा श्रेष्ठ हिमाती।।
जो नारी पति की सेवा में अपना ध्यान लगाती।
वही श्रेष्ठ, सबसे अति उत्तम, पतिव्रता कहलाती।।
पतिसेवा ही सही व्यर्थ सब व्रत-उपवास बताये।। 1।। वैदिक···
कभी किसी हालत में पति के दिल को नहीं दुखावै।
कठिन आपदा, दुख-संकट में धीरज उसे बंधावै।।
पथ से विचलित हो जाये तो सत्पथ पुनः चलावै।
कुरीतियों, कुविचारों पापों से हर समय बचावै।।
दुर्व्यसनों से हटा सुकर्मों की ही सीख सिखाये।। 2।। वैदिक···
पति को पूछे बिना कभी भी जाये ना पीहर में।
जड़ पूजा करने ना जाये कभी किसी मन्दिर में।।
सास-ससुर को तीर्थ मान के पूजे अपने घर में।
स्याने, पीर-फकीरों के ना पड़े कभी चक्कर में।।
पांखडी गुरुओं के चरणों में ना शीश झुकाये।। 3।। वैदिक···
कोयल जैसी मधुर भाषिणी बोली बोले प्यारी।
हँसमुख रहे हमेशा चाहे रूठे दुनिया सारी।।
भोजनादि हर काम-काज में होवे चतुर भारी।
सदा सफाई रखे सजादे घर को ज्यों फुलवारी।।
सती साध्वी नारी के 'नरदेव' सदा गुण गाये।। 4।। वैदिक···

134

जो है भगवान के

जो है भगवान के दर का सवाली।
यहाँ से वो कभी जाए न खाली।
यहाँ आकर सभी वरदान पाएँ।
यहाँ दुःख - दर्द सारे, छूट जाएँ।
कि खुशहाली से मिट जाए कंगाली।
जो है भगवान के दर का सवाली···

मन, वचन, कर्म से इक हो के आए।
उसे भगवान झोली भर लौटाए।
वही दाता है त्रिलोकी का वाली।
जो है भगवान के दर का सवाली···

है खबर उसको जो है मन में तेरे।
करेगा दूर वह गम के अँधेरे।
'पथिक' भगवान की महिमा निराली।
जो है भगवान के दर का सवाली···

135

जो पुत्र निज माता-पिता का

जो पुत्र निज माता-पिता का मान न करे
वह बाप जो सन्तान को गुणवान न करे
गाली, गलौज सभी से तकरार है जिसे
धिक्कार है उसे।। 1।।

पत्नी जो पति की आज्ञा को मानती नहीं
मतिमन्द पतिव्रत धर्म क्या जानती नहीं
नीम सम कड़वा लगे भरतार है जिसे
धिक्कार है उसे।। 2।।

जो छोड़ वैदिक धर्म को बनता है ईसाई
उस हिन्दू को जो ऊँच-नीच रहा फैलाई
सुहाता नहीं वेद का प्रचार है जिसे
धिक्कार है उसे।। 3।।

धनवान होकर धर्म हित जो दान न करे
अच्छे-बुरे कर्मों की जो पहचान न करे
अपने धर्म और देश से न प्यार है जिसे
धिक्कार है उसे।। 4।।

जो आर्य बनकर दुर्व्यसनों का त्याग न करे
स्वाध्याय और सत्संग से सही दिमाग न करे
नशा, धूम्रपान का भूत सवार है जिसे
धिक्कार है उसे।। 5।।

136

जो प्राणी इस जग में आता

जो प्राणी इस जग में आता, आने वाला निश्चय जाता।
जाने के पश्चात् वहाँ से, कोई खबर नहीं भिजवाता।।
जाने वाले लोगों का ना जाने, कहाँ ठिकाने ठिकाना है।
ग्राम, प्रान्त, जनपद, पत्रालय नहीं किसी ने जाना है।।
टेलीफोन नहीं मिल पाता, कोई पता नहीं बतलाता।
उसको भी तो दया न आती, ऐसा तोड़ गया है नाता।। 1।।
धीरे-धीरे चले जा रहे, बालक वृद्ध जवान सभी।
किसका नम्बर कब आयेगा, हो न सकी पहचान अभी।।
बाप रहे बेटा मर जाता, बालक छोड़ चली जाए माता।
जाने वाला पुनः लौटकर, सूरत भी तो न दिखलाता।। 2।।
बड़े-बड़े बलवान मौत ने अपनी गोद बिठाये हैं।
ज्ञानी, ध्यानी, योगी, साधु, बोल नहीं कुछ पाये हैं।।

कोई भी ना शोर मचाता, ना कोई तलवार उठाता।
मृत्यु से लड़ने को कोई, कभी संगठन नहीं बनाता।। 3।।
जाने क्या लीला ईश्वर की, सबको मौत पछाड़ रही।
कितनों का तो बना-बनाया, पल में खेल बिगाड़ रही।।
मानव तू फिर क्यों इतराता, यह सब रचता खेल विधाता।
जाना है 'नरदेव' तुझे भी, क्यों ना गीत उसी के गाता।। 4।।

137

जोड़-जोड़ भर लिए खजाने

जोड़-जोड़ भर लिए खजाने, फिर भी तृष्णा अड़ी रही।
धरे रहे तेरे रँगले-बँगले, खाली बारहदरी रही।।
एक ब्राह्मण की सुनो कहानी, पूजा करने आया था।
नहाय-धोय के नदी किनारे, आसन खूब जमाया था।।
आ गया जम का परवाना, हाथ में माला पड़ी रही।। 1।।
पहन पोशाक बाँध के पगड़ी, हट्टी पर एक सेठ गया।
जाते ही चक्कर एक आया, पाँव फैलाकर लेट गया।।
कूच कर गया लिखने वाला, कलम कान में टँगी रही।। 2।।
कोठे ऊपर चढ़ी इक औरत, अपना शृंगार बनाने को।
भरी सलाई सुरमे वाली, सुरमा आँख लगाने को।।
काल-गुलेल आई पीछे से, सुरमेदानी पड़ी रही।। 3।।
सैर करने को एक बाबू जी, कार पर सवार हुए।।
कार न अभी चलने पाई थी, बाबू जी ठंडे-ठार हुए।
लगा तमाचा एक अचल का, सड़क पर गाड़ी खड़ी रही।। 4।।
'गौरीशंकर' चेतो प्राणी, झगड़े और फसाद तजो।
जाने दो सारी बातों को, अब तो प्रभु का नाम जपो।।
खिल-खिल फूल मिल गये ख़ाक में, नहीं सदा फुलझड़ी रही।। 5।।

138

जो सदाचार की खान हो

जो सदाचार की खान हो बस आर्य उसे ही कहते हैं,
मन, कर्म, वचन एक हों जिसके, सारे काम नेक हों जिसके,
शुद्ध ज्ञानमय लेख हों जिसके, नीति-निपुण, गुणवान हो।
बस आर्य…
धर्म के दस लक्षण को धारे, जीते काम इन्द्रियाँ मारे,
मन से वैर-विरोध बिसारे, जग का मित्र महान हो।
बस आर्य…
पर-नारी माता सम जाने, पर-धन धूरि बराबर माने,
आत्मवत् सबको पहिचाने, समदृष्टा विद्वान हो।
बस आर्य…
जिसमें ये गुण दें दिखलाई, उसे आर्य तुम समझो भाई,
चाहे मुस्लिम हो या ईसाई, पौराणिक बौद्ध या जैन हो।
बस आर्य…
जो वेदों की शिक्षा माने, ऋषि को पथ-प्रदर्शक जाने,
'व्यास' वचन जो मन में ठाने, ऐसा पुरुष महान हो।
बस आर्य…

139

जिस नर में

जिस नर में आत्मशक्ति है, वह शीश झुकाना क्या जाने।
जिस दिल में ईश्वर-भक्ति है, वह पाप कमाना क्या जाने।। टेक
मन-मन्दिर में भगवान् बसा, जो उसकी पूजा करता है।
मन्दिर के देवता पर जाकर, वह फूल चढ़ाना क्या जाने।। 1।।

जो खेला है तलवारों से, और अग्नि के अंगारों से।
रणभूमि में जाकर पीछे, वह कदम हटाना क्या जाने।।2।।
हो कर्मवीर और धर्मवीर, वेदों पर चलने वाला हो।
वह निर्बल दुखिया बच्चों पर, तलवार चलाना क्या जाने।।3।।
मात-पिता की सेवा करता, उनके दुःखों को हरता जो।
वह मथुरा, काशी, हरिद्वार, वृन्दावन जाना क्या जाने।।4।।

140
जिसके तेजोमय जीवन से

जिसके तेजोमय जीवन से जाग उठा सारा संसार।
उस नर नामी योगी ध्यानी दयानन्द की जय-जयकार।
धीरज संयम साहस विद्या थे, जिसका जीवन शृंगार।
प्रबल युक्तियाँ सुनकर जिसकी हुए विरोधी सब लाचार।
भागे पोंगापंथी ढोंगी जिसकी सुनकर के हुँकार।
जिसने खण्डन खडग चलाकर किया अविद्या का संहार।
जिसने भद्दे भेद भगाए सिखलाकर के सद्व्यवहार।
जिसने बिछुड़े गले लगाए पाए जन-जन ने अधिकार।
जिसने पीड़ित, दुखिया, दीनों का कीना आकर उद्धार।
भारत ने नवजीवन पाया जिसके पाकर विमल विचार।
कौन गिनाए कौन सुनाए उसके 'जिज्ञासु' उपकार।
उस नर नामी योगी ध्यानी दयानन्द की जय-जयकार।।

141
जिन्दा हैं अगर हम तो

जिन्दा हैं अगर हम तो दुनिया को दिखा देंगे।
भारत को जमाने का सरताज बना देंगे।।

हम ज्ञान के गोलों से और तर्क की तोपों से।
पाखण्ड के महलों को मिट्टी में मिला देंगे।।
ईश्वर ने हमें बक्शा है बस्फे मसीहाई।
मारेंगे अगर ठोकर मुर्दों को जिला देंगे।।
बातें न इन्हें समझो इन बातों ही बातों में।
बिगड़ी हुई नेशन की हम बात बना देंगे।।
इस मुल्क की किस्मत पर और कौम की हालत पर।
आज अश्क बहाते हैं कल खून बहा देंगे।।
हमको नहीं अदावत हरगिज किसी से लेकिन।
जो हमको मिटायेंगे हम उनको मिटा देंगे।।
बे-बात के झगड़ों को और फूट की डाइन को।
प्यार और मुहब्बत की गंगा में बहा देंगे।।

142

जिन्दड़िए जप लै नीं

जिन्दड़िए जप लै नीं उस प्रभु दा नां
दुखाँ दियाँ माराँ तों बच सकेंगी तां।
कुल दुनिया दे मालिक बाझों कोई न तेरा थां।
जिन्दड़िए जप लै नीं उस प्रभु दा नां···
जिन्दे तैनूँ वड्डेयाँ बुजुर्गां कईयाँ ने समझाया।
इक वारी नहीं सौ-सौ वारी तोते वाँग पढ़ाया।
जिन्नां तैनूँ उतांह उठाया ओनी गईयों ठांह।
जिन्दड़िए जप लै नीं उस प्रभु दा नां···
खोल के अखियाँ ज्ञान वालियाँ उठ के वेख नजारे।
दिल दे बागीं पींघाँ पा लै, लै लै नाम हुलारे।
छेती-छेती कर पिपलाँ दी मुड़ नहीं लभनी छाँ।
जिन्दड़िए जप लै नीं उस प्रभु दा नां···

मिट्टी विच जद लाल गवाच्चा, पएगा फिर पछतौना।
पई मारदी फिरीं टटोले कख नज़र नहीं औना।
फिर जूँ वाटे बैठ कहवेंगी हुण किधर नूं जां।
जिन्दड़िए जप लै नीं उस प्रभु दा नां···
खेड गवाया बचपन सारा ऐशां विच जवानी।
आख़िर पल्ले पया बुढ़ापा मुक्की जाण कहानी।
'पथिक' सिर ते सट्ट पवे ते चेते आवे माँ।
जिन्दड़िए जप लै नीं उस प्रभु दा नां···

143

जिस दिल में तेरी याद

जिस दिल में तेरी याद नहीं उस दिल का लगाना क्या होगा,
जिस गीत में तेरा नाम नहीं—उस गीत का गाना क्या होगा।

सुख-दुख के दोनों किनारों में जीवन की नदियाँ बहती हैं,
जिस घाट पे सुख का लेश नहीं—उस घाट पे जाना क्या होगा।

दुनिया से छुपाकर पाप-कर्म मैं निशदिन करता रहता हूँ,
तुझ अन्तर्यामी के आगे—पापों का छुपाना क्या होगा।

विषयों के विष के पान करूँ लेता हूँ नाम मैं अमृत का,
मरने की मुझको चाह नहीं जीने का बहाना क्या होगा।

मैं झूठ को सत्य बताता हूँ और सत्य को झूठ जताता हूँ,
सत्पथ से भटके राही का—दुनिया में ठिकाना क्या होगा।

तू बिगड़ी बनाने वाला है—बनती को बिगाड़ा है मैंने,
फिर अन्त समय की घड़ियों में बिगड़ी को बनाना क्या होगा।

तू सबकी सुनने वाला है मैं दर पर तेरे आ न सका,
हँसते-हँसते कुछ कह न सका—रो-रो के सुनाना क्या होगा।

मैं तुझको सुख में भुल गया दुख में क्या मुँह लेकर आऊँ,
जो मूरख खुद को न जान सका—उसको समझना क्या होगा।

144

जिस दिन वेद के

जिस दिन वेद के मन्त्रों से, धरती को सजाया जायेगा।
उस दिन मेरे गीतों का, त्यौहार मनाया जायेगा।।
खेतों में सोना उपजेगा, झूमेगी डाली - डाली।
वीरानों की कोख से जिस दिन पैदा होगी हरियाली।।
दीन, अनाथ, निराश्रितों के, घर-घर होगी खुशहाली।
विधवा के सूने मस्तक पर, चमक उठेगी जब लाली।।
दीनों की कुटिया में जिस दिन, दीप जलाया जायेगा।
उस दिन मेरे गीतों का त्यौहार मनाया जायेगा।। 1।।

खलियानों की खाली झोली, भर जायेगी मेहनत से।
वदियों का मासूम लड़कपन, जाग उठेगा गफलत से।।
कर्मवीर पौरुष के बेटे, जब झूझेंगे किस्मत से।
इन्सानों की मजबूरी जब, टकरायेगी दौलत से।।
भूखे बच्चों को जिस दिन, भूखा न सुलाया जायेगा।
उस दिन मेरे गीतों का त्यौहार मनाया जायेगा।। 2।।

जिस दिन काले बाजारों में, धन के चोर नहीं होंगे।
जिस दिन मदिरा के सौदाई, तन के चोर नहीं होंगे।।
अण्डे मांस के खाने वाले, आमखोर नहीं होंगे।
जिस दिन सच कहने वालों के, दिल कमतोर नहीं होंगे।।
झूठी रस्मों को जिस दिन, नीलाम कराया जायेगा।
उस दिन गीतों का त्यौहार मनाया जायेगा।।3।।

145
जिस डगर को दयानन्द

जिस डगर को दयानन्द बता के गये,
वह डगर आर्यो अब भुलाना नहीं।
जो चरण बढ़ गये सत्य पथ के लिये,
अब चरण हमको पीछे हटाना नहीं।
वह चला गृहस्थ के बन्धन छोड़ के,
प्यार जननी, पिता, बन्धु से तोड़ के,
कभी देखा नहीं जिसने मुख मोड़ के,
सारा जीवन दिया देश हित के लिए,
आर्यो ! ऋण क्या उसका चुकाना नहीं।। 1।।
जिन्दगी में कई बार विष भी पिया,
देश हित को मरा देश हित को जिया,
सर मुसीबत सही अपना तन - मन दिया,
पग हटाया नहीं सत्य के मार्ग से,
उनकी कहानी क्या 'राघव' सुनना नहीं।। 2।।
आँधी तूफानों से घबराये नहीं।
गोली सीने लगी डगमगाया नहीं। (श्रद्धानन्द जी)
एक छुरा खा गया पग हटाया नहीं। (पं० लेखराम)
जिस चमन के लिए रक्त अपना दिया,
उस चमन को है पतझड़ बनाना नहीं।। 3।।

146
जिसने भारत विजय किया

जिसने भारत विजय किया, सरहद पर डाले डेरा,
वह नौजवान है मेरा।

अड़ा हुआ जो सीमा पर, करता दिन-रात बसेरा,
वह नौजवान है मेरा।
जब शत्रु दल धोखे से, भारत पर चढ़कर आया,
निर्भय होकर सीना ताने, जा कर के टकराया,
समरांगन में कूद पड़ा, देखा ना शाम - सवेरा,
वह नौजवान है मेरा।। 1।।
सच्चा सैनिक वीर, किया था रण में अजब तमाशा,
टैंक विमानों को तोड़ा था, जैसे कोई बताशा,
हार न मानी कभी, शत्रु का रण में रक्त बखेरा,
वह नौजवान है मेरा।। 2।।
भूख, प्यास, गर्मी-सर्दी से तनिक नहीं घबराये,
भारत का प्यारा रखवाला तू, तू ही जान बचाये,
दहशत करते शत्रु सारे नाम सुने जब तेरा,
वह नौजवान है मेरा।। 3।।

147

जिसे हर चीज में

जिसे हर चीज में भगवान नजर आता है।
मुझे वह आदमी इन्सान नजर आता है।।
धर्मी को धर्म पे चलना सहल है लेकिन।
पापी को पाप ही आसान नजर आता है।। 1।।
उस पर कमजोरियों का जोर हमेशा होगा।
जिसको मन अपने से बलवान नजर आता है।।2।।
निगाह उसकी बुराइयों पर जाये क्यों जिसको।
कदम-कदम पर निगहबान नजर आता है।। 3।।
जिसे पता है कि हर चीज है फना उसको।
खुदी का कतरा भी तूफान नजर आता है।। 4।।

मकान, नारी व दोस्त और धनमाल।
ये सारा बिखरा-सा सामान नजर आता है।। 5।।
वह दिन भी आएगा डाक्टर कहेंगे 'नत्थासिंह'।
यह चन्द घड़ियों का मेहमान नजर आता है।। 6।।

148

जिस जीवन में

टेक—जिस जीवन में प्रभु-भक्ति नहीं।
वह जीवन निष्फल जाता है।।
प्रिय-प्रेम सही, सुत-प्रेम सही
धन-प्रेम सही, तन-प्रेम सही
जब प्रेम न हो उस ईश्वर से
तब मानुष पशु कहलाता है।
जिस जीवन में प्रभु-प्रेम नहीं, वह जीवन निष्फल जाता है।। 1।।

नादान न बन, अनजान न बन
कुछ होश में आ, दाना बन जा
यह दुनिया सराये फानी है
क्यों इसमें महल बनाता है।
जिस जीवन में प्रभु-प्रेम नहीं, वह जीवन निष्फल जाता है।। 2।।

कर नेक कर्म, बस यही धर्म
तू सबका हो, सबका बन जा
जो सेवक बन दिखलाता है
वह परम धाम को पाता है।
जिस जीवन में प्रभु-प्रेम नहीं, वह जीवन निष्फल जाता है।। 3।।

कुछ सोच न कर, उठ देख इधर
जग सागर है, तन नैया है

जो तैरता है, सो डूबता है
जो डूबता है, तर जाता है।
जिस जीवन में प्रभु-प्रेम नहीं, वह जीवन निष्फल जाता है।।4।।

कुछ ध्यान करो, कुछ दान करो
कुछ काम करो, इस जीवन में
प्रभु-भक्ति से, प्रभु-सुमिरन से
यह जीवन सफल हो जाता है।
जिस जीवन में प्रभु-भक्ति नहीं, वह जीवन निष्फल जाता है।। 5।।

149

जिस घर होवें ऐसे काम

जिस घर होवें ऐसे काम, उसी को समझो स्वर्ग है।।
बालक युवा जहाँ वृद्धों की, निश-दिन सेवा करते।
बल विद्या यश आयु बढ़ती, संकट सारे टरते।।
मिलता उन्हें सदा आराम।। 1।। उसी को···

ज्ञानपूर्वक होते हों, जिस घर में सारे काज ।
उस घर में तुम सही मान लो, हुआ राम का राज।।
वही कहलाता उत्तम धाम।। 2।। उसी को···

माँ-बेटी के समान होवे, सास-बहू में प्यार।
आपस में प्रिय वाणी बोलें, करें नहीं तकरार।।
नियम यह पालें आठों याम।। 3।। उसी को···

सखा भाव से मिलकर के, पति-पत्नी समय बितावें।
बच्चों को शुभ शिक्षा देकर, सच्चे आर्य बनावें।।
गावें नित्य ओ३म् शुभ नाम।। 4।। उसी को···

खान-पान हो शुद्ध सभी का, होवे सद्व्यवहार।
वस्त्र आदि को साफ रखें नित, रखते उच्च विचार।।
करे शुभ काम सवेरे-शाम।। 5।। उसी को···

होता नित 'नरदेव' जहाँ पर, श्रेष्ठ जनों का मान।
वेद कथा यज्ञादि कर्म हो, स्वर्ग लीजिए जान।।
शहर, घर, कस्बा हो या ग्राम ।। 6।। उसी को···

150

जिंदगी का सफर करने वाले

जिंदगी का सफर करने वाले, अपने मन का दिया तो जला ले।
वक्त की धार यह कह रही है, आत्मा कष्ट क्यों सह रही है,
देख ऐसी जगह तू खड़ा है, ज्ञान गंगा जहाँ बह रही है।
बढ़ के गंगा में डुबकी लगा ले।। अपने मन का···
रात लम्बी है गहरा अँधेरा, कौन जाने कहाँ हो बसेरा,
तू है अनजान मंजिल का राही, चलते रहना ही है काम तेरा।
रोशनी से डगर जगमगा ले।। अपने मन का···
सूनी-सूनी ये मंजिल की राहें, चूमना तेरे चरणों को चाहें।
गहन वन में कहीं खो न जाना, भटक जाएँ न तेरी निगाहें।
सोचकर हर कदम को बढ़ा ले।। अपने मन का···
बस अकेले ही है तुझको चलना, बहुत मुमकिन है गिरना-सँभलना।
गिर के गिरना नहीं बात कोई, है बड़ी बात गिरकर सँभलना।
'पथिक' यह बात मन में बिठा ले।। अपने मन का···

151

जिंदगी–भर किया ना प्रभु का भजन

जिंदगी-भर किया ना प्रभु का भजन,
ऐसे जीवन बिताने से क्या फायदा।
चित्त की वृत्तियाँ यों ही मैली रहीं,
ऐसी गंगा नहाने से क्या फायदा।।
भक्ति, स्वाध्याय, सत्संग करने कभी,
भूलकर भी समय कुछ निकाला नहीं।
योग के रंग में कुछ रँगा ही नहीं,
ऐसे बाबा कहाने से क्या फायदा।।
वृद्ध माता-पिता, गुरु तड़पते रहे,
एक भी घूँट पानी पिलाया नहीं।
मर गए तब किया श्राद्ध, तर्पण भला,
ब्राह्मणों को जिमाने से क्या फायदा।।
शत्रु बन भ्रात से भ्रात लड़ते रहे,
प्रेम के भाव मन में बिठा ना सके।
जा सुबह-शाम मंदिर भरत, राम के,
भक्तिमय गीत गाने से क्या फायदा।।
दीन-जन के दुःखों को मिटाया नहीं,
और उपकार में धन लगाया नहीं।
स्वयं भी भोगने में उपेक्षा करी,
ऐसे धन के कमाने से क्या फायदा।।
पास दलितों को अपने बिठा ना सके,
और विधर्मी गले से लगाए नहीं ।
बाल-विधवा तड़पतीं, बिलखती रहीं,
ऐसे हिन्दू कहाने से क्या फायदा ।।

भारती भेषभूषा मिटी जा रही,
सभ्यता, संस्कृति भी घटी जा रही,
पूर्वजों का न सम्मान जिससे हुआ,
ऐसी शिक्षा दिलाने से क्या फायदा ।।
उच्च पद के लिए खूब लड़ते रहे,
दूसरों की कमी को बताते रहे ।
दोष अपने न देखे क़भी भूलकर,
ऐसे आर्य कहाने से क्या फायदा ।।

152

जिस घर को अपना घर समझी

(जब बेटी ससुराल जाए)

जिस घर को अपना घर समझी उस घर को मैं छोड़ चली।
अपनी आँखों के तारों को आज बिलखते छोड़ चली।।

तेरी गोदी में मैया क्या बचपन मेरा लौटेगा।
बोल कहाँ मैं शोर करूँगी कौन मुझे अब टोकेगा।
तेरी ममता का दर्पण मैं पल भर में तोड़ चली।। 1।।

चोटी पकड़ किसे भैया तू जी भर रोज रुलाएगा।
धूल सने कर से वीरन अब रोते कौन चुपाएगा।
प्यारीभाभीके अधरों की फुलझड़ियाँ मैं छोड़ चली।।2।।

बता सहेली मेरे बिन तू कैसे जीने पाएगी।
हमजोली तू गलबहियाँ कर किसको गीत सुनाएगी।।
मेरेदुःख-सुख की भागिन, मैं तुझसे नाता तोड़चली।।3।।

मैं बाबुल साजन घर जाती, जल्दी मुझे बुलाना तुम।
डोली चलते देख पिता ना, नैनों से नीर बहाना तुम।
आज तुम्हारी फुलवारी से एक कली मैं तोड़ चली।। 4।।
जिस घर को अपना घर···

153

जे तूं जग ते सदा सुख पाना

जे तूं जग ते सदा सुख पाना जिन्दे नी ओ३म् नाम जप लै।
तैनूं मुड़ के पवे न पछताना जिन्दे नी ओ३म् नाम जप लै।
अनगिन जीव लक्खां योनियाँ च पए ने।
कीते करमां दा सब फल भोग रहे ने।
पुट अखियाँ ते वेख जमाना जिन्दे नी ओ३म् नाम जप लै।
जे तूं जग ते सदा सुख पाना···
प्रभु दी कचैहरी विच चलदा लिहाज नहीं।
ओथे कामयाब हुन्दा कोई चालबाज नहीं।
पैंदा सब नूं हिसाब चुकाना जिन्दे नी ओ३म् नाम जप लै।
जे तूं जग ते सदा सुख पाना···
जग है बागीचा उस शाहे लाजवाब दा।
आदमी बागीचे विच फुल है गुलाब दा।
आज खिड़ेया ते कल मुरझाना जिन्दे नी ओ३म् नाम जप लै।
जे तूं जग ते सदा सुख पाना···
अज तेरे वस कल वस पैना काल दे।
तेरी मरजी ए भावें मन्न भावें टाल दे।
मेरा कम्म है 'पथिक' समझाना जिन्दे नी ओ३म् नाम जप लै।
जे तूं जग ते सदा सुख पाना···

154

जैसे बंजारे पहले

जैसे बंजारे पहले बैलों को खूब चराते हैं,
फिर वे उन्हें बेचने के हित मोल-तोल बतलाते हैं।।
त्यों लड़के के पिता, जबकि घर लड़की वाले आते हैं,
शादी से पहले लड़के की कीमत खूब बताते हैं।।

लड़की वाले खूब गिड़गिड़ाते हैं, पाँव दबाते हैं,
किन्तु न वे टस से मस होते, वज्र-हृदय बन जाते हैं।।
हो निराश फिर रोते हैं कन्या के पितु और महतारी,
छोड़ो-छोड़ो दहेज का लेना भारत के हे नर-नारी!
कितने जाति-सुधारक त्यागी होने का दम भरते हैं,
दहेज लेने के विरोध में सुन्दर भाषण करते हैं।।
पर उनके लड़कों की जब शादी का अवसर आता है,
किसी रूप में दहेज लेने उनका जी ललचाता है।।
कन्या के पितु कहते हैं हम पर श्रीमान् दया करिये।
निज सुपुत्र से कन्या का करके विवाह चिंता हरिये।।

155

डूबतों को बचा लेने वाले

डूबतों को बचा लेने वाले, मेरी नैय्या है तेरे हवाले,
लाख अपनों को मैंने पुकारा, सबके सब कर गये किनारा,
सिर्फ तेरा ही अब तो सहारा, कौन तुझ बिन भंवर से निकाले।
मेरी नैय्या है तेरे हवाले···
और कोई न देता दिखाई, सिर्फ तेरा ही अब तो सहारा,
जिस समय तू बचाने पे आये, आग में भी बचाकर दिखाए,
जिस पर तेरी कृपा दृष्टि होवे, कैसे उस पे कहीं आँच आए,
आँधियों में भी तू ही सँभाले।
मेरी नैय्या है तेरे हवाले···
पृथ्वी सागर पर्वत बनाए, तूने धरती पे दरिया बहाए,
चाँद सूरज करोड़ों सितारे, फूल आकाश में भी खिलाए,
तेरे काम हैं सबसे निराले, मेरी नैय्या है···

156

तारक गण के चन्द थे

तारक गण के चन्द थे, शुद्ध विचार बुलन्द थे।
स्वामी दयानन्द के सच्चे शिष्य श्रद्धानन्द थे।।

दयानन्द का भाषण सुनकर, दुर्व्यसनों को छोड़ दिया।
मिथ्यामत पन्थादि मार्ग तज, सत्पथ छकड़ा मोड़ दिया।।

वेद ईश्वरीय ज्ञान के, जन-जन के कल्याण के।
खोल दिये दरवाजे सारे जो सदियों से बन्द थे।
स्वामी दयानन्द के सच्चे शिष्य श्रद्धानन्द थे।।1।।

छूआछूत जाति-पांति के विरुद्ध खूब प्रचार किया।
शुद्धि चक्र चलाया जग में, दलितों का उद्धार किया।।

दुखी दीन - जन रोते थे, रोज विधर्मी होते थे।
नव क्रान्ति के अग्रदूत और जन-जन के सुखकन्द थे।।
स्वामी दयानन्द के सच्चे शिष्य श्रद्धानन्द थे।।2।।

वेद धर्म अनुरागी त्यागी देव विशुद्ध विचारक थे।
जीवन अर्पण किया देश हित सत्य ज्ञान प्रचारक थे।।

जहाँ कोई पथ-भ्रष्ट हुआ, तभी देखकर कष्ट हुआ।
ऋषि मुनियों के लाल विधर्मी बनते नहीं पसन्द थे।।
स्वामी दयानन्द के सच्चे शिष्य श्रद्धानन्द थे।।3।।

दिल्ली में ब्रिटिश सेना ने जिस दिन हल्ला बोला था।
नंगी संगीनों के आगे सीना अपना खोला था।।

निडर सिंह सम अड़े रहे, सीना खोले खड़े रहे।
देश स्वतंत्र बने अपना, उर में उत्साह अमन्द थे।।
स्वामी दयानन्द के सच्चे शिष्य श्रद्धानन्द थे।।4।।

कुछ दुष्टों ने चुपके-चुपके हत्यारा तैयार किया।
लेकर के पिस्तौल अचानक स्वामी जी पर वार किया।।

वह तेईस दिसम्बर था, आया समय भयंकर था।
विदा हो गये जग से जपकर ओ३म् सच्चिदानंद थे।।
स्वामी दयानन्द के सच्चे शिष्य श्रद्धानन्द थे।। 5।।

157

तेरी जय हो

तेरी जय हो, तेरी जय हो मेरी गौ माता,
तेरी जय हो, तेरी जय हो मेरी गौ माता,
जय जय जय जय गौ माता।

(1) रक्षक, भक्षक तेरे लिए माँ दोनों एक समान हैं।
तू सबको घी, दूध है देती और करती कल्याण है।
तेरा उपकार भूला न जाता, जगत् कमाई खाता।।
तेरी···

(2) कुर्सी की खातिर दिखलाते दो बैलों की जोड़ियाँ।
तेरा रक्त बहाते करते प्राप्त विदेशी कोड़ियाँ।
नाड़ काटने, खाल खींचने में भी भय न आता।।
तेरी···

(3) आज जेल में बैठी हैं तेरे भक्तों की टोलियाँ।
देखो हैं चलती गौ-भक्तों पर लाठी और गोलियाँ।
फिर भी जय-जय करता है तेरी यह भारत सारा।।
तेरी···

(4) तन-मन-धन अर्पण करके, हम तेरे प्राण बचाएँगे।
बूचड़खानों को तुड़वाकर गौशाला बनवायेंगे।
भारत का संविधान निश्चय से ही बदलेगा सारा।।
तेरी···

158

तेरी मेहरबानी का

तेरी मेहरबानी का है बोझ इतना,
जिसे मैं उठाने के काबिल नहीं हूँ।
मैं आ तो गया हूँ मगर जानता हूँ,
मैं सिर को झुकाने के काबिल नहीं हूँ।।
ये माना कि दाता हो तुम कुल जहाँ के,
मगर कैसे झोली फैलाऊँ मैं आ के।
जो पहले दिया है वो कुछ कम नहीं है,
मैं ज्यादा उठाने के काबिल नहीं हूँ।।
तुम्हीं ने अता की मुझे जिन्दगानी,
तेरी महिमा फिर भी मैंने न जानी।
कर्जदार तेरी दया का हूँ इतना,
जिसे मैं चुकाने के काबिल नहीं हूँ।।
जमाने की चाहत में खुद को मिटाया,
तेरा नाम हरगिज जुबाँ पे न आया।
गुनहगार हूँ मैं सजावार हूँ मैं,
तुम्हें मुँह दिखाने के काबिल नहीं हूँ।।
यही माँगता हूँ सिर को झुका लूँ,
तेरी दीद इक बार जी भर के पा लूँ।
सिवा दिल के टुकड़े के अय मेरे मालिक,
मैं कुछ भी चढ़ाने के काबिल नहीं हूँ।।

159

तेरे अमलां ते नबेड़े

तेरे अमलां ते होणगे नबेड़े ते जात किसे पुछणी नहीं।
जदों जावनगे बखिए उधेड़े ते जात किसे पुछणी नहीं।
हिन्दु, मुसलमान, सिख, ईसाई संसार विच।
सब दा स्वरूप इक्को मोतियाँ दे हार विच।
फेर काहनूँ पाना एं बखेड़े ते जात किसे पुछणी नहीं।।
दिल च वसा के प्रभु बन्देयाँ नूँ प्यार कर।
कदी न किसे दे उत्ते नफरत दे वार कर।
मुक्कनगे फेर सब झेड़े ते जात किसे पुछणी नहीं।।
जेहड़ा सच ग्रहण कर झूठ सदा त्यागदा ए।
दुखियाँ दी सेवा विच दिनें-रातीं जागदा ए।
हुन्दा ए परमात्मा दे नेड़े ते जात किसे पुछणी नहीं।।
जिन्हाँ परमात्मा दी भगती विसार छड्डी।
झूठ पाप जुल्म विच जिन्दगी गुजार छड्डी।
खाणगे चौरासियाँ दे गेड़े ते जात किसे पुछणी नहीं।।
अन्त वेले मुक्ति दे दर ओहो जाँवदा ए।
नेकियाँ कमांवदा ते प्रभु गुण गांवदा ए।
भगती दे तार जिन्हें छेड़े ते जात किसे पुछणी नहीं।।
'पथिक' बनाया प्रभु खेवनहार जिन्हाँ।
प्रभु दे हवाले कर दित्ती पतवार जिन्हाँ।
ओहनां दे पार होने बेड़े ते जात किसे पुछणी नहीं।।

160

तेरे पूजन को

तेरे पूजन को भगवान् बना मन मन्दिर आलीशान।
किसने देखी तेरी सूरत कौन बनावै तेरी मूरत।
तू निराकार भगवान् बना मन मन्दिर आलीशान।।
तेरे पूजन को···

यह संसार है तेरा तू रमा है इसके अन्दर।
धरते ऋषि-मुनि सब ध्यान बना मन मन्दिर आलीशान।।
तेरे पूजन को···

सागर तेरी शान बताते, पर्वत तेरी शोभा गाते।
हारे ऋषि-मुनि सब आन बना मन मन्दिर आलीशान।।
तेरे पूजन को···

तू ही जल में, तू ही थल में, तू ही मन में, तू ही तन में।
तेरा रूप अनूप महान् बना मन मन्दिर आलीशान।।
तेरे पूजन को···

तूने राजा रंक बनाये तूने भिक्षुक राज बिठाये।
तेरी लीला ईश महान् बना मन मन्दिर आलीशान।।
तेरे पूजन को···

161

तेरे दर को छोड़कर

तेरे दर को छोड़कर किस दर जाऊँ मैं।
सुनता मेरी कौन है, किसे सुनाऊँ मैं।।
जब से याद भुलाई तेरी लाखों कष्ट उठाये हैं।

क्या जानूँ इस जीवन अन्दर कितने पाप कमाये हैं।
हूँ शर्मिन्दा आपसे क्या बतलाऊँ मैं।। 1।।
मेरे पाप कर्म ही तुझसे, प्रीति न करने देते हैं।
कभी जो चाहूँ मिलूँ आपसे, रोक मुझे ये लेते हैं।
कैसे स्वामी आपके दर्शन पाऊँ मैं।। 2।।
है तू नाथ वरों का दाता, तुझसे सब वर पाते हैं।
ऋषि - मुनि और योगी सारे तेरे ही गुण गाते हैं।
छींटा दे दो ज्ञान का होश में आऊँ मैं।। 3।।
जो बीती सो बीती लेकिन बाकी उम्र सँभालूँ मैं।
प्रेम-पाश में बँधा आपके गीत प्रेम के गा लूँ मैं।
जीवन प्यारे 'देश' का सफल बनाऊँ मैं।। 4।।

162

तू ही इष्ट मेरा

तू ही इष्ट मेरा तू ही देवता है।
तू ही मेरा बन्धु तू ही पिता है।।
नहीं चाहना है कोई और दिल में।
तुझे चाहता हूँ यही चाहना है।।
कहाँ ढूँढ़ता फिर रहा है जमाना।
तू दिल में है और दर्दे दिल की दवा है।।
ज़हालत से हम तुझको देखें न देखें।
मगर तू हमें हर घड़ी देखता है।।
बहुत कोशिशें की बहुत सर खपाया।
समझ में न आया कि संसार क्या है।।
अगर दर्दे दिल है तो दिल को टटोलो।
इस दिल में ही दर्दे दिल की दवा है।।

जवानो जवानी में कुछ काम कर लो।
समझते हो जिसको जवानी हवा है।।
पता पत्ता - पत्ता तेरा दे रहा है।
सरासर गलत है कि तू लापता है।।
'मुसाफिर' जरा इस मुसाफिर से पूछो।
कहाँ से चला है कहाँ जा रहा है।।

163

तू इक ओ३म् का ही

तू इक ओ३म् का ही फरेरा उठाकर,
तू दुनिया में वेदों का डंका बजाकर,
तू दुनिया की बिगड़ी सँवारे चला जा,
ऋषिवर की जय-जय पुकारे चला जा।
जहाँ से मिटाकर के बातल परस्ती,
दिखा दे दिलों में खुदा की तू हस्ती।
चला जा खुदा के सहारे चला जा,
नमाज़, आरती के बखेड़े मिटाकर,
यह मन्दिर, मसजिद के कजिए हटाकर,
तू वाहदानियत के किनारे चला जा,
ऋषिवर की जय-जय पुकारे चला जा।
अछूतों को भाई गले से लगा ले।
यतीमों, गरीबों को सिर पर बिठा ले।
तू विधवा के दुःख को भी टारे चला जा।

164

तू कर बंदगी

तू कर बंदगी और भजन धीरे-धीरे।
मिलेगी प्रभु की शरण धीरे-धीरे।।
दमन इन्द्रियों का तू करता चला जा।
फिर काबू में आयेगा मन धीरे-धीरे।।
सुनें कान तेरे सदा वेद वाणी।
तू कर वेद वाणी का मनन धीरे-धीरे।।
सफर अपना आसान करता चला जा।
छूटेगा यह आवागमन धीरे-धीरे।।
तू दुनिया में शुभ काम करता चला जा।
तू कर शुद्ध अपना चलन धीरे-धीरे।।

165

तू है सच्चा पिता

तू है सच्चा पिता, सारे संसार का ओ३म् प्यारा।
तू ही, तू ही है रक्षक हमारा।।
चाँद, सूरज, सितारे बनाए, पृथिवी, आकाश, पर्वत सजाए।
अन्त आया नहीं, तेरा पाया नहीं पारवारा।। तू ही०
पक्षीगण राग सुन्दर हैं गाते, जीव-जन्तु भी सिर हैं झुकाते।
उसको ही सुख मिला, तेरी राह पर चला जो प्यारा।। तू ही०
पाप-पाखण्ड हमसे छुड़ाओ, वेदमारग पै हमको चलाओ।
लगे भक्ति में मन, करे संध्या-हवन विश्व सारा।। तू ही०
अपनी भक्ति में मन को लगाओ, कष्ट सारे हमारे मिटाओ।
दुखिया, कंगालों का और धन वालों का तू ही सहारा।। तू ही०

166

तुम्हारी कृपा से

तुम्हारी कृपा से जो आनन्द पाया,
वह वाणी से जावेगा क्योंकर बताया ?
नहीं है यह वह रस जिसे रसना चक्खे,
नहीं रूप उसका कभी दृष्टि आया।।
नहीं है यह वह गन्ध जो घ्राण सूँघे,
त्वचा से न जाए वह छुआ-छुवाया।।
न संख्या में आना संभव है उसका।
दिशा-काल में भी नहीं वह समाया।।
न तुझ-सा है दाता कोई और दानी,
कि इतना बड़ा दान जिसने दिलाया।।
चरित्रोन्नति में तुम्हारी दया से,
मेरी जिन्दगी ने अजब पलटा खाया।।
वह सत् है वह चित् है, वह आनन्दमय है,
मुझे मेरे अनुभव ने निश्चय कराया।।
'अमीचन्द' गूँगे की रसना के सदृश,
यह कैसे बताए कि क्या स्वाद पाया।।

167

दयानन्द का ऋण

दयानन्द का ऋण चुकाते चलेंगे।
मधुर वेद वीणा बजाते चलेंगे।।
सोते हुओं को जगाते चलेंगे।
रोते हुओं को हँसाते चलेंगे।। 1।।

जिन्हें मांस-मदिरा का चस्का लगा है,
उन्हें दूध गाय का पिलाते चलेंगे।। 2।।
हमारी जो माँ-बहिनें भटकी हुई हैं।
उन्हें वेद विद्या पढ़ाते चलेंगे।। 3।।
अछूतों को दे लात ठुकरा रहे जो,
उन्हें हम गले से लगाते चलेंगे।। 4।।
धर्म छोड़ अपना विधर्मी बने जो।
उन्हें धर्म वैदिक पर लाते चलेंगे।। 5।।
जो आपस में दिन-रात लड़ते-झगड़ते।
उन्हें संगठन कर मिलाते चलेंगे।। 6।।
दयानन्द की आज्ञा पालन करेंगे।
बनें आर्य जग को बनाते चलेंगे।। 7।।

168

दयानन्द के भक्तो !

टेक—दयानन्द के भक्तो ! परीक्षा है आई।
भारत में बढ़ने लगे मुसलमान, ईसाई।।
ऋषि था अकेला और शत्रु जमाना।
कहीं साँप सर पर, कहीं जहर खाना।।
वह कातिल की भी सोचते थे भलाई।। 1।। दयानन्द०
श्रद्धानन्द ने खाई, बताओ क्यों गोली?
'मुसाफिर' भी खेला, लहू से क्यों होली?
इकलौते की उसने, नहीं अर्थी उठाई।। 2।। दयानन्द०
तेरे देश में पादरी आ रहे हैं।
पैसे का वह जाल फैला रहे हैं।।
न जाने तुम्हें क्यों नहीं होश आई।। 3।। दयानन्द०

ईसाई तेरे देश में गर बढ़ेंगे।
तेरे देश के और टुकड़े करेंगे।।
भविष्यवाणी तुमको यह मैंने सुनाई।। 4।। दयानन्द०
दयानन्द की अग्नि से लेकर शरारे।
उठो आर्य वीरो ! क़फ़न बाँधो सारे।।
'आशानन्द' को माँ की यह आवाज आई।। 5।। दयानन्द०

169

दयानन्द देव वेदों का

दयानन्द देव वेदों का,
उजाला ले के आए थे।
करों में ओ३म् की पावन,
पताका ले के आए थे।। 1।।
न थे धन-धान मठ-मन्दिर,
न सँग चेली न चेला थे।
हृदय में वे अटल विश्वास,
प्रभु का ले के आए थे।। 2।।
गऊ, विधवा, दलित, दुखिया
अनाथों, दीन-जन के हित।
नयन में अश्रु-कण, मानस में
करुणा ले के आए थे।। 3।।
अविद्या-सिन्धु से अगणित
जनों को पार करने को,
परम सुख-दायिनी सत्-ज्ञान-
नौका ले के आए थे।। 4।।
कोई माने न माने सच तो
यह ऋषि-राज ही पहले,

स्वराज-स्थापना का मन्त्र
सच्चा ले के आए थे।। 5।।

170

दयानन्द का धरती को

दयानन्द का धरती को संदेश सुनाओ।
पावन नित्य अनादि वैदिक नाद बजाओ।।
तुम जागो तो मानवता का भाग्य जगेगा।
पाप, ताप, पाखण्ड, धरा से द्वेष भगेगा।।
हो नव युग निर्माण जरा अरमान जगाओ।
ऋषियों की है शान, आज संकल्प तुम्हारे।
तुम भावी के प्राण, राष्ट्र के रखवारे।।
नाव पड़ी मँझधार आज तुम पार लगाओ।
साम-गान से गूँजें आज दिशाएँ सारी।
बाट तुम्हारी देख रही गैय्या महतारी।।
लेखराम की आग दिलों में फिर सुलगाओ।
श्यामलाल की चेतन मस्ती भूल न जाना।
ऋण ऋषियों का सिर पर है जो न बिसराना।।
ढोंग-ढाँग के दुर्ग धरा पर सकल गिराओ।
दयानन्द का धरती को सन्देश सुनाओ।।

171

दाता तेरे सुमिरन का

दाता तेरे सुमिरन का वरदान जो मिल जाये,
मुरझाई कली दिल की एक आन में खिल जाये।
सुनते हैं तेरी रहमत दिन-रात बरसती है,
इक बूँद जो मिल जाये, तकदीर बदल जाये।।

ये मन बड़ा चंचल है चिन्तन में नहीं लगता।
जितना इसे समझाऊँ, उतना ही मचल जाए।।
हे नाथ मेरे दिल की बस इतनी तमन्ना है।
पापों से बचा लेना, पाँव न फिसल जाए।।
देवत्व के फूलों से, दामन को मेरे भर दो।
जीवन ये सुगन्धित हो, दुर्गन्ध निकल जाए।।
अऐ! मानव तू दिल से प्रभु नाम का सिमरन कर।
दोषों भरे जीवन का काँटा ही बदल जाए।।

172

दशों दिशाओं में

दशों दिशाओं में माधुरी ऐसा वरदान दो प्रभो।
बहती हो सुख की सुरसरी ऐसा वरदान दो प्रभो।।
वायु मधुर-मधुर बहे, शीतल सुगन्ध हो लहे।
दुर्गन्धियों का नाश हो ऐसा वरदान दो प्रभो।।
नदियाँ, समुद्र, ताल सब मीठे जल से हों भरे।
समय-समय में वृष्टि हो ऐसा वरदान दो प्रभो।।
वृक्ष, लता, वनस्पति मीठे फलों से हों लदे।
भूमि हो शस्य-श्यामला ऐसा वरदान दो प्रभो।।
दिन हों मधुर निशा मधुर, सायं मधुर उषा मधुर।
भूमि के कण-कण में माधुरी ऐसा वरदान दो प्रभो।।
वाणी मधुर, हृदय मधुर, सारी मधुर हों भावना।
फैले सुबन्धु-भावना ऐसा वरदान दो प्रभो।।

173

दिल को तू साफ किये जा

दिल को तू साफ किये जा प्यारे !
प्रेम का प्याला पिये जा प्यारे !

नहीं संग चले काया, माया,
क्यों नाहक इतना इठलाया ?
दीनों को जिसने अपनाया,
वो कभी न जग में कलपाया।
दीनों को दान दिये जा प्यारे !
प्रेम का प्याला पिये जा प्यारे !

मत डर 'प्रकाश' ग़म, आफ़त से,
ले काम हमेशा हिम्मत से।
हो दूर गुलामी, ज़िल्लत से।
आजाद आबरू इज़्ज़त से।
तू सौ बरस तक जिये जा प्यारे !
प्रेम का प्याला पिये जा प्यारे !

174

दिया जिसने जन्म तुझको

दिया जिसने जन्म तुझको, उसी को भूल जाता है।
जमा है पास में जिसके, तेरे जीवन का खाता है।
करे जो कर्म प्रतिदिन तू, लिखा जाता वो सारा।
करे जैसा भरे वैसा, कर्मफल दे विधाता है।।1।।
सिफारिश काम न आए, जरूरत न गवाही की।
न चलती है कोई रिश्वत, न पीता है-पिलाता है।।2।।

किया जो जन्म-भर तूने, निकाला जाएगा खाता।
प्रकट हों सारी करतूतें जिन्हें जग में छिपाता है।।3।।
वही है न्याय करता, किसी को माफ नहीं करता।
न मिटता है लिखा 'राघव' सुनाए सत्यगाथा है।।4।।

175

देश का सेवक आर्य समाज

देश का सेवक आर्य समाज। धर्म का रक्षक आर्य समाज।
मार्ग दर्शक आर्य समाज। आनन्द वर्धक आर्य समाज।
चुनता है काँटे आर्य समाज। अमृत बाँटे आर्य समाज।
काटे जहालत आर्य समाज। हरे जलालत आर्य समाज।
जन हितकारी आर्य समाज। पर उपकारी आर्य समाज।
सत्याचारी आर्य समाज। प्रेम पुजारी आर्य समाज।
स्कूल चलावे आर्य समाज। विद्या पढ़ावे आर्य समाज।
गुरुकुल खोले आर्य समाज। ज्ञान टटोले आर्य समाज।
शुद्धि करावे आर्य समाज। आर्य बनावे आर्य समाज।
यज्ञ रचावे आर्य समाज। सन्ध्या सिखावे आर्य समाज।
दम्भ मिटावे आर्य समाज। व्यसन छुड़ावे आर्य समाज।
बिछुड़े मिलावे आर्य समाज। बिगड़ी बनावे आर्य समाज।
गिरते उठावे आर्य समाज। सबको बढ़ावे आर्य समाज।
प्रेम से बोले आर्य समाज। कभी न डोले आर्य समाज।
संकट झेले आर्य समाज। मौत से खेले आर्य समाज।
पर-दुःख ले ले आर्य समाज। जीवन मेले आर्य समाज।
दलितोद्धारक आर्य समाज। उन्नतिकारक आर्य समाज।
शुद्ध विचारक आर्य समाज। परम सुधारक आर्य समाज।
जान से प्यारा आर्य समाज। आँख का तारा आर्य समाज।
सबसे न्यारा आर्य समाज। 'पथिक' हमारा आर्य समाज।

176

देखो दीवाने लोग भी

देखो दीवाने लोग भी कैसा कमाल करते हैं।
पत्थर को ईश्वर की जगह पर इस्तेमाल करते हैं।
खुद ही बना लें मूर्ति, खुद बैठ के पूजा करें,
पूछो तो कह दें आप यह कैसा सवाल करते हैं।
मन्दिर का फाटक बन्द कर ताला लगा दें रात को,
समझें इसे परमात्मा पर देखभाल करते हैं।
इतने बड़े संसार का रखता है खुद खयाल जो,
कितने गजब की बात है उसका खयाल करते हैं।
पत्थर के हैं ये देवता फिर इनसे कैसा मांगना,
क्या जड़ पदार्थ भी कभी देकर निहाल करते हैं।
चाहे मिलें सौ नेमते चाहे इन्हें कुछ न मिले,
न तो करें यह शुक्रिया न ही मलाल करते हैं।
है 'पथिक' सच्ची बात पूजा ठाकुरों की लोग ये,
बुद्धि को अपने आप से बाहर निकाल करते हैं।

177

दुनिया की हर वस्तु

दुनिया की हर वस्तु भगवन् तेरी याद दिलाती है।
पत्ता - पत्ता, डाली - डाली, तेरे ही गुण गाती है।।

सुन्दर है तेरी यह माया, पृथ्वी सूरज चाँद बनाया।
पी-पी करे पपीहा, कोयल सुन्दर राग सुनाती है।।

ऋषियों-मुनियों ने है ध्याया, मन-मन्दिर में तुझको पाया।
जर्रे-जर्रे में आप समाया, ऋति यही बतलाती है।।

रंग-बिरंगे फूल खिलाये, नदियाँ नाले खूब चलाये।
हाथों बिना पहाड़ बनाये, समझ नहीं कुछ आती है।।

दुनिया है सुन्दर फुलवारी, फूल हैं जिसमें सब नर-नारी।
देख के रचना जनता सारी, जय-जयकार मनाती है।।

नदियों में सब जल ही जल है, बागों में सब फल ही फल हैं।
जंगल में सब हरियावल है, बदली मेह बरसाती है।।

आत्मा अपनी शुद्ध बनायें, वेद ज्ञान से लाभ उठायें।
मन-मन्दिर से 'नन्दलाल', आवाज यही अब आती है।।

178

दुनिया के मालिक

दुनिया के मालिक ख़ालिक हमारे। हम हैं तुम्हारे।
हम बेसहारों को दे दो सहारे। हम हैं तुम्हारे।
दुनिया के मालिक···

तेरे सिवा जग में दीनों का बन्धु कोई नहीं है।
तुम हो प्रभु हमको प्राणों से प्यारे। हम हैं तुम्हारे।
दुनिया के मालिक···

सुना है जमाने में जिस पर तुम्हारी नज़रे करम हो,
लगती है जाके वह किश्ती किनारे। हम हैं तुम्हारे।
दुनिया के मालिक···

जाएँ कहाँ पे हम सूझे न कोई दूजा ठिकाना,
हम आ गए दाता अब तेरे द्वारे। हम हैं तुम्हारे।
दुनिया के मालिक···

आशा है छोटी सी विनती हमारी प्रभु पूरी होगी,
"पथिक" खड़े दर पे झोला पसारे। हम हैं तुम्हारे।
दुनिया के मालिक…

179

दुनिया वालों पढ़कर देखो

दुनिया वालों पढ़कर देखो दुनिया खुली किताब है।
हर प्राणी के हर सवाल का मिलता यहीं जवाब है।
दुनिया वालों पढ़कर…
इस दुनिया में ही मिलता है एक सबक लासानी।
प्रभु दूध का दूध बनाता और पानी का पानी।
भले-बुरे सबके कर्मों का उसके पास हिसाब है।
दुनिया वालों पढ़कर…
कर्म - क्षेत्र में हर प्राणी का इम्तिहान होता है।
जब निकले परिणाम कोई हँसता कोई रोता है।
किसी का पर्चा ठीक हुआ तो किसी का हुआ खराब है।
दुनिया वालों पढ़कर…
एक सुखी और एक दुःखी बन पैदा हुआ जन्म से।
अन्तर क्यों है अभी तो दोनों वाक़िफ नहीं करम से।
पूर्वजन्म के पुण्य-पाप का फल ही मिला जनाब है।
दुनिया वालों पढ़कर…
यहाँ हमेशा परमेश्वर का न्याय-चक्र है चलता।
वह अपने निश्चित नियमों को हरगिज नहीं बदलता।
'पथिक' धतूरे की टहनी पर खिलता नहीं गुलाब है।
दुनिया वालों पढ़कर…

180
दुनिया में आने वाले

दुनिया में आने वाले ईश्वर के गुण गाते जाना।
उसकी कुदरत के आगे मस्तक झुकाते जाना।
लाखों कष्टों को सहना, मुख से कुछ भी न कहना।
काँटों पे चलते रहना लेकिन मुस्काते जाना। दुनिया···
किसने तन का यह हाला, सुन्दर साँचे में ढाला।
दी है साँसों की माला, मन में दुहराते जाना। दुनिया···
जीवन कागज की नैय्या, न जाने कौन खिवैय्या।
कैसे चलती है भैय्या, कुछ तो समझाते जाना। दुनिया···
किसकी मरज़ी से प्यारे, टिमटिम करते हैं तारे।
देता है कौन सहारे, सच-सच फरमाते जाना। दुनिया···
किसने फूलों में डाली, सुन्दर खुशबू और लाली।
ठहरो बगिया के माली, यह तो बतलाते जाना। दुनिया···
जैसा जो करके जाता, फल भी वैसा ही पाता।
'पथिक' जो है फलदाता उसको अपनाते जाना। दुनिया···

181
दुनिया वालों देव दयानन्द

दुनिया वालों देव दयानन्द दीप जलाने आया था।
भूल चुके थे राहें अपनी वो दिखलाने आया था।
घोर अंधेरा जग में छाया नजर नहीं कुछ आता था।
मानव मानव की ठोकर से जब ठुकराया जाता था।
आर्य जाति सोई पड़ी थी घर-घर जाकर जगाता था।
दुनिया वालों देव दयानन्द दीप जलाने आया था।

बँट गया सारा टुकड़े-टुकड़े भारत देश जागीरों में।
शासन करते लोग विदेशी जोश नहीं था वीरों में।
भारत माँ को मुक्त किया जो जकड़ी हुई थी जंजीरों में।
दुनिया वालों देव दयानन्द दीप जलाने आया था।

जब तक जग में चार दिशाएँ, कुदरत के ये नजारे हैं।
सागर, नदियाँ, धरती, अम्बर, जंगल, पर्वत सारे हैं।
'पथिक' रहेगा नाम ऋषि का जब तक चाँद सितारे हैं।
दुनिया वालो देव दयानन्द दीप जलाने आया था।
भूल चुके थे राहें अपनी वो दिखलाने आया था।।

182

दुनिया से जा रहा हूँ

दुनिया से जा रहा हूँ, रोको ए दुनिया वालो।
यम खैंचता है मुझको, पकड़ो इसे प्यारो।
नोटों के बीस बण्डल छाती पे मेरी रख दो।
धनवान् था मैं मुझको निर्धन न करके मारो।
तुम जानते हो मैं था कपड़े की मिल का मालिक।
तन पर हैं तीन वस्त्र उनको तो न उतारो।
इक मिनट भी अकेला मुझको न छोड़ते थे।
अब जा रहा हूँ तन्हा साथ आओ रिश्तेदारो।
कहते थे जो कि हम तो तेरे साथ ही मरेंगे।
अब कहाँ पे मर गये हैं उनको आवाज मारो।
देखे झमेले-मेले इक साथ खेल खेले।
इस यात्रा में मुझसे क्यों सरकते हो यारो।
मुझ नास्तिक को अब तो करने दो हरिदर्शन।
मन्दिर के आगे मेरी अर्थी जरा उतारो।
कानों के पास उसके जा 'नत्थासिंह' बोला।
उसने तुझे पुकारा तुम भी उसे पुकारो।

183

धर्म वैदिक है हमारा

धर्म वैदिक है हमारा, आर्य प्यारा नाम है।
वेद के अनुसार सारा, जग बनाना काम है।।
ब्रह्म की पूजा करें, भ्रम - भेद दूजा दूर कर।
सच्चिदानन्दादि, मंगल, मूल अज अभिराम है।।1।।
वेद का पढ़ना-पढ़ाना, परम पावन धर्म है।
सत्यविद्या का वहीं घर, विश्व विद्या धर्म है।।2।।
सत्य स्वीकृति, अनृत त्यागन में सदा उद्यत रहें।
धर्मनीति विचार से हो, सर्वदा सब काम है।।3।।
विश्व का उपकार करना, मुख्य यह उद्देश्य है।
सर्व सामाजिक समुन्नति में, कभी न विराम है।।4।।
विविध मत फैले हुए, करके सभी का सामना।
सत्य पर सबको चलावें, धर्म का संग्राम है।।5।।
वेदहित जीवन हमारा, वेदहित मरना भला।
वेदशाला शून्य कोई भी न होवे ग्राम है।।6।।
वेद 'सूर्य' प्रकाश में, ऋषि के प्रदर्शित मार्ग में।
प्राण भी जायें चले, पर धर्म में आराम है।।7।।

184

धर्म को पीस डाला

धर्म को पीस डाला पागलों ने, ढक लिया पाप के इन बादलों ने
मौन तोड़ा नहीं बहादुरों ने, शोरगुल कर रखा चिमगादड़ों ने।
परस्पर चील ज्यों झपटे हैं, एक थैली के चट्टे-बट्टे हैं।
आह! हालत बिगड़ती जा रही है, बाढ़ खेतों को खाये जा रही है।

सूखा निकला जिसे समझा हरा था,
स्वर्ण घट में हलाहल विष भरा था।
नाव चक्कर भँवर में खा रही है,
बिना माँझी के डूबी जा रही है।
सँभल कर के चलना है।। 1।।
भीड़ देखो ये फिल्म स्थानों पर, जमा जमघट रहे मयखानों पर।
नहीं प्रतिबन्ध गन्दे गानों पर, न परदा मांस की दुकानों पर।
राम के भक्त किधर जा रहे हैं, खड़े सड़कों पर अण्डे खा रहे हैं।
बचा करते थे जो परछाईयों से, वही भरपूर हैं बुराईयों से।
निकम्मे साधुओं की टोलियाँ हैं, बिना बारूद की यह गोलियाँ हैं।
फूल कागज के रंग-बिरंगे हैं, न खुशबू देखने में चंगे हैं।
सँभल कर के चलना है।। 2।।
मुलम्मा की चमक पर मोह न जाना,
अमोलक धर्म जीवन खो न जाना।
कोई अवतार बनकर आ रहा है,
कोई भगवान ब्याह रचा रहा है।
नशा नस-नस में जिनकी रम रहा है,
रंग बहुरूपियों का जम रहा है।
बोलबाला है रंगे स्यारों का, बढ़ा दल-बल है पाकिटमारों का।
माल बेखट उचक्के ढो रहे हैं, ये पहरेदार बेसुध सो रहे हैं।
लुटा देना न हीरों का खज़ाना, धधकती आग से तन को बचाना।
सँभल कर के चलना है।। 3।।
अधूरे सपने रामराज्य के हैं। कहीं दर्शन न लोक लाज के हैं।
वही पाउडर वही सुर्खी लगा के, युवतियाँ बाल अंग्रेजी कटा के।
पिता डैडी व मात मम्मी बनी, बिगड़ती जा रही है बात घनी।
युवक और युवतियों के गात नंगे,
इसी कारण यहाँ दिन-रात दंगे।
घूमते नौजवाँ फैशन बनाकर, लूट लेते छुरी-चाकू दिखाकर।

नहीं करता यहाँ कोई सुनाई, कहो किसकी चल देते दुहाई।
सँभल कर के चलना है।। 4।।
राम के राज्य में कोई चोर न था, लूट हत्या का कोई शोर न था।
पियक्कड़ मद्य के पाते नहीं थे, मांस अण्डा कभी खाते नहीं थे।
ऋषि-मुनियों से भूमि थी सुशोभित, यज्ञ-कर्मों पे थे देव मोहित!
वेद था धर्म कोई और न था, धूर्त पाखंडियों का दौर न था।
सभी थे एक ईश्वर के पुजारी, थी प्रथा देश में यज्ञों की जारी।
आज शुभ कर्म को भूला जमाना, पड़ा 'राघव' को गीत यह बनाना।
सँभल कर के चलना है।। 5।।

185

धन भी कमाये तूने

धन भी कमाये तूने भवन भी बनाये।
बोल तेरे साथ ये सामान कहाँ जाये।।

सोना चाँदी रुपया वस्त्र आदि,
सोफा मखमल बिछौने गलीचे।
कोठी बँगले बने अच्छे ढंग के,
कार मोटर दुकानें बगीचे।।
नहीं धन की कमी धाक अच्छी जमी,
मेरी - मेरी कहे भरमाये।। 1।।
कई ठेके खुले सरकारी,
बावली, धर्मशाला, कुआँ है।
सबके ऊपर स्वर्ण अक्षरों से,
नाम तेरा ही अंकित हुआ है।
छोटा हाथी भी है, बेटा नाती भी है,
देख जिनको न फूला समाये।। 2।।
तेरे जीवन के सुख साज सारे,
जिनको समझा है प्राणों से प्यारा।

एक दिन यही परिवार वाले,
देख शव को करेंगे किनारा।
घर से कर बाहर दें वस्त्र तक तार लें,
काया नंगी चिता में जलायें।। 3।।
जग के सामां यहीं छोड़ जाना,
साथ कोई नहीं ले के जाये।
जो कमाता है धन धर्म प्यारा,
लोक - परलोक में काम आये।
बात झूठी नहीं कहे 'राघव' सही,
जो ना माने वही पछताये।। 4।।

186

धन्य वही परिवार है

धन्य वही परिवार है, जिसमें सद्व्यवहार है।
घर में ही फिर स्वर्ग-सा सच्चा सौख्य अपार है।।

पिता-पुत्र, भाई-भाई सब आपस में मिल रहते हैं,
प्रीति, प्रतीति हृदय में रखते, कड़वे वचन न कहते हैं।
पिता पुत्र को प्यार करे, पुत्र परम सत्कार करे,
आत्मीयता, एकता जीवन का आधार है।।

बड़ा भ्रात छोटे भ्राता को सदा बराबर का जाने,
छोटा भी निज भ्राता को पूज्य जान आज्ञा माने।
यदि कोई कुछ कह देवे, दूजा उसको सह लेवे,
सच जानो संसार में सहनशीलता सार है।।

सास, बहू, जेठानी, देवरानी जितनी भी हैं महिलाएँ,
बोलें ऐसे बैन बज रही हों मानो मृदु वीणाएँ।
ना झगड़ा उत्पात करें, कभी न ओछी बात करें,
वहाँ शान्त वातावरण जहाँ द्वेष न रार है।।

सास बहू को समझे पुत्री, बहू सास जी को माता,
जेठानी, देवरानी में हो सगी बहन का-सा नाता।
सद्गुण वाली देवियाँ, कहलाती हैं लक्ष्मियाँ,
गृहस्थ के उद्धार का इन पर पूरा भार है।।

पत्नी पति को देव और पति समझे देवी पत्नी को,
कभी भूले से नहीं दुखावे जीवन-संगिनी के जी को।
पत्नी भी न दुराव रखे, पति के प्रति सद्भाव रखे,
दोनों में यदि मेल है जीवन नैय्या पार है।।

जहाँ सुशिक्षित, सभ्य बड़ें हों सभ्य वहाँ बच्चे होते,
जाति-सुधारक, धर्म-प्रचारक, देशभक्त सच्चे होते।
नहीं बुरी कोई लत है, डाली अच्छी आदत है,
जीवन उसका सात्विकी, जिसका उच्च विचार है।।

सत्पुरुषों का आदर, संध्या, अग्निहोत्र, सत्संग करे,
पत्थर पूजन, अंध भक्ति, भ्रम, भूत-प्रेत का भंग करे।
एक ईश आराधना, यम नियमों की साधना,
कहे 'लालमन' बने सकल मन स्वर्णिम फिर संसार है।।

187

धर्म कमाने जग में आए

धर्म कमाने जग में आए, खोटे कर्मों से डरियो।
जो नियम बनाए ऋषियों ने तुम मानते रहियो।।

मानव चोला दिया प्रभु ने, उत्तम कर्म कमाने को।
सुंदर ज्ञान दिया वेदों का, मार्ग सही बतलाने को।।
क्या कारण जो तुम्हें न भाए, जरा ध्यान तो धरियो।
जो नियम बनाए ऋषियों ने···

माया में फँसकर भूल गए नित रहते मौज उड़ाने को।
खाना-पीना याद रहा है, जाना ना कुछ जाने को।।
आग लगे तब कूप बनाए, बेकार यत्न करियो।
जो नियम बनाए ऋषियों ने···

बुरे काम करने वालों की, शान स्वयं मिट जाती है।
कोई मदद नहीं करता है, सब दुनिया ठुकराती है।।
कोई भी जन पास न आए, ऐसे जीने से मरियो।
जो नियम बनाए ऋषियों ने···

धर्म कमाने वालों का यश, अब तक गाया जाता है।
पापी रावण का पुतला, हर वर्ष जलाया जाता है।।
धर्म-गान 'नरदेव' सुनाए, पग पीछे ना धरियो।
जो नियम बनाए ऋषियों ने···

188

न मैं धाम

न मैं धाम धरती न धन चाहता हूँ।
कृपा का तेरी एक कण चाहता हूँ।।
रटे नाम तेरा वो चाहूँ मैं रसना।
सुने यश तेरा वो श्रवण चाहता हूँ।।1।।
विमल ज्ञान-धारा से मस्तिष्क उर्वर।
व श्रद्धा से भरपूर मन चाहता हूँ।।2।।
करे दिव्य दर्शन तेरा जो निरन्तर।
वही भाग्यशाली नयन चाहता हूँ।।3।।
नहीं चाहना है मुझे स्वर्ग-छवि की।
मैं केवल तुम्हें प्राणधन! चाहता हूँ।।4।।
'प्रकाश' आत्मा में अलौकिक तेरा है।
परम ज्योति ! प्रत्येक क्षण चाहता हूँ।।5।।

189

नमस्ते, नमस्ते, नमस्ते

नमस्ते, नमस्ते, नमस्ते, विधाता।
महादेव ईश्वर सकल सुख प्रदाता।।
सखा बन्धु सर्वस्व तुम नाथ मेरे।
अखिल विश्व के तुम पिता और माता।।
निराकार अविकार आधार सबके।
सदा शुद्ध निर्लेप है सर्वज्ञाता।।
उबारो दयालो महा नीच हूँ मैं।
कुकर्मों को कर याद आँसू बहाता।।

विपत्ति के बादल घिरे नाव डोले।
विभो दो सहारा न मन चैन पाता।।
मैं झोली पसारे खड़ा द्वार भगवन्।
विनय और श्रद्धा से सर हूँ झुकाता।।
मुझे भक्ति-भिक्षा दिला दो पिता जी।
तुम्हारी स्तुति के रहूँ गीत गाता।।
तिमिर को मिटा ज्ञान-ज्योति जगा दो।
तुम्हें पा सकूँ 'पाल' आनन्ददाता।।

190

नमस्ते निराकार

नमस्ते निराकार निर्गुण निरूपम्,
नमस्ते शिवं सत्य सुन्दर स्वरूपम्।
नमस्ते अगोचर अगम ओजदायक,
नमस्ते निरंजन निगम नीतिनायक।।
नमस्ते महेश्वर महामोक्षदाता,
नमस्ते विभो विश्वव्यापी विधाता।
नमस्ते सदा सच्चिदानन्द स्वामी,
नमस्ते नियन्ता 'भवानी' नमामि।।
हों असत् से दूर भगवन्, सत्य का वरदान दो।
दूर कर द्रुत तिमिर भगवन् शुभ्र ज्योति विहान दो।।
मृत्यु बन्धन को हटा, अमरत्व हे भगवान दो।
प्रकृति-पाशों से छुड़ा, आनंद मधु का पान दो।।

नर–नारी सब प्रातः–शाम

नर - नारी सब प्रातः - शाम।
भज लो प्यारे ओ३म् का नाम।। टेक

ओ३म् नाम का पकड़ सहारा,
जो है सच्चा पिता हमारा।
वह ही है मुक्ति का धाम,
भज लो प्यारे ओ३म् का नाम।। 1।।

कैसा सुन्दर जगत् रचाया,
सूर्य, चाँद, आकाश बनाया।
गुण गाता है जगत् तमाम,
भज लो प्यारे ओ३म् का नाम।। 2।।

पृथ्वी और पहाड़ बनाए,
नदियाँ - नाले खूब सजाए।
बिन कर कर्म करे निष्काम,
भज लो प्यारे ओ३म् का नाम।। 3।।

ऋषियों-मुनियों ने है ध्याया,
अन्त किसी ने न उसका पाया।
करते हैं उसको प्रणाम,
भज लो प्यारे ओ३म् का नाम।। 4।।

मन अपने को शुद्ध बनाओ,
विषय-विकारों से बच जाओ।
वेदों का यह ही फरमान,
भज लो प्यारे ओ३म् का नाम।। 5।।

हीरा जन्म गँवाओ न तुम,
'नन्दलाल' घबराओ न तुम।
सन्ध्या करो सुबह और शाम,
भज लो प्यारे ओ३म् का नाम।। 6।।

192

नमस्कार भगवान तुम्हें

नमस्कार भगवान तुम्हें भक्तों का बारम्बार हो।
श्रद्धारूपी भेंट हमारी मंगलमय स्वीकार हो।।
तुम कण-कण में बसे हुए हो तुझमें जगत् समाया है।
तिनका हो चाहे पर्वत हो सभी तुम्हारी माया है।।
तुम दुनिया के हर प्राणी के जीवन के आधार हो।। 1।।
सबके सच्चे पिता तुम्हीं हो तुम ही जगत् की माता हो।
भाई, बन्धु, सखा, सहायक, रक्षक, पोषक, दाता हो।।
चींटी से लेकर हाथी तक सबके सृजनहार हो।। 2।।
ऋषि-मुनि, योगी-जन सारे तुमसे ही वर पाते हैं।
क्या राजा क्या रंक, तुम्हारे दर पर शीश झुकाते हैं।।
परम-कृपालु, परम-दयालु करुणा के आधार हो।। 3।।
तूफानों से घिरे 'पथिक' प्रभु तुम्हीं एक सहारा हो।
डगमग-डगमग नैया डोले तुम्हीं नाथ किनारा हो।।
तुम खेवट हो इस नैया के और तुम्हीं पतवार हो।। 4।।

193

नमो वेद-विद्या

नमो वेद-विद्या के प्रकाश-कर्ता।
नमस्कार अज्ञान के नाश-कर्ता।।
नमस्कार बल बुद्धि के देने वाले।
नमस्कार दुःखों के हर लेने वाले।।
नमस्ते निरंजन, अविद्या विनाशक।
नमो सच्चिदानन्द, घट-घट में व्यापक।।

नमस्ते निराकार, निर्दोष नायक।
नमस्ते परम मित्र, सबके सहायक।।
निराकार, निराधार, मुक्ति के दाता।
तुम्हें है नमस्कार, सायं व प्रातः।।
नमो नस व नाड़ी के बन्धन से बाहर।
नमो सर्व-आधार, कृपा के सागर।।
यही माँगता आपका दास केवल।
कि शुद्धि हो हृदय में, बुद्धि हो निर्मल।।
रहे आपका चित्त में नित्य सुमिरन।
रहूँ करता वेदोक्त आज्ञा का पालन।।

194

नाथ तू ही एक

नाथ तू ही एक सारे विश्व का आधार है।
चल रहा तेरे इशारे पर सकल संसार है।
चाँद, सूरज और सितारे तेरी महिमा गा रहे,
तेरी शक्ति का कहीं कोई न पारावार है।
भर दिया अनगिनत रत्नों से समन्दर का हृदय,
और पृथ्वी का खजाना भी अनन्त अपार है।
सबके सब प्राणी बराबर हैं तुम्हारे सामने,
तू ही जड-चेतन का रक्षक तू ही पालनहार है।
वेद-वाणी से जमाने को सुसज्जित कर दिया,
सत्य-विद्याओं का जो सीमा रहित भंडार है।
इक हमें नर तन दिया, उस पर हजारों नेमतें,
क्या कहें कितना बड़ा हम पर तेरा उपकार है।
आ रहे कितने 'पथिक' दुनिया में जीने के लिए,
है सफल जीवन उसी का, जिसका तुमसे प्यार है।

195

नाम प्रभु का प्यारा ओ३म्

नाम प्रभु का प्यारा ओ३म्, प्यारा ओ३म्, प्यारा ओ३म्।
दाता पालनहारा ओ३म्, प्यारा ओ३म्, प्यारा ओ३म्।
दूध में है घी, सितार के सुरों में राग है।
तेल है तिलों में, जैसे पत्थर में आग है।
कण-कण में विस्तारा ओ३म्, प्यारा ओ३म्, प्यारा ओ३म्।
नाम प्रभु का प्यारा ओ३म् ···
जो विराजमान है आकाश में, पाताल में।
एक-सा भविष्य, वर्तमान, भूतकाल में।
अमृत रस की धारा ओ३म्, प्यारा ओ३म्, प्यारा ओ३म्।
नाम प्रभु का प्यारा ओ३म्···
ओ३म् इष्टदेव पूजनीय है जहान का।
और कहीं दूसरा न कोई जिसकी शान का।
कुल दुनिया से न्यारा ओ३म्, प्यारा ओ३म्, प्यारा ओ३म्।
नाम प्रभु का प्यारा ओ३म्···
सूर्य और चाँद जिसकी आरती उतारते।
नेति-नेति कह के जिसको वेद भी पुकारते।
'पथिक' सबका सहारा ओ३म्, प्यारा ओ३म्, प्यारा ओ३म्।
नाम प्रभु का प्यारा ओ३म्···

196

निरखते थे हम

(पिता का पुत्र एवं पुत्रवधू को आशीर्वाद तथा उपदेश)

निरखते थे हम बाट जिसकी निरन्तर,
वही शुभ घड़ी आज प्रभु ने है दिखाई।
बजी शहनाई मधुर गान मंगल,
उमड़ मेघ आनन्द हुए सौख्यदायी।।

मधुर मंजु दो मानसों का मिलन ये,
पर-ब्रह्म माया का शुचि मेल मानो।
है ये ग्रन्थि बन्धन, स्वकर्त्तव्य बन्धन,
इसे बालकों का न तुम खेल जानो।।

गृहस्थ - आश्रम की बड़ी जिम्मेदारी,
तुम्हारे भी कन्धों पे अब आ पड़ी है।
अगर स्नेह, साहस से बढ़ते रहे तुम,
तो कर लोगे तय माना मंजिल कड़ी है।।

बनाने तुम्हें और भी साथी होंगे,
तुम्हीं तक न सीमित रहें सुख की घड़ियाँ।
न अपने ही भीगे पलक देखना तुम,
अजी देखना विश्व की अश्रु लड़ियाँ।।

सुखद स्वर्ग-सौन्दर्य सम्मुख तुम्हारे,
सुदृढ़ शत्रु अनुकूल, प्रतिकूल होंगे।
रहे ध्यान इस विश्व की वाटिका में,
मृदुल फूल होंगे, कुटिल शूल होंगे।।

मगर सावधानी से तुम काम लेना,
सदा रखना संयम, परम धैर्य गहना।
महा-मोह-माया जनित भव-जलधि में,
कमल-पुष्प के तुल्य निर्लिप्त रहना।।

भले वायुयानों में तुम बैठ कर के,
विशद व्योम के चाँद-तारों को छू लो।
भले ही सुखों के हिंडोलों में झूलो,
मगर पूज्य भगवान् को तुम न भूलो।।

उसी परम भक्ति, आराधना से,
सकल विघ्न, भय, क्लेश होते निवारण।
वही सुख का कारण, वही तरणि-तारण,
उसे भूलना सब दुखों का है कारण।।

वही एक अनुपम सकल सौख्यराशी,
परम देव प्रभु है सभी में समाया।
घृणा, बैर करना वृथा क्यों किसी से,
सभी अपने हैं, है न कोई पराया।।

करो मन-वचन-कर्म से नित परस्पर,
सरस-स्नेह व्यवहार ही दोनों प्राणी।
मिलो इस तरह जैसे पानी से पानी,
रहे याद वेद की यह दिव्य वाणी।।

मिटाओ सकल राष्ट्र के विघ्न-बाधा,
प्रतापी - प्रबल - पुरुष - शार्दूल बनकर।
सदा तन से और मन से, धन से स्वजन के,
हरो ताप अभिशाप सुख-मूल बनकर।।

नयन में सभी के समाते रहो तुम,
न खटको अकारण कठिन शूल बनकर।
करो सद्गुणों की सुगंधि से सुरभित,
सदा विश्व-उपवन को तुम फूल बनकर।।

सुखों के प्रसंगों में इठला न जाना,
दुःखों के बवण्डर में घबरा न जाना।
न क्षमता को तजना, प्रभु नाम भजना,
गरज यह कि हर हाल में मुस्कराना।।

रहो स्वस्थ, सम्पन्न सुख-सम्पदा से,
व्यथा, रंज, रोगों से रीते रहो तुम।
रहो दूर तुम वैर - वातावरण से,
प्रचुर प्रेम - पीयूष पीते रहो तुम।।
सुखद स्नेह के सूत्र में सर्वदा ही,
दुखी-जन के दामन को सीते रहो तुम।
'प्रकाशार्य' की कामना सौ वर्ष लौ,
युगल वर-वधू जग में जीते रहो तुम।।

197

नियम न तोड़ा

(मूल शंकर का गृह-त्याग)

नियम न तोड़ा, जननी माँ का प्यार भरा दिल तोड़ दिया।
एक ईश्वर के बन्दे ने ईश्वर से नाता जोड़ लिया।
माता-पिता मूलशंकर का ब्याह कराना चाहते थे।
मगर मूलशंकर गृहस्थ-बन्धन से बचना चाहते थे।।
भंग किया माया-कुचक्र, सपनों को मरोड़ दिया।।1।।
देखो जग में जगह-जगह पर अड्डे बने विधर्मियों के।
पवित्र वेद-मन्त्रों के कहते ये हैं गीत गड़रियों के।।
बिछा रखा था जाल भूल का, आकर उसे सिकोड़ दिया।।2।।
विषधर, मणिधारी भुजंग जो बामी अंदर बसते थे।
मौका पा भोली जनता को निर्भय होकर डसते थे।
वेद की बीन बजाकर उनका सारा जहर निचोड़ दिया।।3।।
देख-देखकर हालत जग की चैन न उनको पड़ता था।
जिसको सच्चा मार्ग बताया, उल्टा वही अकड़ता था।
फिर भी आगे बढ़ा निरन्तर, पाखंड का सिर फोड़ दिया।।4।।

चला घूमता जंगल, बस्ती, गाँव, शहर, बाजारों में।
रहा चमकता ऋषि अकेला, ज्यों चन्द्रमा सितारों में।
वेद-विरुद्ध मतों को, 'राघव' ऋषि ने खूब झिंझोड़ दिया।।5।।

198

निराकार, निर्विकार

निराकार, निर्विकार सकल भुवन सृजनहार।
अजर, अमर, एक, सार।। भज...
शेष सर्वशक्तिमान्, कर्त्ता, करुणानिधान।
सुर, नर, मुनि धरत ध्यान, पावत आनँद अपार।।
पूज्य ब्रह्म, प्रणतपाल, व्यापक, पूर्ण, विशाल।
वरुण, इन्द्र, रुद्र, काल, शुद्ध, बुद्ध गुणागार।। भज...
ज्ञान-गम्य, गुरु, गणेश, खलदल-वारक, महेश।
भजत-जपत मिटत क्लेश, कर 'प्रकाश' नमस्कार।

199

नित्य ज्ञान की

नित्य ज्ञान की निर्मल धारा, पावन वैदिक धर्म हमारा।
शुभ सुखदायिनी, जन-कल्याणी। परम देव की प्यारी वाणी।।
मिटे सकल मन का अँधियारा...
परमेश्वर की देन मनोहर, ऋषि-मुनियों की अमर धरोहर।
करता जन-मन में उजियारा...
मानवता का यह उपवन है। रामकृष्ण का गौरव धन है।।
यह जीवन आधार हमारा...
जिस हित निकले ऋषि अकेले। कष्ट कठोर मुनि ने झेले।।

श्यामलाल ने जीवन वारा...
निश्चित निश्चय कर के निकलो। युग की धारा मिलकर बदलो।।
गूँजे यह जयनाद हमारा...
आओ वैदिक ध्वज लहरायें। लेखराम का पथ अपनायें।।
देकर अरुण रक्त की धारा...

200

नेकी के कर्म कमा जा रे

नेकी के कर्म कमा जा रे दुनिया से जाने वाले।
यह तन तेरा तरुवर है नेकी एक क्षीर सागर है।
इस तरुवर के फल खा जा रे, दुनिया से जाने वाले।।1।।
यह धन, यौवन संसारी है दो दिन की फुलवारी।
कोई खुशरंग फूल खिला जा रे दुनिया से जाने वाले।।2।।
तुझसे धन अंत छुटेगा, जाने किस राह लुटेगा।
इसे परहित हेतु लगा जा रे दुनिया से जाने वाले।।3।।
जग-सेवा है सुख-देवा, कर दीन-दुखी की सेवा।
यश पाना है तो पा जा रे दुनिया से जाने वाले।।4।।
ये कंचन काया तेरी, हो अंत राख की ढेरी।
इससे जो बने बना जा रे दुनिया से जाने वाले।।5।।

201

परम पुरातन वेद

परम पुरातन वेद की वाणी से कल्याण।
वेद ईश्वरीय ज्ञान है, है ये स्वतः प्रणाम।।
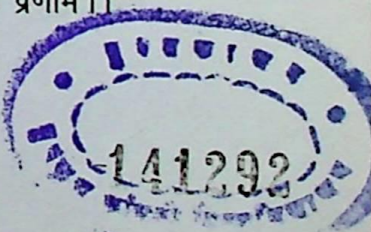
है स्वतः प्रमाण, वेद पथ को अपनाओ।
वैदिकधर्मी बनकर जीवन सफल बनाओ।।
कहे स्वरूपानन्द वेद के सुनिए प्रवचन।
सत्यार्थ की ज्योति वेद है परम पुरातन।।

यज्ञादि शुभ श्रेष्ठतम, धारण कर पट पीत।
सभी आर्यजन बदलते, पहिने नव उपनीत।।
पहिने नव उपनीत, वेद की कथा श्रवण कर।
होय अग्रसर, चढ़े उन्नति शैल-शिखर पर।।
वेद पाठ करते हैं, प्रभु-चिन्तन इत्यादि।
सुन्दर सम्भाषण, श्रेष्ठ कर्म होता है यज्ञादि।।

202

पराधीनता का सदियों से

1. पराधीनता का सदियों से पड़ा हुआ था साया।
चारों और जहालत नाचे अंधकार था छाया।
चोर-लुटेरे लूट रहे थे जीवन का सरमाया।
कि सोते जाग उठे, सूरज बन ऋषि आया...
2. आन लगे काशी नगरी में शास्त्रार्थ के मेले।
बैठ गई चाण्डाल चौकड़ी, पोप, गुरु और चेले।
ठग्गी, धोखा, ढोंग, चालाकी, दाँव-पेच सब खेले।
कि फिर भी जीत गए योगीराज अकेले...
3. खुदगर्जों ने कदम-कदम पर बिखराए थे काँटे।
अपने ही घर के लोगों से कुछ बदकिस्मत छाँटे।
छुआछूत का भूत भगाया मार-मारकर चाँटे।
कि बिछड़े आन मिले प्यार-मुहब्बत बाँटे...

4. नारी जाति की शिक्षा के बन्द हुए थे द्वारे।
अनपढ़ता ने देश के अन्दर अपने पैर पसारे।
ऋषि ने आ के तर्क-हथौड़े जोर-जोर से मारे।
कि ताले टूट गए, रहे देखते सारे···

5. भारत में सबसे पहले कन्या विद्यालय खोले।
विधवा और अनाथों के जीवन में अमृत घोले।
हुए 'पथिक' जब ऊँचे मस्तक, लोग खुशी से डोले।
कि ऋषि दयानन्द की नर - नारी जय बोले···

203

पक्षपात से रहित जहाँ पर

पक्षपात से रहित जहाँ पर नर-नारी व्यवहार करें।
न्याय-आचरण करके सारे दुख-सागर से पार तरें।।
सत्य वचन बोलें, ईश्वर की आज्ञा से ना कभी टरें।
वैदिक-पथ न छोड़ें, चाहे जीवें अथवा अभी मरें।।
यही धर्म की परिभाषा है, जो इसको अपनाएँगे।
उसी देश के नर-नारी 'नरदेव', सदा सुख पाएँगे।।

204

पास रहता हूँ तेरे सदा

पास रहता हूँ तेरे सदा मैं अरे!
तू नहीं देख पाए तो मैं क्या करूँ?
मूढ़ मृग-तुल्य चारों दिशाओं में तू
ढूँढ़ने मुझको जाए तो मैं क्या करूँ?

कोसता दोष देता मुझे है सदा
मुझको ये न दिया, मुझको वो न दिया।
श्रेष्ठ सबसे मनुज-तन तुझे दे दिया
सब्र तुझको न आए तो मैं क्या करूँ?

तेरे अन्तःकरण में विराजा हुआ
कर न यह पाप, करता हूँ संकेत मैं।
लिप्त विषयों में हो सीख मेरी भली
ध्यान में तू न लाए तो मैं क्या करूँ?

जाँच अच्छे-बुरे की तुझे हो सके
इसलिए बुद्धि मैंने तुझे दी अरे!
किन्तु तू मन्दभागी अमृत छोड़कर
घोर विष आप खाए तो मैं क्या करूँ?

फूल, फल, शाक, मेवा व दुग्धादि सम
मधुर आहार मैंने तुझे हैं दिए।
तू तम्बाकू, अमल, मद्य, मांसादि खा
रोग तन में बसाए तो मैं क्या करूँ?

सरस सुखकर पदार्थों सुदृश्यों भरा
विश्व सुन्दर 'प्रकाशार्य' मैंने रचा।
अपनी करतूत से स्वर्ग-वातावरण
नरक तू ही बनाए तो मैं क्या करूँ?

205

पी–पी करता बता तेरा

पी-पी करता बता तेरा कौन पिया?
बोला मेरा 'प्रकाश' वही है पिऊ।
ओ३म् भूः, ओ३म् भूः, ओ३म् भूः, ओ३म् भूः।।

वही आकाश, घन, गिरी - शृंगों में है।
वही सिन्धु की तरल तरंगों में है।
वही बाग, तड़ाग, विहंगों में है।
वही रमा हुआ सब रंगों में है।
फूलों में बसी है उसकी खुशबू।
ओइम् भूः, ओइम् भूः, ओइम् भूः ,ओइम् भूः ।।
वही पूर्ण ब्रह्म, करुणा - सिन्धु।
वही प्रणतपाल, प्रिय प्राण प्रभु।।
वही राजों का राजा, गुरुओं का गुरु।
वही बन्धु, सखा, वही मात-पितु।।
ओइम् भूः, ओइम् भूः, ओइम् भूः, ओइम् भूः ।।

206

प्रभु मेरे जीवन का

प्रभु मेरे जीवन का उद्धार कर दो।
भँवर में है नैय्या इसे पार कर दो।
मेरी इन्द्रियाँ हों सदा मेरे वश में,
मेरे मन पे मेरा ही अधिकार कर दो।
ना शुभ कर्म करने में पीछे रहूँ मैं,
कुकर्मों से मुझको खबरदार कर दो।
मैं गाऊँ सदा वेद की ही ऋचाएँ,
कि तन-मन में वेदों का संचार कर दो।
मेरा सर झुके तो झुके तेरे दर पर,
मुझे ऐसा दुनिया में सरदार कर दो।
मैं समझूँ ना जग में किसी को बेगाना,
मेरा विश्व-भर के लिए प्यार कर दो।

'पथिक' राह में हो कोई दीन-दुखिया,
मदद के लिए मुझको तैयार कर दो।
प्रभु मेरे जीवन का उद्धार कर दो।
भँवर में है नैय्या इसे पार कर दो।

207

प्रभु जी हमें

प्रभु जी हमें एक तेरा सहारा।
है तूने बनाया यह संसार सारा।।
यह नदियाँ व पर्वत बनायें हैं तूने।
चमकता है चाँद और सूरज-सितारा।। प्रभु...
दिया वेद का ज्ञान तूने है हमको ।
फूलों-फलों में देखते हैं नजारा।। प्रभु...
तेरी कृपा से चोला मनुष्य का पाया।
तेरी भक्ति में बीते जीवन हमारा।। प्रभु...
न मन में बुरे भाव आयें हमारे।
न शुभ कर्म से होवे हरगिज किनारा।। प्रभु...
करें हवन-सन्ध्या, पढ़ें वेद-वाणी।
तेरे प्रेम की ही बहे मन में धारा।। प्रभु...
तेरे लाल के पाप सब छूट जायें।
जरा-सा भी हो जाए तेरा इशारा।। प्रभु...

208
प्रभु भक्ति में प्यारे

प्रभु भक्ति में प्यारे मन को लगाए जाना।
भक्ति के गीत सुन्दर प्रेम से गाए जाना।।
वेदों की जो वाणी दुनिया में है लासानी।
वेदानुसार अपना जीवन बनाए जाना।। 1।।
सन्ध्या व हवन करना, वेदों को रोज पढ़ना।
ईश्वर है एक सबको यह ही सुनाए जाना।। 2।। भक्ति...
ईश्वर को छोड़ पूजा पत्थर की करते हैं जो।
प्रेम से उनको सीधा मार्ग दिखाए जाना।। 3।। भक्ति...
प्रेम से सुन लो वीरो विनती 'नन्दलाल' की है।
वेदों का अमृत सारे जग को पिलाए जाना।। 4।। भक्ति...

209
प्रभु तेरे चरणों में

प्रभु तेरे चरणों में हम सर झुकायें।
दो वरदान तेरे सदा गीत गायें।।
खिलें फूल नेकी के बनकर जहाँ में।
हँसें आप भी और जहाँ को हँसायें।।
प्रभु तेरे...
सदा बोलें मीठी प्रिय सत्य वाणी।
कटु बोलकर न कभी दिल दुखायें।।
प्रभु तेरे...
करें दीन-दुखियों की सेवा भलाई।
सदा देश-जाति के हम काम आयें।।
प्रभु तेरे...

सच्चाई की राह में बढ़ें 'वीर' बनकर।
कभी भूलकर न तुम्हें भूल जायें।।
प्रभु तेरे...

210
प्रभु निराकार है

प्रभु निराकार है, लेता ना अवतार है
हर प्राणी में रमा हुआ है, जग का पालनहार है।
जिसने यह संसार रचाया, उसकी रचना करते हैं।
सन्दर-सुन्दर कपड़े, जेवर पहनाकर के धरते हैं।
प्रतिमा करते त्यार हैं, कहते यह करतार हैं,
शंख बजाकर पीतल कूटें, करते जय-जयकार हैं।। 1।।
जो जग का है पालनकर्ता, उसका पालन करते हैं।
उसकी भूख मिटाने को भोजन भी आगे धरते हैं।
कैसा गलत विचार आया है, करके बन्द किवार हैं,
भोग लगायें प्रेम से, कहें पुकार-पुकार हैं।। 2।।
पत्थर तक के कीड़ों को भी भोजन प्रभु पहुँचाता है।
है बुद्धि मति मन्द उसे जो प्रतिदिन भोग लगाता है,
वह सच्चा करतार है, जिसको ना एतबार है,
डूबेगा मँझधार में ना होगा बेड़ा पार है।। 3।।
जैसा कोई कर्म करे प्रभु वैसा न्याय चुकाता है।
छिपा नहीं रह सकता सारा लिखा बही में पाता है।
जीवन हो बेकार है, प्रभु से ना गर प्यार है,
'राघव' उस अपरम्पारी की माया अपरम्पार है।। 4।।

211

प्रभु कृपा फिर लाई

प्रभु कृपा फिर लाई संक्रान्ति पर्व सुखदाई।
सबको बहुत बधाई संक्रान्ति पर्व सुखदाई।
यह है पावन पर्व हमारा।
चला हुआ ऋषियों के द्वारा।
जिसने शान बढ़ाई। संक्रान्ति पर्व सुखदाई···
पृथ्वी, सूरज, चाँद, सितारे।
गति करते सारे के सारे।
यह प्रभु की प्रभुताई। संक्रान्ति पर्व सुखदाई···
बीत गया है पौष महीना।
सूरज का रथ रुके कभी ना।
करता रहे चढ़ाई। संक्रान्ति पर्व सुखदाई···
माघ महीना खुशियाँ लावे।
मन निर्मल, तन शुद्ध बनावे।
ईश्वर बने सहाई। संक्रान्ति पर्व सुखदाई···
यज्ञ करें सत्संग रचावें।
वेद पढ़ें और वेद पढ़ावें।
होवे सफल कमाई। संक्रान्ति पर्व सुखदाई···
आपस में मिल-जुल के रहना।
यही 'पथिक' जीवन का गहना।
बात समझ में आई। संक्रान्ति पर्व सुखदाई···

212

प्रभु जी इतनी–सी दया

1. प्रभु जी इतनी - सी दया कर दो हमको भी तुम्हारा प्यार मिले,
   कुछ और भले ही मिले न मिले प्रभु दर्शन का अधिकार मिले।
2. जिस जीवन में जीवन ही नहीं वह जीवन भी क्या जीवन है,
   जीवन तब जीवन बनता है जब जीवन का आधार मिले।
3. सब कुछ पाया इस जीवन में बस एक तमन्ना बाकी है,
   हर प्रेम-पुजारी को अपने मन-मन्दिर में दातार मिले।
4. जिसने तुमसे जो कुछ माँगा उसने है वही तुमसे पाया,
   दुनिया को मिले दुनिया लेकिन भक्तों को तेरा दरबार मिले।
5. हम जन्म-जन्म के प्यासे हैं और तुम करुणा के सागर हो,
   करुणानिधि से करुणा-रस की इक बूँद हमें इक बार मिले।
6. इस मार्ग पर चलते-चलते सदियाँ ही नहीं युग बीत गए,
   मिल जाए 'पथिक' मंजिल अपनी हमको जो तुम्हारा द्वार मिले।

213

प्रभु तुम अणु से भी

प्रभु तुम अणु से भी सूक्ष्म हो, प्रभु तुम गगन से विशाल हो।
मैं मिसाल दूँ तुम्हें कौन-सी, दुनिया में तुम बेमिसाल हो।
प्रभु तुम अणु से भी···
हर दिल में तेरा धाम है, और न्याय ही तेरा काम है।
सबसे बड़ा तेरा नाम है, जगनाथ हो जगपाल हो।
प्रभु तुम अणु से भी···

तुम साधकों की हो साधना, या उपासकों की उपासना।
किसी भक्त की मृदु भावना, या किसी कवि का ख्याल हो।
प्रभु तुम अणु से भी···
मिले सूर्य को तेरी रौशनी, खिले चाँद में तेरी चाँदनी।
सब पर दया तेरी पावनी, प्रभु तुम तो दीन-दयाल हो।
प्रभु तुम अणु से भी···
तुझ पर किसी का न जोर है, तेरा राज्य ही सभी ओर है।
तेरे हाथ सबकी ही डोर है, तुम्हीं जिन्दगी तुम्हीं काल हो।
प्रभु तुम अणु से भी···
जो खतम न हो वह किताब हो, बेशुमार हो बेहिसाब हो।
जिसका कहीं न जवाब हो, उलझा हुआ वह सवाल हो।
प्रभु तुम अणु से भी···
कोई न तुझे रिझा सका, तेरा पार न कोई पा सका।
न 'पथिक' वह गीत ही गा सका जिसमें तेरी सुरताल हो।
प्रभु तुम अणु से भी···

214

प्रभु जी तेरी महिमा अपरम्पार

प्रभु जी तेरी महिमा अपरम्पार।
भाँति-भाँति के फूल जो सारे, जिनका वार न पार।
फलों में अमृत ऐसा, प्रीतम को जाने तब सार।। प्रभु जी०
रवि-शशि और तारे सारे, चमकत हैं दिन-रात।
चाहे शीतल पवन चला दे, चाहे जलन अपार।। प्रभु जी०
बाग में पौधे सींचत सूखे, पर्वत अजब बहार।
नदियाँ-नाले सब गुण गाएँ, झर-झर-झर दिन-रात।। प्रभु जी०
मैं भी हूँ 'जिज्ञासु' स्वामी आई तेरे द्वार।
चाहे तो दुत्कार दे भगवन् चाहे रख चौकीदार।। प्रभु जी०

215

प्रभु को विसार किसकी

प्रभु को विसार किसकी आराधना करूँ मैं?
पा कल्पतरु किसी से क्या याचना करूँ मैं?
मोती मुझे मिला जब मानस के मानसर में।
कंकर बटोरने की क्यों कामना करूँ मैं।।
सबके परम पिता जब घट-घट में रम रहे हैं।
लघु जान क्यों किसी की अवहेलना करूँ मैं।।
मुझको 'प्रकाश' प्रतिपल आनन्द आन्तरिक है।
जग के क्षणिक सुखों की क्यों चाहना करूँ मैं।।

216

प्रभो अपनी पूजा का

प्रभो अपनी पूजा का अधिकार देना
अधिकार के साथ सुविचार देना।
अल्पज्ञ हैं, भूल संभव है हमसे
सँभलने का अपने ही आधार देना।।
पुनः जन्म मानव का पायें यदि हम
हमें सच्चे भक्तों का परिवार देना।।
रही मातृभूमि जो ऋषियों की प्यारी
हमें जन्म इसमें ही हर बार देना।।

217

प्रबल पाखण्डों का

प्रबल पाखण्डों का प्रकोप छाया पृथ्वी पे
पोप व पुजारियों का सब जग चेला था।
1—फैले कई पन्थ कोई किरानी, कुरानी बने
बोसे निन्यानवे मतों का जहाँ झमेला था।
2—आया था एक वो तपस्वी बाल-ब्रह्मचारी
पत्थर-बौछार को भी फूलमय झेला था।
3—सारे ही संसार के निवासी एक ओर एक
और वो लंगोटबन्द दयानन्द अकेला था।

218

प्रातः उठ के जो प्रभु

प्रातः उठ के जो प्रभु गुण गाएगा।
वो ही जग में अमर फल पाएगा।
चलें आँधियाँ हजार, टूटें गमों के पहाड़,
कोई अपनी जगह से न हिलाएगा।
प्रातः उठ के जो प्रभु गुण...
दुःख - दर्द सभी मिट जाएँ।
पग चूमती रहें सफलताएँ।
लिए मन में लगन, हुआ धुन में मगन,
उस प्रभु की शरण में जो आएगा।
प्रातः उठ के जो प्रभु गुण...
यह दुनिया है किसने बनाई।
कोई कारीगर देवे न दिखाई।

इसे पालता है कौन व सम्भालता है कौन,
सभी उलझनों का भेद खुल जाएगा।
प्रातः उठ के जो प्रभु गुण…
तुम चाहो जो 'पथिक' सुख पाना।
कभी और किसी द्वार पे न जाना।
भरे प्रभु के भण्डार, धुआँधार लगातार,
चहुँ ओर से आनन्द बरसाएगा।
प्रातः उठ के जो प्रभु गुण…

219
प्रेमी भरकर प्रेम में

प्रेमी भरकर प्रेम में ईश्वर के गुण गाया कर।
मन मन्दिर में गाफिला, झाड़ू रोज लगाया कर।।

सोने में तो रात गुजारी, दिन-भर करता पाप रहा,
इसी तरह बरबाद तू बन्दे, करता अपना आप रहा।
प्रातः समय उठ ध्यान से सत्संग में तू जाया कर।।
प्रेमी भरकर प्रेम…

नर-तन के चोले का पाना बच्चों का कोई खेल नहीं,
जन्म-जन्म के शुभ कर्मों का होता जब तक मेल नहीं।
नर-तन पाने के लिए उत्तम कर्म कमाया कर।।
प्रेमी भरकर प्रेम…

पास तेरे है दुखिया कोई, तूने मौज उड़ाई क्या,
भूखा-प्यासा पड़ा पड़ोसी, तूने रोटी खाई क्या।
पहले सबसे पूछकर, फिर तू भोजन खाया कर।।
प्रेमी भरकर प्रेम…

देख दया उस परमेश्वर की, वेदों का जिसने ज्ञान दिया,
'देश' तू मन में सोच जरा तो कितना कल्याण किया।
सब कर्मों को छोड़कर ईश्वर को तू ध्याया कर।।
प्रेमी भरकर प्रेम में...

220

फहराए विश्व-भर में

फहराए विश्व-भर में प्रिय ओ३म् ध्वज हमारा।
हर प्रान्त में, नगर में, बस्ती में और घर में।।
वन में, विकट समर में, फहराए विश्व-भर में।
प्रिय ओ३म् ध्वज हमारा।।
फहराए विश्व-भर में प्रिय ओ३म् ध्वज हमारा।।
यह ईश-ज्ञान वाला, वैदिक विधान वाला।।
गौरव गुमान वाला, यह आन-बान वाला।
प्रिय ओ३म् ध्वज हमारा।।
फहराए विश्व-भर में प्रिय ओ३म् ध्वज हमारा।।
आँखों का यही तारा, प्राणों का यही प्यारा।।
दिल का यही सहारा, दुनिया में सबसे न्यारा।
प्रिय ओ३म् ध्वज हमारा।।
फहराए विश्व-भर में प्रिय ओ३म् ध्वज हमारा।।
खंजर कोई चलाए, घर - द्वार भी जलाए।।
यह सर 'प्रकाश' जाए लेकिन न झुकने पाए।।
प्रिय ओ३म् ध्वज हमारा।।
फहराए विश्व-भर में प्रिय ओ३म् ध्वज हमारा।।

221

बड़ों को सदा सिर

बड़ों को सदा सिर झुकाया करेंगे।
न ईश्वर को दिल से भुलाया करेंगे।
निकम्मा बना देगी–संगत बुरों की,
भलों की ही संगत में जाया करेंगे।
बुरे बालकों में कभी हम न बैठें,
उन्हें पास अपने न लाया करेंगे।
बुरी बात न हम सुनेंगे किसी की,
किसी को बुरा न सुनाया करेंगे।
करें दिल्लगी न किसी से कभी हम,
भलाई में दिल को लगाया करेंगे।
फिरेंगे न गलियों में आवारा बनकर,
अकेले न मेले में जाया करेंगे।
चमक और दमक से न सम्बन्ध रखें,
चलन सादगी का दिखाया करेंगे।
जगत के पिता से करेंगे हमेशा,
कभी न किसी को सताया करेंगे।

222

बढ़ो आर्य पुरुषो!

बढ़ो आर्य पुरुषो! ध्वजा ओ३म् की ले,
जगत को जगाने का अवसर यही है।
दयानन्द ऋषि का सुसन्देश घर-घर,
सभी को सुनाने का अवसर यही है।
तुम्हीं धार्मिक, शैक्षणिक, राजनैतिक,
व राष्ट्रीय कार्यों में आगे रहे हो।

विविध शक्तियों का सदुपयोग करके,
भविष्यत् बनाने का अवसर यही है।
बढ़े जा रहे धूर्त भगवान् ऐसे,
यहाँ जिस तरह चारपाई मे खटमल।
इन्हीं के फंसे जाल में कोटि भोले,
जनों को छुड़ाने का अवसर यही है।
न वर योग्य पातीं यहाँ लड़कियाँ हैं,
कई जहर खातीं व रहती हैं क्वाँरी।
दहेजादि दुखदायिनी घोर घातक,
प्रथाएँ मिटाने का अवसर यही है।
कहो देवियों से, तजें मोह-निद्रा
बनें सर्वगुण भूषिता, शान्त, सबला।
महाराज 'मनु' के वचन सम प्रतिष्ठा,
व सम्मान पाने का अवसर यही है।
बढ़ो आर्य पुरुषो ! ध्वजा ओ३म की ले,
जगत को जगाने का अवसर यही है।

223

बन्देया तू ओ३म् नाम

बन्देया तूं ओ३म् नाम वाली महिमा गाई जा।
दुनिया दे सारे सुख जिन्दगी च पाई जा।
नर तन पाया कर देर ना।
लभने सुहाने दिन फेर ना।
कीमती बड़ा ए चोला ऐंवें न गवाई जा।
बन्देया तूं ओ३म् नाम वाली...
बदियाँ तों बन्दे मुख मोड़ लै।
विरतियाँ नूँ प्रभु नाल जोड़ लै।

दिल नूँ ठिकाने रख नेकियाँ कमाई जा।
बन्देया तूं ओ३म् नाम वाली···
घुम भावें सारा एह जहान तूं।
छड्ड पिछे पैरां दे निशान तूं।
सच्च दियां राहवां उत्ते कदम वधाई जा।
बन्देया तूं ओ३म् नाम वाली···
मूरखा तूं कीता कदे गौर ना।
तेरे जिहा प्राणी कोई होर ना।
'पथिक' पते दी गल दिल च वसाई जा।
बन्देया तूं ओ३म् नाम वाली···

224

बड़े भाग्य से मनुष्य

बड़े भाग्य से मनुष्य देही मिली है
खा-खा जूनियों की मार, जीव हुआ लाचार,
चोट सीने पे चौरासी लाख झिली है। बड़े भाग्य···
बना मकड़ी समान यहाँ जो।
फँस गया खुद जाल को बिछा के।।
बन्दा एक काम कई, निगाह नागपुर गई।
आप बैठा है बम्बई, दिल दिल्ली है। बड़े भाग्य···
मेरे बीस हैं मकान चार कारें।
लोग मुझे मिल-मालिक पुकारें।।
आठ ठेके सरकारी, सात बेटे और नारी।
बारह कुत्ते हैं शिकारी, एक बिल्ली है। बड़े भाग्य···
तू बता दे कौन इनमें है तेरा।
चार दिन का है सराय में बसेरा।।
तेरे बाद ये सामान, किसी ओर का ही जान।

काहे शेखियों में बना शेखचिल्ली है। बड़े भाग्य···
धनवान हो के इतना इतराया।
कहे मैंने ये दिमाग से कमाया।।
गर हो गया गरीब, फिर कहे वाह नसीब।
कहे हाय! तकदीर मेरी ढीली है। बड़े भाग्य···
अन्त समय सरमाया पछताया।
पाप कई पुण्य एक ना कमाया।।
यमराज खाता खोल, जब कहेगा कि बोल।
बोल अब क्यों जबान तेरी सिली है। बड़े भाग्य···
'नत्था सिंह' करे जैसा पाये।
फल देने वाला मुनसिफ कहाये।।
तेरे पुण्य और पाप, उन्हीं का है प्रताप।
कली कर्मों की फूल बन के खिली है। बड़े भाग्य···

225

बचा लो हे पिता हमको

बचा लो हे पिता हमको हमें दुख जाल घेरे हैं।
शरण में आ गए भगवन् सभी हम दास तेरे हैं।।
जब अपने कुकर्मों को प्रभो हम याद करते हैं।
हृदय है काँपता, पातक किये हमने घनेरे हैं।।
रहे हैं टूट चारों ओर से पर्वत विपत्ति के।
सहारा दो बड़े दुर्भाग्य के खाये थपेड़े हैं।।
निराशा की घटाएँ छा रहीं चारों तरफ अब तो।
बड़ी मँझधार में फँसे हमारे आज बेड़े हैं।।
नहीं दर और इस जग में जहाँ शान्ति मिले हमको।
अतः तेरे द्वारे ही दिये अब डाल डेरे हैं।।
कृपालो! अब कृपा कर के हमें चरणों में रख लीजे।
बुरे हैं 'पाल' पर फिर भी तुम्हारे नाथ चेरे हैं।।

226

बढ़ा चाय का प्रचार

बढ़ा चाय का प्रचार, धूम्रपान की भरमार,
क्या गरीब, जरदार, साधू, बचा ना पुजारी है।
स्वाँग सिनेमा के गाने, लगे लड़कियाँ नचाने।
और मांस-अण्डे खाने, देखो कैसी मति मारी है।
रचे देव भी अनेक, जा के रहे माथे टेक,
करें कभी न विवेक, पूजा ईश की विसारी है।
तो कभी करते नहीं सब्र, बनी प्राचीन कब्र,
मरे कब के नहीं खबर 'राघव' पूजा अभी जारी है।

227

बातों ही बातों से

बातों ही बातों से होता जीवन का निर्माण नहीं।
देश, धर्म, जाति का तो क्या अपना भी कल्याण नहीं।
बातों ही बातों से होता···
हिम्मत वालों के आगे पर्वत भी शीश झुकाते हैं।
वह कैसा इंसान है जिसकी मुट्ठी में तूफान नहीं।
बातों ही बातों से होता···
मेहनत से तो यहाँ हजारों निर्धन से धनवान बने।
मगर हुए बातों से पूरे किसी के भी अरमान नहीं।
बातों ही बातों से होता···
कहने में और करने में तो रात और दिन का अंतर है।
कह लेना आसान है लेकिन कर लेना आसान नहीं।
बातों ही बातों से होता···

मदद करे भगवान उसी की अपनी मदद जो आप करें।
आलस के मारों की करता मदद कभी भगवान नहीं।
बातों ही बातों से होता···
दिल में यदि इरादा कर ले किसी काम को करने का।
कौन-सा ऐसा काम है जिसको कर सकता इनसान नहीं।
बातों ही बातों से होता···
शायर, शेर 'पथिक' दुनिया में रस्ता आप बनाते हैं।
बुज़दिल है जो कहता है कि रस्ते की पहचान नहीं।
बातों ही बातों से होता···

228
बारहीं बरसीं खट्टन (बोलियाँ)

1. बारहीं बरसीं खट्टन गया ते खट्ट के लयाया चाये।
महाऋषि दयानन्द ने साडे सुत्ते होए भाग जगाये।
2. बारहीं बरसीं खट्टन गया ते खट्ट के लयाया छोले।
वेख के पाखण्ड-खण्डनी दिल पाखण्डियाँ दे डोले।
3. बारहीं बरसीं खट्टन गया ते खट्ट के लयाया छल्ला।
इक पासे जग सारा इक पासे दयानन्द कल्ला।
4. बारहीं बरसीं खट्टन गया ते खट्ट के लयाया फीते।
जिन्ने उपकार ऋषि दे ऐने होर नहीं किसे ने कीते।
5. बारहीं बरसीं खट्टन गया ते खट्ट के लयाया लोई।
सारा जग छान मारेया डिठा ऋषि वरगा न कोई।
6. बारहीं बरसीं खट्टन गया ते खट्ट के लयाया वहियाँ।
स्वामी दयानन्द तेरियाँ सारे जग विच धुम्मां पईयाँ।
7. बारहीं बरसीं खट्टन गया ते खट्ट के लयाया गन्ने।
ऋषि-मुनि, योगी, देवता तैनूँ कुल दुनिया पई मन्ने।

8. बारहीं बरसीं खट्टन गया ते खट्ट के लयाया दाणे।
केहड़ा ए विद्वान् जग ते जेहड़ा गुण तेरे न जाणे।
9. बारहीं बरसीं खट्टन गया ते खट्ट के लयाया गानी।
कौन करे रीसाँ तेरियाँ तू एं वीर पुरुष लासानी।
10. बारहीं बरसीं खट्टन गया ते खट्ट के लयाया ढेरे।
जोगिया टंकारे वालया जाईये 'पथिक' सदके तेरे।

229

बिना अमल के ज्ञान

बिना अमल के ज्ञान व लैक्चर बातें हैं, बातों का क्या।
कर्म नहीं तो ब्राह्मण, क्षत्री जातें हैं, जातों का क्या।
सारा दिन निन्दा, चुगली का कारोबार पसन्द किया।
शाम को मांस और मदिरा खाने-पीने का प्रबन्ध किया।
रात को नाच और लचर सुन कलचर और बुलन्द किया।
पर भजन बिना बेकार यह दिन और रातें हैं, रातों का क्या।।
बिना अमल के···
कोई कहे ईश्वर ही नहीं है, बेशक मौज-बहार करो।
कोई कहता है मैं हूँ ईश्वर, मेरा सब दीदार करो।
कोई कहे यह झूठे हैं, मुझ सच्चे पर इतबार करो।
अपने - अपने दाँव - पेच और घातें हैं घातों का क्या।
बिना अमल के···
उसका रंग चढ़ेगा जग पर जो मेहँदी बन पिस्ता है।
सादगी, सदाचार है जिसमें वह इन्सान फरिश्ता है।
अपना देश, धर्म और तीसरा ईश्वर सच्चा रिश्ता है।
'नत्थासिंह' बाकी सब फर्जी नाते हैं, नातों का क्या।
बिना अमल के ज्ञान व लैक्चर बातें हैं बातों का क्या।

230
बुराइयों को कभी

बुराइयों को कभी जीवन में अपनाना नहीं चाहिए।
यह मीठा जहर होता है इसे खाना नहीं चाहिए।।
बुरी संगत जहाँ देखो वहाँ जाने से शरमाओ।
कहीं सत्संग होता हो तो शरमाना नहीं चाहिए।।1।।
कोई कितना भी क्यों न हो बड़े घर-बार, धन वाला।
जहाँ स्वागत नहीं होता वहाँ जाना नहीं चाहिए।।2।।
लगे पेड़ों में फल ज्यों ही झुकें सब डालियाँ उनकी।
कभी ऐश्वर्य को पाकर के इतराना नहीं चाहिए।।3।।
अगर कुछ दे नहीं सकते तो कह दो माफ कर बाबा।
मगर दुत्कार कर याचक को लौटाना नहीं चाहिए।।4।।
निरादर से मिले दौलत जमाने की तो मत छूना।
मिले जो प्रेम से तिल भी तो ठुकराना नहीं चाहिए।।5।।
पड़ा भट्ठी में जब सोना 'पथिक' वह बन गया कुंदन।
प्रभु जब कष्ट देता है तो घबराना नहीं चाहिए।।6।।

231
भक्ति बिन इंसान

भक्ति बिन इंसान नहीं है।
भक्ति के बिन मान नहीं है।
भक्ति में नुकसान नहीं है।
भक्ति से तो शान है प्यारे।
भक्ति से तू बेमुख क्यों है,
सोचा भी है, यह दुःख क्यों है,

विषयों में अब यह सुख क्यों है,
भक्ति सुख की जान है प्यारे,
भक्ति सुख की खान। भक्ति सुख की खान...
भक्ति में आनन्द भरा है,
भक्ति से तो लाभ बड़ा है,
भक्तों का तो मान बड़ा है,
भक्ति से उत्थान है प्यारे। भक्ति सुख की खान...
भक्ति के बिन तन-मन कैसा,
भक्ति के बिन यह धन कैसा,
भक्ति के बिन जीवन कैसा,
भक्तों का भगवान है प्यारे। भक्ति सुख की खान...

232

भक्ति–रस में

भक्ति - रस में दयानन्द ऐसे बहे।
पूर्ण आजन्म वह ब्रह्मचारी रहे।।
धर्म - रक्षा के हित लाख संकट सहे।
मरते दम भी यही शब्द मुख से कहे।।
होवे इच्छा तेरी पूर्ण प्यारे प्रभु!
ओ३म् भूः, ओ३म् भूः, ओ३म् भूः, ओ३म् भूः।।

233

भगवन् मेरी नैया

भगवन् मेरी नैया उस पार लगा देना।
अब तक तो निभाया है, आगे भी निभा देना।।
दल-बल के साथ माया, जो घेरे मुझको आ के।
तुम देखते न रहना, झट आ के बचा लेना।।

सम्भव है झंझटों में मैं तुमको भूल जाऊँ।
पर नाथ दया कर के मुझको न भुला देना।।
तुम देव मैं पुजारी, तुम इष्ट मैं उपासक।
यह बात सच है तो स्वामी सच कर के दिखा देना।।

234

भगवान् की दया से

भगवान् की दया से दिन शुभ्र आएँगे फिर।
हम आर्य विश्वगुरु का सन्मान पाएँगे फिर।।
दुनिया में चक्रवर्ती फिर आर्य-राज्य होगा।
हाँ आर्य- संस्कृति का प्रिय साम्राज्य होगा।।
लेकर 'प्रकाश' पौरुष, सत्-ज्ञान का सहारा।
जग में बहाएँगे हम फिर शान्ति सौख्य-धारा।।

235

भगवान् ! हो आर्यों का

भगवान् हो आर्यों का दुनिया में बोलबाला।
हो दुष्ट दस्युओं के दल-दुर्ग का दिवाला।।
भारत वसुन्धरा के नर-नारियों का जीवन।
प्राचीन संस्कृति के शुभ साँचे में हो ढाला।।1।।

बदकार, बैरियों के आतंक को मिटाने।
राणा प्रताप का फिर चमके प्रचण्ड भाला।।
लेकर हथेली पर सर भारत का बच्चा-बच्चा,
निज देश-धर्म पर हो हँस-हँस के मरने वाला।।2।।

मिट जाय अघ अविधा, अज्ञान का अँधेरा।
हो वेद-ज्ञान-रवि का संसार में उजाला।।
यज्ञादि से सुगन्धित होवें सकल दिशाएँ।
फहरे 'प्रकाश' जग में ध्वज ओ३म् का निराला।।3।।

236

भगवान् भजन करने के लिए

भगवान् भजन करने के लिए,
जो प्रातः समय उठ जाता है।
आनन्द की वर्षा होती है,
दुनिया में वही सुख पाता है।। भगवान्०
संसार को जिसने जान लिया,
परमेश्वर को पहचान लिया।
उसने निश्चय मन में ठान लिया,
क्या इस दुनिया से नाता है।।1।। भगवान्०
नहीं निन्दा सुन घबराता जो,
नहीं मान के अन्दर आता जो।
इक सेवा - धर्म कमाता जो,
वह ऊँचा भी उठ जाता है।।2।। भगवान्०
जो उत्तम कर्म कमाता है,
नहीं मौत से भी भय वह खाता है।
हँस-हँसकर प्राण गँवाता जो,
वह सच्चा वीर कहाता है।।3।। भगवान्०
इस देश का कर कल्याण पिता,
देकर शक्ति का दान पिता।
न कर इसको हैरान पिता,
चरणों में शीश झुकाता है।।4।। भगवान्०

237

भले-बुरे कर्मों की

भले-बुरे कर्मों की जग में, जिस नर को पहिचान नहीं,
व्यसनों का ना त्याग किया हो, पशु है वह इन्सान नहीं।।
गंगा नहाने जाते हैं तो नहाकर व्रत कर आते हैं।
बैंगन, लौकी, पेठा की सब्जी आकर नहीं खाते हैं।।
बकरा, मुर्गी, मीन, भेड़, ह्विस्की को चट कर जाते हैं।
फिर भी चाहते भला, मगर ऐसा भोला भगवान नहीं।।1।।
व्यसनों का ना त्याग किया हो, पशु है वह इन्सान नहीं।
एकादशी, 'पूर्णमासी' व्रत कीना, खूब निभाया है।
सुबह से लेकर शाम तलक भी अन्न ना बिल्कुल खाया है।।
गांजा, सुलफा, चर्स, तम्बाकू पीकर समय बिताया है।
जिसने जगत रचाया है, उस परम पिता का ध्यान नहीं।।2।।
व्यसनों का ना त्याग किया हो, पशु है वह इन्सान नहीं।
फंसा रहे जो नर विषयों में, व्यर्थ प्रभु गुण गाना है।
जिसने किया परहेज नहीं, बेकार दवाई खाना है।।
चिड़ियों ने चुग खेत लिया, तो क्या पीछे पछताना है।
'राघव' समय कीमती था, पर ध्यान दिया नादान नहीं।।3।।
व्यसनों का ना त्याग किया हो, पशु है वह इन्सान नहीं।

238

भज ओ३म् नाम

भज ओ३म् नाम मेरे भाई, भज ओ३म् नाम मेरे भाई।
इसी नाम का जाप किया था ध्रुव, भक्त प्रहलाद ने।।
ओ३म् नाम भज फाँसी खाई थी बिस्मिल, आजाद ने।
फाँसी के तख्ते पर भी वे रटते रहे हरषाई।।1।।

जिसने ओ३म् का लिया सहारा, उसका हर संताप लिया।
राम, कृष्ण ने जीवन-भर तक ओ३म् नाम का जाप किया।।
सुबह - शाम करते थे सन्ध्या लक्ष्मण-सिय-रघुराई।। 2।।
ऋषि दयानन्द ओ३म् नाम कह सारा देश जगा के गये।
प्रभु का प्यारा ओ३म् नाम है, भूलो ना बतला के गये।।
अन्त समय तक ओ३म् नाम की रटना नहीं भुलाई।। 3।।
ओ३म् नाम की नौका चढ़कर भव-सागर से पार गये।
जिसने बिसारा ओ३म् नाम को, डूब वही मँझधार गये।।
'राघव' ओ३म् नाम जपने से जीवन हो सुखदाई।। 4।।

239

भारतवर्ष महान है

भारतवर्ष महान है, ऋषियों की यह शान है।
प्यारा हिन्दुस्तान है, यह प्यारा हिन्दुस्तान है।
उज्ज्वल मुकुट हिमालय जैसा, पाँव पसारे सागर है।
गंगा, यमुना जैसी नदियाँ, नीला-नीला अम्बर है।
मुक्त हृदय से मिला हुआ परमेश्वर का वरदान है।
चन्दन जैसी मिट्टी इसकी, वायु जिसकी अमृत है।
ठण्डा मीठा जल है इसका, ज्यूँ गुलाब का शरबत है।
शाम-सवेरे मन बहलावे फसलों की मुस्कान है।
भरी पड़ी इसके आँगन में इतिहास की है गाथा।
जिसके सम्मुख झुक जाता है विदेशियों का भी माथा।
मिला पवित्र वेदों का भी इस धरती को ज्ञान है।
जिसकी गोदी में हम खेले, हम हैं उसके पहरेदार।
इसकी रक्षा हित हम सारे देंगे अपना तन-मन वार।
बलिदान देकर भी रखनी भारत-माँ की शान है।

देश, धर्म पर मरने वाला ही सच्चा इन्सान है।
करता जो गद्दारी इससे वह काफिर, बेईमान है।
देश-भक्ति से ओतप्रोत यह 'नन्दलाल' का गान है।

240
भारत के वीर हम हैं

भारत के वीर हम हैं दुनिया को दिखा देंगे।
भारत को जमाने का सरताज बना देंगे।
भारत पे की चढ़ाई गर आँख भी उठाई,
उन पाजी दरिन्दों को मिट्टी में मिला देंगे।
हो चीन की शरारत, पाकिस्तानी वजारत,
रस्ते में जो आयेगा ठोकर से हटा देंगे।
बातें न इन्हें समझो आँखों से देख लेना,
प्रताप, शिवा हर इक हिन्दी को बना देंगे।
गाना नहीं है भाइयो यह दिल के वलवले हैं,
मुर्दा दिलों में भी हम आग लगा देंगे।
सीता का यदि कोई अपमान करे रावण,
बजरंग बली बन के लंका को जला देंगे।
ऋषिवर ने था जगाया, मार्ग हमें दिखाया,
सन्देश ऋषिवर का घर-घर में पहुँचा देंगे।

241
भीतर है सखा तेरा

टेक—भीतर है सखा तेरा जरा मन टिका के देख।
अन्तःकरण में ज्ञान की ज्योति जगा के देख।।

हैं इंद्रियों की शक्तियाँ बाहर की ओर जो।
बाहर की ओर से इन्हें भीतर को मोड़ दो।
कर द्वार सकल बन्द समाधि लगा के देख।। भीतर०
शुद्ध आत्मा से उसकी तू रचना का ध्यान कर।
निश्चय ही झूम जायेगा महिमा का गान कर।
श्रद्धा की देवी रुठी हुई है मना के देख।। भीतर०
साथी पवित्र देव हों, बिगड़ी बने न क्यों।
जीवन यह तेरा भक्ति-रस में सने न क्यों।
आदर्श भक्तों जैसा तू जीवन बना के देख।। भीतर०
मिलता है सखा तेरा इसी ही उपाय से।
मिलता नहीं कदापि वह अन्यत्र जाये से।
ईश्वर की वाणी वेद कहें, आजमा के देख।। भीतर०

242

भारत के नभ-मण्डल

भारत के नभ - मण्डल पे,
अविवेक, अधर्म के बादल छाए।
छोड़ रहे थे निरन्तर वैदिक-
धर्म, सनातन राम के जाए।।
ईश-कृपा से कराल परिस्थिति
में ऋषिराज दयानन्द आए।
संसृति के अघ, ताप-निवारण
कारण आर्य समाज बनाए।।

243

मधुर वेद वाणी

मधुर वेद - वाणी धरा को सुनाओ।
सकल विश्व को फिर से आर्य बनाओ।।
अभी लोग घड़कर हैं ईश्वर बनाते।
अभी भोग पाषाण को हैं लगाते।।
प्रभु - प्रेम की गंगा आओ बहाओ···
वही ताने - बाने तने जा रहे हैं।
अभी पंथ नूतन बने जा रहे हैं।।
पुनः शुद्धि की घोट घुट्टी पिलाओ···
दनुजता धरा पर है फिर दनदनाती।
अविद्या तुम्हें आर्यो है चिड़ाती।।
तजो नींद वातिल की गर्दन झुकाओ···
जो थे तर्क-तोपों से स्वामी ने ढाए।
गुरुडम ने हैं दुर्ग फिर से बनाए।।
वही खड़ग खण्डन का फिर से चलाओ···
लुटा जा रहा है देश प्यारा है सारा।
हुआ आज आर्त यह भारत हमारा।।
उठो दीनता-हीनता को भगाओ···
है शोषण अभी दीन-दुखियों का होता।
अभी कर्म-हीनों का पोषण है होता।।
मचलकर उठो युग बदल के दिखाओ···
सुनो मात हिन्दी ने रोना सुनाया।
कि घर के चिरागों ने घर को जलाया।।
निडरता से कर्त्तव्य अपने निभाओ···
विलासी बने जा रहे देशवासी।
करो दूर मिलकर निराशा, उदासी।।
वतन को पतन के गढ़े से बचाओ···

अगर देश अपना बचाना तुम्हें है।
अगर भाग्य सोया जगाना तुम्हें है।।
तो फिर जाति-पाँति के झगड़े मिटाओ…

244
मन ! अब प्रभु के

मन ! अब प्रभु के ही हो रहिये।
प्रभु के नेह, लगन में निशदिन
भली-बुरी सब ही की सहिये।। मन०।।
प्रभु की पावन शरण छोड़कर
और कौन का आँचल गहिये।। मन०।।
और करेंगे लोग हँसी सब
हृदय-व्यथा न किसी से कहिये।। मन०।।
पाया प्रेम 'प्रकाश' परम धन
प्रेमी-जन को फिर क्या चहिये।। मन०।।

245
मन की आँखें खोल

मन की आँखें खोल बाबा,
मन की आँखें खोल।। टेक।।

दुनिया क्या है एक तमाशा,
चार दिनों की झूठी आशा।
ज्ञान - तराजू हाथ में लेकर,
तोल सके तो तोल।। बाबा०।।1।।

मतलब की सब दुनियादारी,
मतलब के हैं सब संसारी।
जग में तेरा कौन हितकारी,
बोल प्यारे बोल।। बाबा०।।2।।

तन-मन का सब जोर लगाकर,
नाम प्रभु का बोल।। बाबा०।।3।।
मन की आँखें खोल बाबा···

246

मनुवा न घबराना

मनुवा न घबराना पुरुषार्थ करते जाना।
चलकर दुर्गम कंटक पथ पर गीत विजय के गाना।।
जीवन के इस घोर समर में जीत-हार हो जाती है,
रुकना, बढ़ना, गिरना, चढ़ना, धूप-छाओं भी आती है,
इक दिन तो इस नश्वर तन ने मिट्टी में मिल जाना।
जिसने है सब खेल रचाया रचना है उसकी न्यारी,
सब जीवों का दाता है वह सृष्टि रची उसने सारी,
अजर-अमर है आत्मा तेरी बुनती ताना - बाना।
रात-दिवस और सायं-प्रातः प्रभु को शीश झुकाया कर,
वह है तेरा सच्चा साथी उसके ही गुण गाया कर,
मिट जायेंगे संशय सारे बन जा तू दीवाना।

247

मन ! तूने प्रभु गुण

मन ! तूने प्रभु गुण गाया नहीं।
निज जीवन सफल बनाया नहीं।।
जिसने नर-जन्म दिया तुझको
सब भाँति निहाल किया तुझको
उस प्रभु का भक्त कहाया नहीं।
मन ! तूने प्रभु गुण गाया नहीं।।
जिन विषयों में भ्रमता डोले
कागज के फूल हैं ये भोले
इनमें सुगंध, रस पाया नहीं।
मन ! तूने प्रभु गुण गाया नहीं।।
सब जीते-जी का नाता है
धन-धर्म साथ में जाता है
संग जाये काया - माया नहीं।
मन ! तूने प्रभु गुण गाया नहीं।।
वेदों की शिक्षा चित्त धर ले
'राघव' प्रभु का सुमरन कर ले
जो गया समय फिर आया नहीं।
मन ! तूने प्रभु गुण गाया नहीं।।

248

मन-मन्दिर में

मन - मन्दिर में महादेव मिले,
मति-मारे ! मैल मिटा मन का।

क्यों करें तीर्थ गंगा, यमुना,
मथुरा, काशी, वृन्दावन का।।

सत्ज्ञान बिना भटकत डोलत हो,
व्याकुल अन्ध समान सदा।

249

महामानव श्रीकृष्ण

महामानव श्रीकृष्ण ने, किये सदा शुभ काम।
दुनिया में विख्यात है, प्रिय सर्वोत्तम नाम।
प्रिय सर्वोत्तम नाम, जन्म मथुरा में पाया।
गोकुल नगरी नन्द, गोप के घर पहुँचाया।
भादों बदी अष्टमी के दिन है जन्मोत्सव।
इसी तिथि को जन्मे, यह योगी महामानव।
नन्दलाल घनश्याम का, ऊँचा था आदर्श।
ब्रह्मचर्य व्रत पालन किया, पूरे बारह वर्ष।
पूरे बारह वर्ष, रुकमणि सहित निभाया।
तदन स्वरूप प्रद्युम्न से एक सुत को पाया।
किया घोर तप, पति-पत्नी ने व्रत पाला।
रहे हिमालय शैल, रुकमणि और नन्दलाला।

250

मधुर ओ३म् का जप

मधुर ओ३म् का जप किये जा, किये जा।
तू आधार उसका लिये जा, लिये जा।।

सदा अन्न भूखों को, नंगों को कपड़ा।
जहाँ तक बने तू दिये जा, दिये जा।।

घृणा, द्वेष, अभिमान से मानवों के।
हृदय फट रहे तू सिये जा, सिये जा।।

धरा, धाम, धन जाएँगे कुछ न संग में।
तू धन धर्म संग में लिये जा, लिये जा।।

सरस, संयमी, स्वस्थ, स्वाधीन बनकर।
तू सौ वर्ष जग में जिये जा, जिये जा।।

'प्रकाश आर्य' चढ़ के कभी जो न उतरे।
वही प्रेम - प्याला पिये जा, पिये जा।।

251

मगन ईश्वर की भक्ति में

मगन ईश्वर की भक्ति में अरे मन क्यों नहीं होता।
पड़ा आलस्य में मूरख रहेगा कब तलक सोता।।
जो इच्छा है तेरे कट जायँ सारे मैल पापों के।
प्रभु के प्रेम-जल से क्यों नहीं अपने को तू धोता।।
विषय और भोग में फँसकर न कर बरबाद जीवन को।
दमन कर चित्त की वृत्ति लगा ले योग में गोता।।
नहीं संसार की वस्तु कोई भी सुख की हेतु है।
वृथा इनके लिए फिर क्यों समय अनमोल तू खोता।।
धर्म ही एक ऐसा है जो होगा अन्त को साथी।
न पत्नी काम आएगी न बेटा और कोई पोता।।
भटकता जा-बजा नाहक फिरे सुख के लिए 'सालिक'।
तेरे हृदय के भीतर ही बहे आनन्द का सोता।।

252

माता–पिता, आचार्य से

माता-पिता, आचार्य से, करो प्रेम से बात।
आशीर्वाद पर्यन्त हो, सुखी रहेगा गात।। 1।।
ईश्वर, धर्म, समाज पर, करो आप विश्वास।
यश पाओगे जगत में, व्यसन रहे न पास।। 2।।
विधवा, दीन, अनाथ अरु भटका हो राहगीर।
करो सहाय अपंग की, तुरत बंधाओ धीर।। 3।।
झूठा, पापी, चोर से रहो हमेशा दूर।
बचकर रहो नशेबाज से, जो रहे नशे में चूर।। 4।।
पागल, वृद्ध , गरीब की निन्दा करो न आप।
करो सहायता प्रेम से, हरो सकल सन्ताप।। 5।।
देश, धर्म और मान पर, लग नहीं जाये दाग।
लड़ो मित्र-हित के लिए, निज स्वार्थ को त्याग।। 6।।
हिम्मत से और प्रेम से, लिए सचाई साथ।
आगे बढ़ते जाइये, कर-कर लम्बे हाथ।। 7।।

253

मात–पिता हों श्रेष्ठ

मात-पिता हों श्रेष्ठ, धार्मिक, ज्ञानवान, आचारी।
यह तीनों मिल गये जिसे वह भाग्यवान है भारी। टेक।।
सुयोग्य माता सुत के ऊपर ऐसा रंग चढ़ा दे।
उत्तम शिक्षा, संस्कार दे, श्रेष्ठ सपूत बना दे।।
बोली, भाषा, रहन-सहन सब सद्व्यवहार सिखा दे।
किस्से और कहानी द्वारा सत्य मार्ग दिखला दे।।
विद्यावान महान बना दे बच्चे को महतारी।। 1।। यह

पिता बाहरी शिक्षा देकर सारा ज्ञान कराता।
कैसे रहैं, कहैं क्या किससे, कुल-मर्यादा सिखाता।
दुर्गुण, दुर्व्यसनों, पाखंडों से भी दूर हटाता।
सत्याचरण, सत्यभाषण सब नित्य-कर्म बतलाता।।
ऐसी शिक्षा पाकर बनता बालक आज्ञाकारी।। 2।।
गुरुकुल में आचारी उसको पूर्ण ज्ञानी कर दे।
वेद-शास्त्र की विद्या उसमें कूट-कूट के भर दे।।
अन्धकार, अन्याय मिटावे, अभाव को भी हर दे।
देश, धर्म का रक्षक होवे, गुरुवर ऐसा वर दे।।
ऐसे शिक्षक, गुरुओं का यश गावे दुनिया सारी।। 3।।
हर बालक गुरु, मात-पिता से ऐसी शिक्षा पाये।
तो फिर सारा देश और हर गृहस्थ स्वर्ग हो जाये।।
पापी, भ्रष्टाचारी कोई कहीं नजर ना आये।
वैदिक-शिक्षा को ही सारी दुनिया पढ़े-पढ़ाये।।
हर नर हो 'नरदेव' देवता, सुख पावें नर-नारी।। 4।।

254

माता-पिता, भाई-बन्धु

माता-पिता, भाई-बन्धु, सखा वह हमारा है।
ओ३म् नाम प्यारा है जी ओ३म् नाम प्यारा है।
निराकार है वह जर्रे-जर्रे में समाया है,
महिमा है अपार अंत किसी ने न पाया है,
पत्ता-पत्ता, डाली-डाली करे यह इशारा है।
पृथ्वी, पहाड़, नदी-नाले क्या बनाये हैं,
रंगदार फूल बिना हाथों के खिलाये हैं,
लेता है प्रकाश उससे सूरज, चाँद, तारा है।

ऋषि, मुनि, योगी सारे उसे ही ध्याते हैं,
गीत प्रभु - भक्ति के झूम - झूम गाते हैं,
तोता, मैना, कोयल ने भी उसे ही पुकारा है।
वेद अनुसार जीवन अपना जो बनाते हैं,
आत्मा को शुद्ध कर मुक्ति को पाते हैं,
'नन्दलाल' उसकी जय-जय करे विश्व सारा है।
ओ३म् नाम प्यारा है जी ओ३म् नाम प्यारा है।

255

मात तुही गुरु

मात तुही, गुरु, तात तुही, मित्र-भ्रात तुही धन्य-धान्य हमारो।
ईश तुही, जगदीश तुही, मम शीश तुही प्रभु राखन हारो।।
राव तुही, उमराव तुही, सत्भाव तुही जग राखन हारो।
सार तुही, करतार तुही, घर-बार तुही परिवार हमारो।।

256

मेरा उद्देश्य है यही

मेरा उद्देश्य है यही आज्ञा को तेरी पालना।
कर के कमाई धर्म की चरणों में तेरे डालना।
मानव के नाते जो जाऊँ तुझको भूल मैं कभी,
विनय है मेरी आपसे बनकर सखा संभालना।
जितने भी यज्ञ-कर्म हों श्रद्धा, प्रेम से करूँ,
आयें अभद्र भाव जो उनको सदा तू टालना।
रक्षा तो मेरी तुम करो, रक्षा में तेरी मैं रहूँ,
अपने गुणों के साँचे में जीवन को मेरे ढालना।
मृत्यु का मुझको भय न हो, माँगू मैं तुझसे वर यही,
मेधा बुद्धि की भिक्षा भी झोली में मेरी डालना।

257

मेरा नाथ तू है

मेरा नाथ तू है, मेरा नाथ तू है।
नहीं मैं अकेला मेरे साथ तू है।
चला जा रहा हूँ मैं राह पर तुम्हारी।
नहीं डर जो राह में है तूफान भारी।
जो थामे हुए यह मेरा हाथ तू है।
तू है इष्ट मेरा मैं तेरा पुजारी।
तेरा खेल मैं हूँ तू मेरा खिलाड़ी।
मेरी जिन्दगी की तो हर बात तू है।
मैं तेरा हूँ तेरे सदा गीत गाऊँ।
कभी भूलकर न तुझे भूल जाऊँ।
तू ही वीर, बन्धु पितु-मात तू है।

258

मेरा प्रीतम अनोखा

मेरा प्रीतम अनोखा, एक ही सबसे निराला है।
न जन्मा है न मरता है, न बूढ़ा है न बाला है।।
न लम्बा है न ठिगना है, न मोटा है न पतला है।
नहीं वह साँवरा पीला, न गोरा है न काला है।। 1।।
नहीं माता-पिता उसके, न पत्नी है न सम्बन्धी।
किसी का वह न बहनोई, कोई उसका न साला है।। 2।।
बहुत-से चाँद, सूरज और पृथ्वी आदि लोकों में।
बिना हाथों के रच करके, अधर सबको सँभाला है।। 3।।
सभी देखे बिना आँखों, बिना कानों के सब सुनता।
बिना वाणी के वेदों का, किया उपदेश आला है।। 4।।

उसी का तेज अग्नि में, है बिजली में चमक उसकी।
चाँद और सूरज में उसी का तो उजाला है।। 5।।
अधिष्ठाता है सब जग का, वही मौजूद सारे में।
उसी ने सेवकों के सर्वदा दुःखों को टाला है।। 6।।
वही सब दानियों का है महादानी दयासागर।
रात-दिन दे रहा सबको, नहीं फिर भी दिवाला है।। 7।।
उसी की सब शरण आओ, प्रेम-प्रीति से गुण गाओ।
'किशोरी' का वही रक्षक, उसी ने सबको पाला है।। 8।।

259

मेरा क्यों होता सम्मान

मेरा क्यों होता सम्मान बहन परिवार में सुनो।
अपने मुख से सदा सत्य औ मीठी वाणी बोलूँ।
दुराचरण से बचूँ व्यर्थ में इधर - उधर न डोलूँ।
कुल की रखूँ आन और शान। बहन परिवार में सुनो।।
आते हैं पतिदेव कभी भी जब बाहर से घर पर।
अभिवादन कर आसन दूँ फिर देती हूँ जल भरकर।
करती अतिथि जनों का मान। बहन परिवार में सुनो।।
पहले सबको भोजन देकर तब मैं भोजन पाती।
सोती सबको सुला किंतु मैं सुबह शीघ्र जग जाती।
मैं नित करती हूँ स्नान। बहन परिवार में सुनो।।
अन्य पुरुष हो चाहे कितना सुंदर या बलवान।
लेकिन उसकी ओर कभी न जाता मेरा ध्यान।
समझूँ निज पति को भगवान। बहन परिवार में सुनो।।
सदा साफ रखती हूँ अपने बर्तन, वस्त्र, बिछौना।
आँगन, चौका साफ मिलेगा घर का कोना-कोना।
रखती यथा जगह सामान। बहन परिवार में सुनो।।

दुष्ट नारियों की संगत में कभी नहीं मैं जाती।
करती हूँ पुरुषार्थ सदा ही आलस दूर भगाती।।
सुनती आर्यों का व्याख्यान। बहन परिवार में सुनो।।

दुष्कर्मों से बचा बालकों को शुभ कर्म सिखाती।
सबसे सद्‌व्यवहार करूँ नित, संध्या-हवन रचाती।
गाती ईश्वर का गुणगान। बहन परिवार में सुनो।।

जो नारी अपने जीवन में वैदिक नियम निभावै।
कह 'नरदेव' वही दुनिया में पतिव्रता कहलावै।।
उसकी पूजा करे जहा़न। बहन परिवार में सुनो।।

260

मेरे दाता के दरबार में

मेरे दाता के दरबार में, सब लोगों का खाता।
जैसा कोई कर्म करेगा, वैसा ही फल पाता।।
संन्यासी हो, साधु, गृहस्थी, या राजा या रानी।
प्रभु के बही खाते में लिखी है सबकी कर्म कहानी।।
अन्तर्यामी अंदर बैठा, सही हिसाब लगाता।
मेरे दाता के...

उसके यहाँ न रिश्वत चलती, न चोरी चलाकी।
अन्तर्यामी अंदर बैठा, देखे मन की झाँकी।
पाप-पुण्य का बंडल, तेरे हाथों ही खुलवाता।।
मेरे दाता के...

बड़े कठिन हैं नियम प्रभु के, बड़ी कठिन मर्यादा।
कौड़ी किसी को कम नहीं देता, पाई किसी को ज्यादा।।
इसीलिए वह जगत्‌पति और जगत्‌सेठ कहलाता।।
मेरे दाता के...

अच्छी करनी कर ले बंदे, कर्म न कर कुछ काला।
लाख आँख से देख रहा है तुझे देखने वाला।
उसकी नजर, निगाहों से कोई नहीं बच पाता।।
मेरे दाता के···

261
मैं किस विधि करूँ

मैं किस विधि करूँ बखान प्रभुजी तेरी महिमा,
सूक्ष्म से सूक्ष्म है कितना, च्यूँटी में रहा समाय, प्रभुजी तेरी···
सकल ब्रह्मांड का तू ही स्वामी,
तेरा रूप महान, प्रभुजी तेरी महिमा।
तू पूर्ण न्यायकारी, तेरी दया महान प्रभु···
अजर, अमर, है तू अविनाशी,
कोई न तेरे समान, प्रभुजी तेरी महिमा।
कर्मों का फल दे रहा,
तेरा पूर्ण ज्ञान, प्रभुजी तेरी महिमा।
चन्द्र, सूर्य, तारे चमकाये,
तेरी चमक लासान, प्रभु जी तेरी महिमा।
तू प्रभु मेरा मैं हूँ तेरा, हो मेरे सखा,
समान, प्रभु जी तेरी महिमा।
तेरे अंग-संग रह आनन्द पाया,
कैसे करूँ बखान, प्रभुजी तेरी महिमा।
हर इक फूल में तेरी गन्ध है, पत्ता-पत्ता करे गान,
प्रभुजी तेरी महिमा।

262

मैं नहीं मेरा नहीं

मैं नहीं मेरा नहीं, यह तन किसी का है दिया।
जो भी अपने पास है, यह धन किसी का है दिया।
देने वाले ने दिया तो भी दिया किस शान से।
मेरा है यह लेने वाला कह उठा अभिमान से।
मैं, मेरी यह कहने वाला मन किसी का है दिया।
जो भी मिला है, वह हमेशा पास रह सकता नहीं।
कब बिछुड़ जायें, यह कोई राज कह सकता नहीं।
जिन्दगानी का खिला मधुबन किसी का है दिया।
मैं नहीं मेरा नहीं यह तन किसी का है दिया।
जग की सेवा खोज अपनी प्रीत उससे कीजिए।
जिन्दगी का राज है यह जानकर जी लीजिए।
साधना की राह पर यह साधन किसी का है दिया।

263

मैं तेरे प्रेम की धुन

मैं तेरे प्रेम की धुन में गाता हुआ जब कभी तेरे मंदिर में आया करूँ।
हे प्रभु मुझको इतना बता दो जरा कौन-सी भेंट चरणों में लाया करूँ।
मूर्ति को तो घड़ता है यह आदमी और फूलों को भगवान बनाता है तू।
इस तरफ आदमी की है कारीगरी उस तरफ सारे जग का विधाता है तू।
किस तरह फूल जो कि हैं तेरी कृति आदमी की कृति पर चढ़ाया करूँ।
मैं तेरे प्रेम की धुन में गाता हुआ...
आदमी ने बना ली तेरी मूर्ति, तेरी सूरत कहीं नजर आती नहीं।
तू जो खाता नहीं है प्रभु इसलिए मूर्ति भी कोई चीज खाती नहीं।

मूर्ति को खिलाना बेफायदा हुआ फिर तुझे किस तरह मैं रिझाया करूँ।
मैं तेरे प्रेम की धुन में गाता हुआ...
मानता हूँ कि तू मूर्ति में भी है, इसके बाहर भी तो तू ही मौजूद है।
घर के बाहर ही बैठा मिले तू अगर फिर अन्दर से बुलाना तो बेसूद है।
'पथिक' है मूर्ति में ही यह मानकर एकदेशी तुझे क्यों बनाया करूँ।
मैं तेरे प्रेम की धुन में गाता हुआ...

264

मीठी वाणी का भी

मीठी वाणी का भी प्रभु ने कैसा वरदान बनाया है।
हो जायें पराए भी अपने यह इसकी अद्भुत माया है।
कौवा, कोयल दोनों काले, नहीं रूप किसी का मन भाए।
कोयल ने स्वर में रस भरकर सम्मान सभी से पाया है।
सब द्वेष-भाव कटु मल, धुलते, सद्भाव प्रसून विमल खिलते।
जब वाणी से मधु रस झरता, शीतल हो जाती काया है।
यह ऐसा सुख-संचार करे, जैसे सावन की बौछारें।
क्या पुष्प-वृष्टि से हो सकता जो सुख इसने पहुँचाया है।
यह दिव्य-औषधि है जिसने कितने ही गहरे घाव भरे।
कटुवाणी की क्या कथा, इसी ने महाभारत रचवाया है।
मधु मेरा आना-जाना हो, मधु मेरा मन, मधुगाना हो।
हो जाऊँ मैं मधु-सम, श्रुति ने भी यही भाव दरसाया है।
ऐसा बोलो, मिश्री घोलो, सुख-शान्ति जगत में चाहो जो।
कटुता के विष में मधु-स्वर ने अमृत-सा रस सरसाया है।
मिलता है मान मधुर वाणी से, धन, पद भी जन पाते हैं।
अप्रिय सत्य तक को भी वर्जित मनु जी ने बतलाया है।
किन्तु माधुर्य वही सच्चा, जो बाहर-भीतर एक रहे।
मुख पर मुस्कान रहे तो क्या, जो मन में कपट समाया है।

265

मिलता है सच्चा सुख

मिलता है सच्चा सुख केवल,
भगवान् तुम्हारी भक्ति में।
यही विनती है पल-पल, क्षण-क्षण,
रहे ध्यान तुम्हारी भक्ति में भगवान्।
चाहे वैरी कुल संसार बने।
चाहे जीवन मुझ पर भार बने।
चाहे मौत गले का हार बने,
रहे ध्यान तुम्हारी भक्ति में।।1।।
चाहे संकट ने मुझे घेरा हो,
चाहे चारों ओर अँधेरा हो।
पर मन न डगमग मेरा हो,
रहे ध्यान तुम्हारी भक्ति में।।2।।
चाहे अग्नि में मुझे जलना हो,
चाहे काटों पर मुझे चलना हो।
चाहे छोड़ के देश निकलना हो,
रहे ध्यान तुम्हारी भक्ति में।।3।।
जिह्वा पर तेरा नाम रहे,
तेरी याद सुबह और शाम रहे।
यही काम बस आठों याम रहे,
रहे ध्यान तुम्हारी भक्ति में।।4।।

266

मिले मन–मन्दिर में

मिले मन - मन्दिर में भगवान्।
मिटा ले मैल अरे नादान।।
गंगा - यमुना जी के तट पर।
गोकुल - मथुरा, वंशी - वट पर,
नाहक होता क्यों हैरान।। मिले मन०।।
फूलों में सुवास है जैसे,
गन्ने में मिठास है जैसे,
तैसे प्रभु दिल के दरम्यान।। मिले मन०।।
कस्तूरी - मृग की नाभी में।
मूरख ढूँढत वन - झाड़ी में।।
खोता तड़प-तड़पकर प्राण।। मिले मन०।।
तेरे पास बसे है प्यारा,
लेकिन तुझको मारा - मारा,
निश-दिन भटकाता अज्ञान।। मिले मन०।।
तज अज्ञान शुद्ध कर निज मन।
निश्चय हो 'प्रकाश' प्रभु - दर्शन।।
पावे तू आनन्द महान्।। मिले मन०।।

267

मुबारिक है जो वैदिक धर्म

मुबारिक है जो वैदिक धर्म का प्रचार करते हैं।
ऋषि-ऋण से वे अपने आप का उद्धार करते हैं।
अटल सिद्धान्त वेदों के, सच्चाई से भरे-पूरे।
बड़ा जिनका सनातन से, ऋषि सत्कार करते हैं।। 1।।

फिरें भूले हुए उनको, विचारें ठोकरें खाते।
बता उनको सुमार्ग, वे बड़ा उपकार करते हैं।। 2।।
कभी कर्त्तव्य-पालन से, जरा पीछे नहीं मुड़ते।
सुने या न सुने कोई, यत्न हर बार करते हैं।। 3।।
वही सच्चे प्रचारक हैं, वे पंडित हैं, पुरोहित हैं।
सभी जीवों को जो सच्ची दया से प्यार करते हैं।। 4।।
छिपाते हैं जो अपने धर्म के सिद्धान्त पब्लिक से।
वे कमजोरी का अपनी, आप ही इकरार करते हैं।। 5।।
हमारा एक वैदिक धर्म ही, यह विश्वव्यापी है।
किजिसपर अक्लवर खुद आपको बलिदान करते हैं।। 6।।
जो इस उत्तम धर्म को छोड़, पाखंडों में फँसते हैं।
वे अपने आप को संसार में खुद ख्वार करते हैं।। 7।।
'किशोरी' है वही उत्तम वचन, मन, कर्म अपने से।
जो वैदिक धर्म की हर बार, जय-जयकार करते हैं।। 8।।

268

मुझे ऐसा बनाओ मेरे पिता

मुझे ऐसा बनाओ मेरे पिता, जीवन में लगे ठोकर न कहीं।
जाने-अनजाने भी मुझसे, नुक्सान किसी का हो न सके।
जो तेरा बनकर रहता है, काँटों में भी फूल-सा खिलता है।
कितने ही काँटे पाँव चुभें पर फूल भी हों काँटे न कभी।
उपकार सदा करता जाऊँ, दुनिया अपकार भले ही करे।
बदनामी न जग में हो मेरी, कोई नाम भले ही ले न कभी।
तू ही बस मेरा ऐसा है, दुख में भी साथ नहीं तजता।
दुनिया मुझे प्यार करे न करे, खोऊँ न तेरा प्यार कभी।
मन हो मधुपूर्ण कलश मेरा, आँखों में ज्योति छलकती रहे।
ऐसा मधु पीने को देना, जगता ही रहूँ सोऊँ न कभी।

मैं क्या हूँ राह मेरी क्या है, यह सत्य सदा मैं समझ सकूँ।
इस राह पै चलते-चलते कभी मेरे पाँव रुकें न थकें न कभी।

269

मुझमें ओ३म्, तुझमें ओ३म्

मुझमें ओ३म्, तुझमें ओ३म्, सबमें ओ३म् समाया।
सबसे कर लो प्यार जगत् में कोई नहीं पराया।
जितने हैं संसार के प्राणी, सबमें एक ही ज्योति।
एक बाग के फूल हैं सारे, इक माला के मोती।
एक ही कारीगर ने सबको इक माटी से बनाया।
सबसे कर लो प्यार–

एक पिता के बच्चे हैं हम एक हमारी माता।
दाना - पानी देने वाला एक हमारा दाता।
फिर न जाने किस मूरख ने लड़ना हमें सिखाया।।
सबसे कर लो प्यार–

ऊँच-नीच और भेद-भाव की दीवारों को तोड़ो।
बदला जमाना तुम भी बदलो, बुरी आदतें छोड़ो।
जागो और जगाओ सबको, समय भी ऐसा आया।
सबसे कर लो प्यार–

270

मुझे आसरा है प्रभो

मुझे आसरा है प्रभो बस तुम्हारा।
तुम्हें छोड़ अब कौन-सा लूँ सहारा।।
भँवर बीच चक्कर पड़ा खा रहा हूँ।
न देखा कभी शान्ति-सुख का किनारा।।

तिमिर घोर मानस-भवन में है छाया।
करो दूर अपनी परम-ज्योति द्वारा।।
नहीं कोई तुम-सा सुना है हितैषी।
लिया देख मैंने है संसार सारा।।

सुखी वह तुम्हारा किया जिसने सुमिरन।
दुःखी वह कि जिसने तुम्हें है बिसारा।।
हृदय-कुंज उजड़ा हुआ फिर हरा हो।
बहा दो जो तुम स्नेह की वारि-धारा।।

कहेगा तुम्हें कौन फिर करुणा-सिन्धु।
'प्रकाश' आर्य को जो न तुमने उबारा।।

271

यज्ञ जीवन का हमारा

यज्ञ जीवन का हमारा श्रेष्ठ, सुन्दर कर्म है।
यज्ञ का करना - कराना आर्यों का धर्म है।।
यज्ञ से दिशि हो सुगन्धित, शान्त हो वातावरण।
यज्ञ से सद्ज्ञान हो, हो यज्ञ से शुद्धाचरण।।
यज्ञ से हो स्वस्थ काया, व्याधियाँ सब नष्ट हों।
यज्ञ से सुख-सम्पदा हो, दूर सारे कष्ट हों।।

यज्ञ से दुष्काल मिटते, यज्ञ से जल-वृष्टि हो।
यज्ञ से धन-धान्य हो, बहु भाँति सुखमय सृष्टि हो।
यज्ञ है प्रिय मोक्षदाता, यज्ञ-शक्ति अनूप है।
यज्ञ-मय यह विश्व है, विश्वेश यज्ञ-स्वरूप है।।
यज्ञमय अखिलेश ! ऐसी आप अनुकम्पा करें,
यज्ञ के प्रति आर्य जनता में अमित श्रद्धा भरें।।
यज्ञ पुण्य 'प्रकाश' से सब पाप, ताप, तिमिर हरें।
यज्ञ-नौका से अगम संसार-सागर को तरें।।

272

यज्ञरूप प्रभो ! हमारे भाव

यज्ञरूप प्रभो ! हमारे भाव उज्ज्वल कीजिए।
छोड़ देवें छल, कपट को, मानसिक बल दीजिए।।

वेद की बोलें ऋचाएँ, सत्य को धारण करें।
हर्ष में हों मग्न सारे, शोक-सागर से तरें।।

अश्वमेधादिक रचाएँ, यज्ञ पर - उपकार को।
धर्म - मर्यादा चलाकर लाभ दें संसार को।।
नित्य श्रद्धा भक्ति से यज्ञादि सब करते रहें।
रोग-पीड़ित विश्व के संताप सब हरते रहें।।

भावना मिट जाए मन से पाप, अत्याचार की।
कामनाएँ पूर्ण होवें यज्ञ से नर - नार की।।

लाभकारी हो हवन हर प्राणधारी के लिए।
वायु, जल सर्वत्र हों शुभ गंध को धारण किए।।

स्वार्थ भाव मिटे हमारा, प्रेमपथ विस्तार हो।
'इदन्नमम' का सार्थक प्रत्येक में व्यवहार हो।।

प्रेम-रस से तृप्त होकर, वंदना हम कर रहे।
नाथ करुणा रूप ! करुणा आपकी सब पर रहे।।

273

यज्ञोपवीत लेकर

यज्ञोपवीत लेकर खुद को निहारना है।
जीवन सुधारने का संकल्प धारना है। जीवन···
हर झूठ की तरफ से मुँह अपना फेरना है।
सच्चे व्रतों का पालन करने की प्रेरणा है।
तप, त्याग, साधना को हरदम उभारना है। जीवन···
गायत्री जाप, सन्ध्या, स्वाध्याय, यज्ञ करना।
दुष्टों की संगति में हरगिज न पाँव धरना।
भगवान को कभी न दिल से बिसारना है। जीवन···
समझो ये तीन ऋण हैं कंधे पे तीन धागे।
जब तक हैं प्राण इनसे व्यक्ति कभी न भागे।
माता-पिता, गुरु के ऋण को उतारना है। जीवन···
पितरों की टहल-सेवा, देवों की उचित पूजा।
ऋषियों के संग जैसा कर्त्तव्य है न दूजा।
निष्कपट, स्वच्छ, सुन्दर जीवन गुजारना है। जीवन···
नेकी के काम कर के फल की न चाह लाना।
निष्काम-भाव होकर औरों के काम आना।
शिक्षा का सूत्र है यह, मन में विचारना है। जीवन···
शुभ चिह्न आर्यों का यज्ञोपवीत है यह।
सब श्रेष्ठ लोग पहनें, ऋषियों की रीत है यह।
दुनिया में 'पथिक' इसके यश को निखारना है। जीवन···

274

यज्ञ कर्म का करता

यज्ञ कर्म का करता, जो कहलाता यजमान।
तेरह चीजें उसको वह प्रभुवर करे प्रदान।।
मानव देही, वर्ण श्रेष्ठतम्।
वैभवशाली, दीर्घायु तन।।
रोगरहित काया का जो पाता है वरदान।
तेरह चीजें उसको वह प्रभुवर करे प्रदान।1।
मित्र हितैषी, सुत सुखदायक।
नारी सुशीला, हो गृहनायक।।
भक्त बने ईश्वर का, हो पूरा विद्यावान।
तेरह चीजें उसको वह प्रभुवर करे प्रदान।2।
आर्यजनों का मिलता संगठन।
इन्द्रिय-जय, घम में चंचल मन।।
पात्र परख के देता वह अपने धन का दान।
तेरह चीजें उसको वह प्रभुवर करे प्रदान।3।
अति सर्वोत्तम यज्ञ - कर्म है।
हर मानव का यही धर्म है।।
ऋषि-मुनि गाते हैं, 'नरदेव' यज्ञ का गान।
तेरह चीजें उसको वह प्रभुवर करे प्रदान।4।

275

यही चाहते हैं

यही चाहते हैं प्रभु दीनबंधु, हमें आप अपने हृदय बसा लो।
सदा आपके हाथ सँवरते रहें हम, कृपा कीजिए और हमें जगमगाओ।।

यह संसार-सागर न कोई सहारा,
चली बहती नैया न सूझे किनारा,
तुम्हारे सिवा कौन जग में हमारा,
दयामय दया के वरद को बढ़ाओ। यही चाहते हैं···

निरोगी रहें हम, अभोगी रहें हम,
न दुःख दें किसी को न शोकी बनें हम,
रहें डूबते स्नेह - रस में तुम्हारे,
प्रभो ! अपनी भक्ति को प्रतिपल बढ़ाओ। यही चाहते हैं···

पियें प्रेम-अमृत, सभी को पिलायें,
जियें सर्वदा और सभी को जिलायें,
सुखी और सर्वदा ही रहें जीव सारे,
प्रभो ! ऐसी करुणा सभी पर बनाओ। यही चाहते हैं···

276

यह वेदोक्त विवाह रचाना

यह वेदोक्त विवाह रचाना, मेरे मन को भाया है।
वह मर्याद पुनीत निभाना, मेरे मन को भाया है।।
विविध प्रकार सुसज्जित, चित्रित वेदी सुघड़ बनाई है।
रोग-निवारक, शुद्ध यज्ञ की सुगन्ध चहुँदिशी छाई है।।
सुन्दर वातावरण बनाना मेरे मन को भाया है।
यह वेदोक्त विवाह रचाना, मेरे मन को भाया है।।
वधू और वर दोनों पढ़ते, स्वयं प्रतिज्ञा-मन्त्रों को।
आशय समझाते पण्डितगण उन्हें और श्रोताओं को।।
सुकवि, गायकों का मृदु गाना, मेरे मन को भाया है।
यह वेदोक्त विवाह रचाना, मेरे मन को भाया है।।
विधिवत् सकल विवाह-क्रियाएँ श्री आचार्य कराते हैं।
श्रेष्ठ गृहस्थाश्रम की महिमा सब महान् बतलाते हैं।।

पण्डित, ज्ञानी योग्य बुलाना, मेरे मन को भाया है।
यह वेदोक्त विवाह रचाना, मेरे मन को भाया है।।
हैं गुण, कर्म, स्वभाव एक-से दोनों योग्य वधू-वर हैं।
इनकी देख अनोखी शोभा, हर्षित सब नारी-नर हैं।।
ऐसी जोड़ी सुघड़ बनाना मेरे मन को भाया है।
यह वेदोक्त विवाह रचाना, मेरे मन को भाया है।।
नाम नहीं है दहेज आदिक, घातक बुरी प्रथाओं का।
करते हैं सम्मान सभी जन, मातृशक्ति कन्याओं का।।
श्रद्धा, स्नेह - भाव दरसाना, मेरे मन को भाया है।
यह वेदोक्त विवाह रचाना, मेरे मन को भाया है।।
यही विनय प्रभु परम-पिता से, सौ वर्षों वर-वधू जियें।
हो 'प्रकाश' आनन्द चतुर्दिक्, प्रेम-सुधारस सभी पियें।।
अहो! आज का दिवस सुहाना, मेरे मन को भाया है।
यह वेदोक्त विवाह रचाना, मेरे मन को भाया है।।

277

यदि जगन्नाथ स्वामी

यदि जगन्नाथ स्वामी 'दयानन्द' को,
विषमिला दूध उस दिन पिलाता नहीं।
तो स्वर्ग-सम वतन सारा आता नजर,
कहीं पाखंड ढूँढ़े से पाता नहीं।।

उड़ती रहती सुगन्धी हवन की यहाँ,
सन्ध्या करते थे घर-घर में नर-नारियाँ।
एक ईश्वर की पूजा ही होती यहाँ,
कोई पाषाण को सिर झुकाता नहीं।।1।।

दीप कबरों पे जलते न आते नजर,
कोई विश्वास पीरों का करता नहीं।
पाप-कर्मों से माफी की कर चाहना,
नदी गंगा में जाकर नहाता नहीं।।2।।

जाति - पाँति यहाँ मानता न कोई,
सिर्फ मानव की जाति ही सब मानते।
धर्म क्या है समझ जाते सब असलियत,
तीर्थों में कोई धक्के खाता नहीं।।3।।

टुकड़े होते हमारे नहीं देश के,
राज्य आर्यों का होता यह सच मानिये।
तो न बहता यहाँ खून गौ-मात का,
कोई गले पर कटारी चलाता नहीं।।4।।

भुखमरी देश में कभी आती नहीं,
कोष धन-धान्य से खाली रहते नहीं।
गिरता जल वक्त पर, होती पैदा अधिक,
देश राशन विदेशों का खाता नहीं।।5।।
गाने अश्लील देते सुनाई नहीं,
रेडियो व सिनेमाघरों में कहीं।
वेद - प्रचार होता यहाँ हर जगह,
फिर तो संकट कभी शीश आता नहीं।।6।।

बनती बिगड़ती दशा देश सारे की फिर,
इच्छा पूरी हुई न दयानन्द की।
रह अधूरा गया कार्य ऋषि-राज्य का,
'राघवार्य' बस कुछ बसाता नहीं।।7।।

278

यहाँ बाबा बड़ा न भैया

यहाँ बाबा बड़ा न भैया सबसे है बड़ा रुपैया।
इसी के सारे रिश्ते-नाते सबका यही रवैया।।
यहाँ बाबा बड़ा न भैया···
गोल रुपैया चाँदी का हो या कागज़ का नोट।
छोटा-सा है फिर भी इसकी बहुत बड़ी है ओट।
इसके आगे थम जाती है वेगवति पुरवैया।
यहाँ बाबा बड़ा न भैया···
किसी तरह से मिले रुपैया यत्न करें दिन-रैन।
पल-दो-पल के लिए भी देखा नहीं किसी को चैन।
धन की वर्षा से भी मन की भरती नहीं तलैया।
यहाँ बाबा बड़ा न भैया···
पास रुपैया हो तो सारे बन जाते हैं यार।
लेकिन खाली जेब देखकर देते हैं दुत्कार।
आज ढूँढ़ता फिरे सुदामा मिलता नहीं कन्हैया।
यहाँ बाबा बड़ा न भैया···
'पथिक' रुपये के चक्कर में चला आज का दौर।
कहीं देख लो बना आदमी कठपुतली के तौर।
नाच रहा है बिना ताल के ता थैय्या ता थैया।
यहाँ बाबा बड़ा न भैया···

279

यही है अभिलाषा

यही है अभिलाषा भगवान।
प्रातः-सायम् नित्य नियम से, गाऊँ तेरा गान।।
वेदों का पथ भूल न जाऊँ।
सत्य, अहिंसा को अपनाऊँ।।
सत्यासत्य, पुन्य-पापों का, होवे मुझको ज्ञान।।1।।
मन में भाव बुरे न आवें।
पाप-कर्म न होने पावें।।
किसी तरह का लेशमात्र भी, हो न मुझे अभिमान।।2।।
दुखी-जनों का बनूँ सहाई।
देश-धर्म की करूँ भलाई।।
लड़ते-लड़ते धर्म लड़ाई, हो जाऊँ बलिदान।।3।।
संकट में न कभी घबड़ाऊँ।
साहस कर बढ़ता ही जाऊँ।।
डरूँ नहीं मैं 'नरदेव' बनूँ मैं आर्य निडर, बलवान।।4।।

280

यही रंग रँगाने

टेक—मेरा रंग दे बसन्ती चोला।
यही रंग रँगाने श्रद्धानन्द, दिल्ली में ही आते हैं।
आर्य-जाति की खातिर, प्राणों की भेंट चढ़ाते हैं।
कातिल ने भी पीकर पानी, फिर पिस्तौल को खोला।।
मेरा रंग दे०।।1।।

इसी चाँदनी चौक के अन्दर, घण्टाघर था खड़ा हुआ।
घण्टाघर के नीचे लोगो ! शेर बबर था अड़ा हुआ।
खोलो गन-मशीनें खोलो, मैंने सीना खोला।।
मेरा रंग दे०।।2।।

जामा मस्जिद के भिम्बर पर, श्रद्धानन्द जब आते हैं।
दयानन्द की जय के नारों से आकाश गुंजाते हैं।
मस्जिद में छा गया सन्नाटा, वेद-मन्त्र जब बोला।।
मेरा रंग दे०।।3।।

जलियाँवाले बाग के अन्दर, कौन मोर्चे पर आया।
कांग्रेस का अध्यक्ष बना, और हिन्दी को ही अपनाया।
अली ब्रादर और गांधी के, आगे वह न डोला।
मेरा रंग दे०।।4।।

गंगा और यमुना की धरती, इनको मूल न भाती है।
अरब की रेत और ऊँट की बोली इनको खूब सुहाती है।
इसी वास्ते गाते फिरते, मदीने बुला ले मौला।
मेरा रंग दे०।।5।।

281

यही है कामना भगवन्

यही है कामना भगवन्, मेरा जीवन निराला हो।
परोपकारी, सदाचारी वा लम्बी आयु वाला हो।।
तजूँ सब खोटे भावों को, तजूँ दुर्वासनाओं को।
तेरे विज्ञान-दीपक से मेरे मन में उजाला हो।।1।।
मेरा वेदोक्त हो जीवन, बनूँ मैं धर्म-अनुयायी।
रहूँ आज्ञा में वेदों की, ना हुक्मे - वेद टाला हो।।2।।

करूँ नित्य पंचयज्ञों को, बनूँ सेवक मैं सज्जनों का।
मेरा तन, मन व धन दुखियों के दुखड़े हरने वाला हो।।
तजूँ छल, झूठ, चालाकी, बनूँ सत्संग अनुरागी।
दोषों और बुराईयों से, मेरा जीवन निराला हो।।3।।
तेरी भक्ति में ओ भगवन् ! लगा दूँ अपना मैं तन-मन।
दिखाने के लिए हाथों में, थैली हो न माला हो।।4।।

282

ये क्या कर रहे हो

ये क्या कर रहे हो किधर जा रहे हो।
अन्धेरे में क्यों ठोकरें खा रहे हो।।
कहो क्या यही काम है ब्राह्मणों को।
कि दुनिया को बातों से बहका रहे हो।।
बनाया है खुद अपने हाथों से जिसको।
गजब है खुदा उसको बतला रहे हो।
हो जिन्दा मगर नाम मुर्दों का लेकर।
पड़े मुफ्त में माले - तर खा रहे हो।
न मानेंगे हरगिज भी खुदगर्ज बन्दे।
'मुसाफिर' इन्हें व्यर्थ समझा रहे हो।।

283

यह सुन्दर भवन बन जाना

(गृह-प्रवेश बधाई)

यह सुंदर भवन बन जाना, बधाई हो बधाई हो।
यह गृह-प्रवेश करवाना, बधाई हो बधाई हो।।

कराया यज्ञ-हवन उत्तम, हुआ जो वेद-मन्त्रों से।
सुगंधित वायु फैलाना, बधाई हो बधाई हो।

बनाया है भवन सुंदर, रहे सबको यह सुखकारी।
सभी मित्रों का यहाँ आना, बधाई हो बधाई हो।।

रहे आनंद का वातावरण, प्रभु-कृपा से इस घर में।
यह उद्‌घाटन का करवाना, बधाई हो बधाई हो।।

प्रभु-कृपा अति भारी, हुआ है यह भवन पूर्ण।
सदा सुख-शांति ही पाना, बधाई हो बधाई हो।।

सदा कल्याण की वर्षा, रहे ईश्वर की कृपा से।
'सेवक' ईश्वर के गुण गाना, बधाई हो बधाई हो।।

284

योगीराज श्रीकृष्ण का

योगीराज श्रीकृष्ण का, जीवन-चरित्र पवित्र।
बारम्बार निहारिये, यह मनभावन चित्र।।

यह मनभावन चित्र, मित्र जब मिले सुदामा।
छाती लिये लगाये, करी स्वागत की सामा।।

सब विधि से सत्कार, प्यार कर के बैठाये।
देख दीन की दशा अश्रु नयनन भर लाये।।

ऐसे उपकारी महामानव के गुण गायें।
उनके जन्मोत्सव को मिलकर सभी मनायें।।

कौन कहे श्रीकृष्ण जी, पक्के माखन-चोर।
समझ न पाएँ भक्तजन, बुद्धि के कमजोर।।

बुद्धि के कमजोर, शोर यह वृथा मचाया।
वीतराग योगी को चोर-ज़ार बतलाया।।

दूध, घृत मथुरा में बिकना बन्द कराया।
गोपीन के संग नहीं कृष्ण ने रास रचाया।।

किया कंस का नाश, वंश का नाम मिटाया।
राधा के संग नहीं कृष्ण ने विवाह रचाया।।

285

रगों के तारों से

रगों के तारों से ओ३म् निकले।
बजा तू मन की रबाब करके ।।

जहाँ में आकर तुझे मिला क्या।
यह जन्म अपना खराब करके।।

जहाँ के विषयों में फँसकर मूर्ख।
क्यों फिरता है भटकता दर - दर।

जवाब देगा क्या ईश को तू।
जो पूछे तुझसे हिसाब करके।।

यह नाच, मुजरा तमाम झूठा।
तू इनमें मन को लगा न हरगिज।

प्रेम - प्याला प्रभु की भक्ति।
उसी को पी जा शराब कर के।।

286

रक्षाबन्धन आ गया

रक्षाबन्धन आ गया, राखी का त्यौहार।
सावन मास सुहावना, भाई-बहन का प्यार।।

राखी का त्यौहार, सभी को लगता नीका।
राखी बाँधी कलाई में, बहन करती है टीका।।

पावन दिवस सलौना, लख है अति प्रसन्न मन।
वेद कथा हो रही, आ गया रक्षाबन्धन।।

287

राम के पुजारी बने

राम के पुजारी बने, पूरे नशेबाज है।
कैसा रामराज्य है ये कैसा रामराज्य है।।

करते राम-राम, बीड़ी-सिगरेट उड़ा रहे।
हिप्पी बने घूमें, गीत फिल्मी खूब गा रहे।।

फैशन में रमे, न धर्म-कर्म का अन्दाज है।
कैसा रामराज्य है ये कैसा रामराज्य है।।

मुर्गी, भेड़, बकरी, मीन, काट-काट खा रहे।
अण्डे, सुरापान करें, विटामिन बता रहे।।

दानवता अपनाई कोई शर्म न लिहाज है।
कैसा रामराज्य है ये कैसा रामराज्य है।।

जगह-जगह ठेके खुले अनगिनती शराब के।
ब्राह्मण, वैश्य आदि बने, अण्डे व कबाब के।।

युवकों ने पकड़ा कैसा बेहूदा रिवाज है।
कैसा रामराज्य है ये कैसा रामराज्य है।।

चाय, मीट, केक, आमलेट खान-पान बना।
दूध-घृत गया आ के डालडा प्रधान बना।।
कहै 'स्वरूपानन्द' डूबे सिन्धु में जहाज है।
कैसा रामराज्य है ये कैसा रामराज्य है।।

288

राखी का त्यौहार है

राखी का त्यौहार है, भाई - बहन का प्यार है।
चारों तरफ हरियाली छाई, आ रही अजब बहार है।।
रंग-बिरंगी राखी सुन्दर, शोभा लगे कलाई में।
रक्षा-बन्धन स्वर्ण सलौना, हर्ष बहिन व भाई में।।
बहे प्रेम की धार है, खुशियों की बौछार है।
सखी-सहेली झूलें झूला, गातीं गीत मलहार हैं।।1।।
दादुर, मोर, पपीहा, कोयल मीठा गान सुनाते हैं।
लख घन की घनघोर, सभी पक्षीगण मन हर्षाते हैं।।
मन में खुशी अपार है, करें परस्पर प्यार है।
नन्ही-नन्ही बूँद पड़ें, और ठंडी चले बयार है।।2।।
यह ब्राह्मण त्यौहार श्रावणी, सबके मन को भाया है।
वेद-प्रवचन, भजन-कीर्तन, जग में नाद बजाया है।
तबला और सितार हैं, वीणा और गिटार हैं।
यज्ञादि शुभ श्रेष्ठ कर्म, ये वेदों के अनुसार हैं।।3।।
वेद ईश्वरी ज्ञान, वेद का पढ़ना और पढ़ाना है।
वैदिक विचार, व्यवहार नेक, छल, घृणा, द्वेष मिटाना है।।
शुद्ध पवित्र विचार है, ऋषि को जय - जयकार है।
कहे 'स्वरूपानन्द', वेद ही विद्या का भण्डार है।। 4।।
राखी का त्यौहार है, भाई - बहन का प्यार है।
चारों तरफ हरियाली छाई, आ रही अजब बहार है।।

289

रे पुजारी !

रे पुजारी ! स्वार्थतम यह पाठ-पूजन और है।
किन्तु उस भगवान का निष्काम चिन्तन और है।।
देखते हैं जिसमें हम उस दिव्यदर्पणकार को।
जग के दर्पण से अलग वह मन का दर्पण और है।।1।।
इन गरजने वालों का विश्वास करना व्यर्थ है।
तृप्त करता जो तृषित को वह सजल घन और है।।2।।
भर न दम वैराग्य का अय ! राग के रंग में रंगे।
त्याग के रंग में रंगा वह सन्त-जीवन और है।।3।।
देख बाहर की चमक धोखा न खाना तू 'प्रकाश'।
ये अरे ! पीतल निरा है, शुद्ध कंचन और है।।4।।

290

लेता है जन्म जो

लेता है जन्म जो मरता है एक दिन,
व्यर्थ ही मरे के लिए रोना नहीं चाहिए।
देगी न पैदावार खेती जो बन्जर हो,
ऐसे में बीज कभी बोना नहीं चाहिए।
बचना जो रोगों से, रहो सदाचार से,
सूर्य उगने के बाद सोना नहीं चाहिए!
मिलती नहीं देही 'राघव' मनुष्य की बार-बार,
विषयों में जीवन व्यर्थ खोना नहीं चाहिये।

291

लहराएगा, लहराएगा

लहराएगा, लहराएगा झण्डा प्यारा ओ३म् का।।
महलों पर मीनारों पर, कोट-किले भण्डारों पर।
गाँव, गली, बाजारों के द्वारे पर, दीवारों पर।।
लहराएगा, लहराएगा झण्डा प्यारा ओ३म् का।।1।।
हमें ओ३म् ध्वज प्यारा है, आँखों का ये तारा है।
मन का यही सहारा है, सब-कुछ यही हमारा है।
लहराएगा, लहराएगा झण्डा प्यारा ओ३म् का।।2।।
गरमा गया लहू ठण्डा, पाप का फोड़ेंगे भण्डा।।
बरसा ले लाठी-डण्डा, नहीं झुकेगा यह झण्डा।
लहराएगा, लहराएगा झण्डा प्यारा ओ३म् का।।3।।
ओ३म्-ध्वजा लेकर कर में, गूँजा वेद-ध्वनि घर-घर में।
कर प्रचार दुनिया-भर में, गा 'प्रकाश' ऊँचे स्वर में।।
लहराएगा, लहराएगा झण्डा प्यारा ओ३म् का।।4।।

292

लो बिन ब्याहे ही

लो बिन ब्याहे ही लड़की को हम तो लौटे जाते हैं।
ऐसी धमकी सुन कन्या के मात-पिता घबराते हैं।।
देते मुँहमाँगा दहेज हैं बेच - बाच पूँजी सारी।
छोड़ो-छोड़ो दहेज लेना भारत के हे नर-नारी !
दहेज के कारण कितनी कन्या क्वारी रह जाती हैं।
दहेज के कारण कितनी कन्या कराल विष खाती हैं।।
दहेज के कारण कितनी कन्या अयोग्य वर पाती हैं।
दहेज के कारण कितनी कन्या निज देह जलाती हैं।।

दहेज के कारण ही घर बरबाद सैकड़ों होते हैं।
दहेज के कारण कितने ही ऋणी जन्मभर रोते हैं।।
दहेज के कारण कितनी हो सन्तति अनपढ़ बेचारी।
छोड़ो-छोड़ो दहेज लेना भारत के हे नर-नारी!
कन्याओं के मात-पिता आदिक पर नेह-निगाह करो।।
सब-कुछ दिया सुता जिसने दी।

293

व्यर्थ समय न गँवाया करो

व्यर्थ समय न गँवाया करो।
गीत प्रभु जी दे गाया करो।
इक पल वी परमेश्वर नूँ
दिल चों कदे न भुलाया करो। व्यर्थ समय…

हक जीवन दा लै के आया दुनिया ते हर प्राणी।
हर दिल अन्दर प्रभु वस्सदा ए सत्पुरुषां दी वाणी।

दिल न किसे दा दुखाया करो।
गीत प्रभु जी दे गाया करो। व्यर्थ समय…

मानव मानव एक बराबर ईश्वर दे सब बन्दे।
खुदगर्जां ने आन बिछाए मजबां दे सब फन्दे।

सब मतभेद मिटाया करो।
गीत प्रभु जी दे गाया करो। व्यर्थ समय…

हुन्दा आया हो के रहवेगा परमेश्वर दा भाणा।
जो मिलदा ए वण्ड के खा लौ जग तों कीह लै जाणा।

कल्लेयाँ कदे वी न खाया करो।
गीत प्रभु जी दे गाया करो। व्यर्थ समय…

तूँ वी मुसाफिर मैं वी मुसाफिर सिर ते रात हनेरी।
'पथिक' कहे जो मन्जिल तेरी ओहियो ई मन्जिल मेरी।

भुल्लेयाँ नूँ राह दिखाया करो।
गीत प्रभु जी दे गाया करो। व्यर्थ समय…

294

वह प्यारा गीत मैं

वह प्यारा गीत मैं गा न सका, जो गीत मैं गाने आया था।
वह सुन्दर साज़ बजा न सका, जो साज़ बजाने आया था।

1—उलझी सितार की तारों को सुलझाने में ही लगा रहा।
तबले, बाजे के साथ आवाज़ मिलाने में ही लगा रहा।
यह भूल गया मैं प्रीतम को संगीत सुनाने आया था।।
वह प्यारा गीत…

2—आसन भी सिद्ध न कर पाया न प्राणायाम को अपनाया।
हृदय-मन्दिर में रहता है, फिर भी दर्शन न कर पाया।
चिन्ताओं ने मकड़ी की तरह कुछ ऐसा जाल बिछाया था।।
वह प्यारा गीत…

3—आशा थी मानव-देह पाकर मैं उत्तम कर्म कमाऊँगा।
इस जन्म-मरण के बन्धन से अब मैं छुटकारा पाऊँगा।
मुक्ति पाने के लिए मैंने यह नर-तन चोला पाया था।।
वह प्यारा गीत…

4—इस घोर अँधेरी नगरी में मैं ज्ञान का दीप जलाऊँगा।
कर के प्रकाश निज जीवन में संसार को भी चमकाऊँगा।
इस भावना को लेकर मैंने घर-बार सभी बिसराया था।।
वह प्यारा गीत…

5—अब इन सोचों में डूबा हूँ, प्रीतम को कहाँ बिठाऊँगा।
नहीं योग-साधना की मैंने, प्रभु-दर्शन कैसे पाऊँगा।
कुछ बात न बनती नजर आये, मैं भाग्य बनाने आया था।।
वह प्यारा गीत...

295

वही पूज्य गुरु है

महर्षि-महिमा

वही पूज्य गुरु है दयानन्द मेरा।।
असत् शम्भु की पूजा जिसने बिसारी।
बना सच्चे शंकर का जो था पुजारी।।
धरा, धाम, सुख-लाज पर लात मारी।
बना लोक-हित पूर्ण जो ब्रह्मचारी।।
दशा जिसने भारत की बिगड़ी सुधारी।
किये एक जिसने शिखा-सूत्रधारी।।
धरमवीर, सेवा - व्रती, क्रान्तिकारी।
बनाए थे जिसने बहुत नर व नारी।।
किया जिसने फिर जागृति का सवेरा।
वही पूज्य गुरु है दयानन्द मेरा।।1।।
नया पन्थ जिसने न कोई चलाया।
पुरातन जो वेदों का सन्देश लाया।।
अविद्या का जिसने विकट दुर्ग ढाया।
अनार्यों को फिर आर्य जिसने बनाया।।
प्रथम जिसने नारी-जगत् को जगाया।
अनाथ और विधवा को धीरज बँधाया।।
छुआछूत का भूत जिसने भगाया।
गऊ-रक्षा का प्रश्न जिसने उठाया।।

कृपा-हस्त जिसने दलित जन पै फेरा।
वही पूज्य गुरु है दयानन्द मेरा।।2।।
चलाने को फिर वेद-शिक्षा-प्रणाली।
यहाँ नींव गुरुकुल की जिसने थी डाली।।
पुनः आर्य-जाति सुसाँचे में ढाली।
बहा जिसने दी गंगा सत्ज्ञान वाली।।
बना जो कि भारत के उपवन का माली।
हृदय-रक्त से सींची हर डाली-डाली।।
की हरियाली चहुँ दिशि,विपद् जिसने टाली।
नई जान डाली, शिथिलता निकाली।।
उखाड़ा था भ्रम-भूत का जिसने डेरा।
वही पूज्य गुरु है दयानन्द मेरा।।3।।
मेरी शिक्षा पै आर्यो ! ध्यान धरना।
मेरे बाद ऐसी न तुम भूल करना।।
समाधि न मेरी कहीं तुम बनाना।
न चद्दर न तुम फूलमाला चढ़ाना।।
न गंगा तुम मेरी अस्थि बहाना।
न पुष्कर, गया अस्थियाँ ले के जाना।
ये झंझट न तुम व्यर्थ के मोल लेना।।
मेरी अस्थियाँ खेत में डाल देना,
कि जिससे मेरी अस्थियाँ खाद बन के।
कभी काम आएँ कृषक दीन-जन के।।
यूँ कह जिसने टाला अविद्या का घेरा।
वही पूज्य गुरु है दयानन्द मेरा।।4।।
परम लक्ष्य था जिसका जग की भलाई।
बराबर थी जिसको प्रशंसा, बुराई।।
क्षमाशीलता खूब जिसने दिखाई।
दिया जिसने विष, जान उसकी बचाई।।

296

वह सब के दिल में

वह सब के दिल में रहता है, दिल में ही पाओगे।
गर बाहर जाओगे तो धोखा खाओगे। वह सब के…

सृष्टि को बनाता है और खुद ही चलाता है।
दुनिया का रक्षक है, सबका वह दाता है।
उसकी यह माया है, कण-कण में समाया है।
यह सब अपने दिल को तुम कब समझाओगे।
वह सब के दिल में रहता है…

तीर्थ पर जाने में, मल-मल के नहाने में।
फल-फूल चढ़ाने में, खुद को भटकाने में।
कुछ भी न हाथ लगा और जीवन बीत गया।
तब तलियाँ मल - मल के रोते रह जाओगे।
वह सब के दिल में रहता है…

जितने भी प्राणी हैं सबका मन मंदिर है।
ईश्वर हर प्राणी के मंदिर के अंदर है।
इनकी जो सेवा है, फल मीठा मेवा है।
अनजान 'पथिक' समझो वरना पछताओगे।
वह सब के दिल में रहता है…

297

वेद है कल्याणी वाणी

वेद है कल्याणी वाणी, सर्वज्ञ भगवान् की।
जिसके अर्थ ज्ञान में हैं, पहुँच अनूचान की।।

शुद्ध अन्तःकरण जिसका, तपस्वी होवे महान्।
पक्षपात करे नहीं, विद्वानों में पावे मान।।

ऋषि-पद पाया जिसने, कर के पूरा ब्रह्मज्ञान।
बुद्धि शुद्ध जिसकी, उसको अनूचान जान।।
बन के अनूचान समझा वेद दयानन्द ने।
सत्य का प्रकाश किया, पड़े थे सब अन्ध में।।
आर्य बनाओ सबको, वेद का आदेश है।
पढ़ो वेद जानो ब्रह्म, दयानन्द-सन्देश है।।

298

वेद के सन्देश को

वेद के सन्देश को घर-घर सुनाकर चल दिये।
जाति-रक्षा के लिए खुद को मिटाकर चल दिये।।
स्वामी श्रद्धानन्द जी का यह शहीदी है दिवस।
शुद्धि की खातिर स्वामी गोली खाकर चल दिये।।
जाति-पाँति, कौम का यह एक भयानक रोग है।
जन्म के अभिमान को वृथा बताकर चल दिये।।
चाहते हैं संगठन तो छोड़ दें नफरत के राग।
देश में फिर प्रेम की गंगा बहाकर चल दिये।।
धर्म-रक्षा में सहे सब कष्ट श्रद्धानन्द ने।

299

वेद को पढ़ना-पढ़ाना

वेद को पढ़ना - पढ़ाना चाहिए।
वेद को सुनना - सुनाना चाहिए।।
वेद के अनुकूल ही हे आर्यो !
आचरण अपना बनाना चाहिए।।1।।

यज्ञ, उत्सव, धार्मिक सत्संग में।
नित, सहित परिवार आना चाहिए।।2।।

छल, कलह से पूर्ण वातावरण में।
प्रेम की गंगा बहानी चाहिए।।3।।

हो के अब आरूढ़ निज कर्त्तव्य पर।
कुछ तो ऋषि का ऋण चुकाना चाहिए।।4।।

मत भलाई तुम किसी की भूलना।
हाँ ! भला कर भूल जाना चाहिए।।5।।

लाभ कहने से न कुछ होगा 'प्रकाश'।
कार्य कुछ कर के दिखाना चाहिए।।6।।

300

वेद की ज्योति

वेद की ज्योति जिसने जगाई विमल,
भक्ति सिखलाई शिव सच्चिदानन्द की।
मन्त्र स्वाधीनता का पढ़ाया प्रथम,
कुप्रथा भिन्नता, भेद की बन्द की।
नारियों को दिलाया उचित स्वत्व फिर,
की प्रगति मन्द पाखण्ड, छल-छन्द की।
आर्य नर-नारियो! प्रेम से बोलिये,
जय उसी पूज्य ऋषिवर दयानन्द की !

301

वेद से यह सार

वेद से यह सार ऋषियों ने निकाला है।
मनुज का तन एक सुन्दर यज्ञशाला है।

1. श्रवण, चक्षु, नासिका, त्वक्, जिह्वा, मन, बुद्धि यहाँ।
सात ऋत्विज मिल निरन्तर यज्ञ करते हैं यहाँ।
जिसका रक्षा - कार्य प्राणों ने सँभाला है।
मनुज का तन एक सुन्दर...

2. प्रेम की समिधाओं से जलती है अग्नि ज्ञान की।
आहुति है सत्य की और भावना बलिदान की।
भक्ति, श्रद्धा का यहाँ पर बोलबाला है।
मनुज का तन एक सुन्दर...

3. इसमें उठती है सुगन्धि परम दिव्यानन्द की।
मन्द आत्म-प्रकाश से होवे छटा रवि, चन्द की।
हर तरफ होता उजाला ही उजाला है।
मनुज का तन एक सुन्दर...

4. भाग्य से नर-तन मिला है यज्ञ करने के लिए।
ईश के आनन्द-सागर में उतरने के लिए।
'पथिक' यह आनन्द दुनिया से निराला है।
मनुज का तन एक सुन्दर...

302

वेद ही जग में हमारा

वेद ही जग में हमारा, ज्योति जीवन-सार है।
वेद ही सर्वस्व प्यारा, पूज्य प्राणाधार है।।

सत्यविद्या का विधाता, ज्ञान का गुरु गेय है।
मानवों का मुक्तिदाता, धर्म-धी का ध्येय है।।
वेद ही परमेश प्रभु का, प्रेम-पारावार है।।1।।

ब्रह्मकुल का देवता है, राजकुल रक्षक रहा।
वैश्य-वंश-विभूषिता है, शूद्र-कुल-स्वामी महा।।
वेद ही वर्णाश्रमों का, आदि है आधार है।।2।।

श्रावणी का श्रेष्ठ उत्सव पुण्य पावन-पर्व है।
वेद-व्रत-स्वाध्याय वैभव, आज ही सुख सर्व है।
वेदपाठी विप्रगण का, दिव्य-दिन दातार है।।3।।

वेद का पाठन-पठन हो, वेद-वाद-विवाद हो।
वेद हित जीवन-मरण हो, वेद हित आह्लाद हो।।
आर्यजन का आज से व्रत विश्व वेद-प्रचार है।।4।।

"विश्व-भर को आर्य करना" वेद का संदेश है।
"मृत्यु से किंचित् न डरना" ईश का आदेश है।।
सृष्टि-सागर में हमारा वेद ही पतवार है।।5।।

303

वेदानुकूल जीवन बनाकर

वेदानुकूल जीवन बनाकर,
सच्ची प्रीति प्रभु से लगाकर,
जग में लेना सदा प्रेम हुलारे।

जीवन उद्देश्य को पूरा करना,
सत्य, धर्म के पथ पर ही चलना,
सेवा, नम्रता का भूषण भी धारे।

युग - युग जीवो अमर नाम होवे,
यज्ञ, सन्ध्या व शुभ काम होवे,
दाता बनकर बनो सब के प्यारे।

प्रभु-भक्ति से जीवन सफल हो,
द्वेष, दोष से हृदय विमल हो,
ब्रह्मलोक के पहुँचोगे द्वारे।

304

वेदों का डंका

वेदों का डंका आलम में
बजवा दिया ऋषि दयानन्द ने।
हर जगह ओ३म् का झण्डा फिर,
फहरा दिया ऋषि दयानन्द ने।।
अज्ञान, अविद्या की चहुँ दिश,
घनघोर घटाएँ छाई थीं।

305

वेद ही ईश्वरीय

वेद ही ईश्वरीय वाणी है।
सर्व संसार की कल्याणी है।।
वर्द्धिनी भौतिकात्म - शक्ति की है,
शिक्षिका ज्ञान, कर्म, भक्ति की है।
ये न मिथ्या, कपट, कहानी है,
वेद ही ईश्वरीय वाणी है।।
जितने प्रचलित हैं मत ये नूतन हैं।
साक्षी हिजरी व ईसवी सन् हैं।।
वेद की सभ्यता पुरानी है।
वेद ही ईश्वरीय वाणी है।।

पाप, सन्ताप क्षय हुए उनके।
जीवन आनन्दमय हुए उनके।।
वेद - शिक्षा जिन्होंने मानी है।
वेद ही ईश्वरीय वाणी है।।

आर्यो! जग सुखी बनाने को,
असत् - अज्ञान - तम मिटाने को,
वेद की ज्योति जगमगानी है।
वेद ही ईश्वरीय वाणी है।।

पढ़ो ऋषिराज का 'सत्यार्थ प्रकाश'
वेद प्रति श्रद्धा, भ्रान्ति होगी विनाश।
जो है निर्भ्रान्त वो ही ज्ञानी है।
वेद ही ईश्वरीय वाणी है।।

वेद - स्वाध्याय 'प्रकाशार्य' करो।
वेद - अनुकूल ही सब कार्य करो।।
मुक्ति त्रयताप से जो पानी है।
वेद ही ईश्वरीय वाणी है।।

306

वैदिक धर्म हमारा

वैदिक धर्म हमारा, वैदिक धर्म हमारा।
वरदान ईश का है, सर्वस्व प्राण - प्यारा।।
अविचल, अनादि, अनुपम, सुख-शांति-मोक्षदाता।
कल्याण, अभ्युदय का प्रिय पन्थ है बताता।।
सतृज्ञान की बहाता पावन अजस्त्र धारा।
वैदिक धर्म हमारा, वैदिक धर्म हमारा।।
बिन वेद-धर्म मानव अति ज्ञान-शून्य होता।
पशु-तुल्य इस जगत् में जीवन अमूल्य खोता।।

होता न सभ्यता का संसार में पसारा,
यदि विश्व में न होता वैदिक धर्म हमारा।।

307

वैदिक बगिया ऋषि की

वैदिक बगिया ऋषि की, छाई अजब बहार।
सभी जगह पर हो रहा, वेदों का प्रचार।।
वेदों का प्रचार, छवि है अजब निराली।
उमड़-उमड़ आए बादल, छाई हरियाली।।
जले नास्तिक देख धूर्त, पाखण्डी, ठगिया।
लहराती रहे हमेशा, ऋषि की वैदिक बगिया।।

308

वैदिक यज्ञ रचाया

वैदिक यज्ञ रचाया यह वैदिक यज्ञ रचाया।
स्तुति, प्रार्थना के मन्त्रों से।
इन उपासना के यन्त्रों से।
मन को शुद्ध बनाया। यह वैदिक यज्ञ···
जल से तीन आचमन कर के।
अंग स्पर्श कर स्फुरती भर के।
दीपक एक जलाया। यह वैदिक यज्ञ···
लेकर के समिधाएँ सुन्दर।
धरकर हवन-कुण्ड के अन्दर।
अग्नि को चमकाया। यह वैदिक यज्ञ···

तरल तपाया हुआ गर्म घी।
शुद्ध, सुगंधित ले सामग्री।
अपना हाथ बढ़ाया। यह वैदिक यज्ञ···
बोल के मन्त्र कहा जब स्वाहा।
बन गया दृश्य स्वर्गमय आहा।
सबने हर्ष मनाया। यह वैदिक यज्ञ···
इदन्नमम की भावना लेकर।
आहुतियाँ अग्नि में देकर।
परम प्रभु को ध्याया। यह वैदिक यज्ञ···
यज्ञ हमारा नित्य कर्म है।
हर मानव का परम धर्म है।
'पथिक' वेद समझाया। यह वैदिक यज्ञ···

309

वैदिक धर्म है प्यारा

वैदिक धर्म है प्यारा मुझे वैदिक धर्म है प्यारा।
कुल दुनिया से न्यारा मुझे वैदिक धर्म है प्यारा।
गुरुओं का भी गुरु है ईश्वर।
वेद दिए जिसने धरती पर।
बही ज्ञान की धारा। मुझे वैदिक धर्म है प्यारा···
ईश्वर ने जब जगत बनाया।
वेदों का प्रकाश फैलाया।
चार ऋषियों के द्वारा। मुझे वैदिक धर्म है प्यारा···
ऋषियों ने जो वेद सुनाया।
वही तो वैदिक धर्म कहाया।
सुने जमाना सारा। मुझे वैदिक धर्म है प्यारा···

ईश्वर, जीव, प्रकृति सदा से।
मिलकर तीनों की सत्ता से।
सकल जगत विस्तारा। मुझे वैदिक धर्म है प्यारा···
वर्णाश्रम की सुंदर सीढ़ी।
बनी रहे पीढ़ी दर पीढ़ी।
स्वर्ग का यही नजारा। मुझे वैदिक धर्म है प्यारा···
ऊँच-नीच न कोई यहाँ पर।
'पथिक' सभी इनसान बराबर।
कहे यह वेद हमारा। मुझे वैदिक धर्म है प्यारा···

310

वेला अमृत गया

वेला अमृत गया, आलसी सो रहा बन अभागा।
साथी सारे जगे तू न जागा।।
झोलियाँ भर रहे भाग्य वाले, लाखों पतितों ने जीवन सँभाले।
रंक राजा बने, भक्ति-रस में सने, कष्ट भागा।
साथी सारे जगे तू न जागा।।1।।
कर्म उत्तम थे नर-तन जो पाया, आलसी बन के हीरा लुटाया।
उलटी हो गई मति, कर के अपनी क्षति रोने लागा।
साथी सारे जगे तू न जागा।।2।।
धर्म वेदों का देखा, न पाला, वेला अमृत गया न सँभाला।
सौदा घाटे का कर, हाथ माथे पर धर रोने लागा।
साथी सारे जगे तू न जागा।।3।।
बन्दे तूने न कुछ भी विचारा, सिर से ऋषियों का ऋण न उतारा।
हंस का रूप था, गंदला पानी पिया बन के कागा।
साथी सारे जगे तू न जागा।।4।।

311
विश्वपति जगदीश तू

विश्वपति जगदीश तू तेरा ही ओ३म् नाम है।
मस्तक झुका के हे प्रभु तुझको ही प्रणाम है।।
सृष्टि बना के पालना दाता है तेरे हाथ में।
करना प्रलय भी अन्त में तेरा ही नाथ काम है।। विश्वपति...
ऋतुएँ बदल के आ रही हैं, नदियाँ सिन्धु में जा रहीं।
शाम के बाद है सुबह, सुबह के बाद शाम है।। विश्वपति...
सूर्य समय पर ढल रहा, वायु नियम से चल रही।
झुकता है सर देखकर तेरा जो इन्तजाम है।। विश्वपति...
आता नजर नहीं मगर, है कण-कण में वह रमा हुआ।
जग में जहाँ पे तू नहीं ऐसा न कोई धाम है।। विश्वपति...
होता न्याय है सदा ईश्वर तेरे दरबार में।

312
शरण प्रभु की आओ रे

शरण प्रभु की आओ रे यही समय है प्यारे।
छल-कपट और झूठ को त्यागो, सत्य में चित्त लगाओ रे।।

उदय हुआ ओ३म् नाम का भानु, आओ दर्शन पाओ रे।
पान करो इस अमृत फल का, उत्तम पदवी पाओ रे।।

हरि की भक्ति बिन नहीं मुक्ति, दृढ़ विश्वास जमाओ रे।
मानुष जन्म अमोलक है यह, वृथा न इसको गँवाओ रे।।

कर लो नाम हरि का सुमिरन, अन्त को न पछताओ रे।
धन्य दया जो सबको पाले, मत उसको बिसराओ रे।।
छोटे-बड़े सब मिलकर खुशी से गुण ईश्वर के गाओ रे।।

313
शरण में आये हैं

शरण में आये हैं हम तुम्हारी दया करो हे दयालु भगवन्।
सँभालो बिगड़ी दशा हमारी दया करो हे दयालु भगवन्।

न हममें बल है न हममें शक्ति, न हममें साधन न हममें भक्ति।
तुम्हारे दर के हम हैं भिखारी, दया करो हे दयालु भगवन्।

जो तुम हो स्वामी तो हम हैं सेवक, तुम हो पिता तो हम हैं बालक।
जो तुम हो ठाकुर तो हम हैं पुजारी, दया करो हे दयालु भगवन्।।

सुना है हम अंश हैं तुम्हारे, तुम्हीं हो सच्चे प्रभु हमारे।
तो सुध हमारी है क्यों बिसारी, दया करो हे दयालु भगवन्।।

बुरे हैं जो हम तो हैं तुम्हारे, भले हैं जो हम तो हैं तुम्हारे।
तुम्हारे होकर के हम दुखारी, दया करो हे दयालु भगवन्।।

प्रदान कर दो महान् शक्ति, भरो हमारे मन में ज्ञान, भक्ति।
तभी कहाओगे तापहारी, दया करो हे दयालु भगवन्।।

314
शादी-उत्सव के निमन्त्रण-पत्र

शादी-उत्सव के निमन्त्रण-पत्र हिन्दी में छपाओ।
राष्ट्र का सन्देश सुमधुर हिन्दी भाषा में सुनाओ।।

बोलकर भाषा विदेशी मत वृथा शेखी ज़ताओ।
हंसों की महफिल में क्यों सरपंच कागा को बनाओ।।

छोड़कर अनमोल हीरा हाथ न कंकड़ उठाओ।
विदेशी भिखारिन को महारानी ना बनाओ।।

देश की मँझधार में मत हिन्दी की नौका को डुबाओ।
कृष्ण की सन्तान बन क्यों गीत कंसासुर के गाओ।।

अन्याय, रूढ़िवाद की बन पवनसुत लंका जलाओ।
बोल दो हिन्दी की जय चिरनिद्रित भारत को जगाओ।।

त्याग दो अंगरेजियत कर लेखनी अपनी उठाओ।
आज मिलकर परस्पर हिन्दी का गौरव बढ़ाओ।।

315

संग पिता के एक बालक

(भ्रम)

संग पिता के एक बालक हाट के सम्मुख खड़ा
खांड के लूँगा खिलौने बस इसी जिद पर अड़ा
बाप ने बालक को दो जोड़ी खिलौने ले दिये
जितना उनका मूल्य था उतने ही पैसे दे दिये
वह खिलौना एक पथ में चलते-चलते खो गया
रह गए थे तीन बाकी पास में घर आ गया
बाप ने उसके खिलौने तीन रखे ताक में
मूर्तियाँ जो खांड की थीं साधु की पोशाक में
आ गए साधु अचानक तीन उनके द्वार पर
यूँ लगे कहने हमारा तू अतिथि - सत्कार कर
गृहस्थी वह बोला—स्वागत आपका स्वीकार है
संत जी भोजन ये रूखा - सूखा लो तैयार है
तीनों भूखे साधु लखकर भक्त श्रद्धावान को
बैठे आसन मारकर मन में सुमर भगवान को
कर रहा बालक खिलौनों के लिए था घर में बात
एक साधु खाऊँगा मुझको लगी है भूख मात

माता बोली ठहरो पहले साधु भोजन पायेंगे
पीछे तीनों साधुओं को बाँट हम सब खाएँगे
वार्ता यह सुन के भय से तीनों भागे साधु जी
भाग रहे पीछे गृहस्थी आगे-आगे साधु जी
बोला रुकिये तो जरा क्यों आप भागे जा रहे
जान मुझको दीन ये भोजन भी त्यागे जा रहे
साधु बोले, दुष्ट ! तू नरभक्षी, चण्डाल है
खाने को हम तीनों के तू फैला रहा ये जाल है
बोला वह घर तीन रखे हैं खिलौने खांड के
चल के देखें तीनों ही वे साधुओं की शक्ल के
उनके खाने की ही हम घर में बातें कर रहे
कीजिए भोजन वृथा ही आप नाहक में डर रहे
साधु फिर घर पर चले उस भक्त पर आया यकीन
देखे सचमुच थे रखे घर खांड के थे साधु तीन
साधु पहले भ्रम के भय से ही थे भागे जा रहे
आह ! भ्रम से ही करोड़ों आज भी दुःख पा रहे
आज भी कितनों को भ्रम-भय है आर्य समाज का
कहते खंडन करते राम और कृष्ण योगीराज का
सत्य क्या है झूठ क्या, पढ़ देखो सत्यार्थप्रकाश
शांति-सुख की प्राप्ति होगी भ्रान्ति भय होगा विनाश
श्रुति विहित सद्ग्रन्थ पढ़िये भ्रम निवारण कीजिए
आर्य बनिये सत्य 'वैदिकधर्म' धारण कीजिए

316

सच्चाई छुप नहीं सकती

सच्चाई छुप नहीं सकती बनावट के असूलों से।
कि खुशबू आ नहीं सकती कभी कागज के फूलों से।
सच्चाई छुप नहीं सकती...

न अग्नि खेत को सींचे न जल कपड़े सुखाता है।
न पर्वत बल से हिलता है न नभ मुट्ठी में आता है।
हवाएँ किसने रोकी हैं भला तिनकों से धूलों से।
सच्चाई छुप नहीं सकती···
यह दुनिया कायम है अब तक प्रभु के सत्य नियमों पर।
हमारी जिन्दगी भी है तो है यह सत्य पर निर्भर।
कहीं पर डगमगाती है तो बस अपनी ही भूलों से।
सच्चाई छुप नहीं सकती···
यहाँ हर एक प्राणी को कर्म-फल प्राप्त होते हैं।
कई हँस-हँस के खाते हैं कई चख-चख के रोते हैं।
मिलेंगे फूल क्या उनको मुहब्बत जिनकी शूलों से।
सच्चाई छुप नहीं सकती···
छुपा के लाख परदों में करोगे काम जो काला।
वहाँ भी देख ही लेगा 'पथिक' वह देखने वाला।
बचाए बच न पाओगे देवताओं, रसूलों से।
सच्चाई छुप नहीं सकती···

317

सदा सुख-शान्ति हो

सदा सुख-शान्ति हो सबको, यही है प्रार्थना भगवन्।
सभी का स्वास्थ हो सुन्दर, सुखी आनन्दमय जीवन।।
रहें सब प्रेम से मिलकर, युवा बालक, बहन-भाई।
कर नित वृद्ध पुरुषों का, सदा कर जोड़ अभिवादन।।1।।
बनें सब सत्य के प्रेमी, सदाचारी व सत्कर्मी।
न छोड़ें सत्य के पथ को, करें नित धर्म का पालन।।2।।
कभी दुःख आपदाओं से, न घबरायें न भय खायें।
रहें दृढ़ पर्वतों की भाँति, शुभ संकल्पमय हो मन।।3।।

करें उपकार असहायों, अनाथों, दीन-दुखियों का।
लगा दें धर्म अथवा देश के हित पूर्ण तन-मन-धन।।4।।
कभी बल, बुद्धि या धन का न हो अभिमान किंचित भी।
न होवे ईर्ष्या लेकिन रखें निज भावना पावन।।5।।
कुकर्मी, दुष्ट, दुर्जन की कभी बैठें न संगत में।
करें सत्संग नित 'नरदेव' वेदों का पठन - पाठन।।6।।

318

सच्चा तू करतार है

सच्चा तू करतार है, सबका पालनहार है।
तेरा सबको आसरा, सुखों का भण्डार है।
नदियाँ, नाले, पर्वत सारे तेरी याद दिलाते हैं, तेरी याद—
ऋषि-मुनि और योगी सारे तेरे ही गुण गाते हैं, तेरे ही—
सच्चा तू करतार है, सबका—
बादल गर्जे, बिजली चमके, छम-छम वर्षा आती है
मीठी वाणी कोयल बोले, यह ही राग सुनाती—
सच्चा तू करतार है, सबका—
सत चित् आनन्द प्रभु को, वेदों ने बतलाया है, वेदों ने—
बिन कर कर्म करे विधि नाना, रामायण में आया है, रामायण—
सच्चा तू करतार है, सबका—
शुभ-कर्मों से मानव का यह सुन्दर चोला पाया है, सुन्दर—
विषय-विकारों में फँसकर इसको दाग लगाया है, इसको—
सच्चा तू करतार है, सबका—
'नन्दलाल' कहे श्रद्धा से चरणों में शीश झुकाते हैं।
बल, बुद्धि और विद्या का हम दान आपसे चाहते हैं।
सच्चा तू करतार है, सबका—

319

सब के घरों में भगवन्

सब के घरों में भगवन्, नित यज्ञ रचे हुए हों।
वैदिक धर्म के नारे, जग में मचे हुए हों।।
दोनों समय की सन्ध्या-वन्दना करें सभी हम।
सब ही के प्रेम-जल से, हृदय सिंचे हुए हों।।1।।
गौतम, कणाद, जैमिनि, पतंजलि कपिलवर।
सब के दिलों में फोटो, इनके खिंचे हुए हों।।2।।
वेदों को और इनके षड्दर्शनों को पढ़कर।
सच्चे धर्म के पहलू सबको जँचे हुए हों।।3।।
दुर्भावना नहीं फिर, आवे 'किशोर' मन में।
अन्तःकरण सभी के, दुःख से बचे हुए हों।।4।।

320

सब मिल के

सब मिल के नारि-नर करो उच्चार ओ३म् का।
निज मन-भवन में लीजे बसा प्यार ओ३म् का।।

321

सबकी पालनहारी

सबकी पालनहारी, है गाय हमें अति प्यारी।।
नृप दलीप, श्रीकृष्ण मुरारी,
अर्जुन, भीमसेन बलधारी।।
थे गौ-भक्त पुजारी, है गाय हमें अति प्यारी।।1।।

चरती घास नीर पी लेती,
हमको मधुर दूध है देती।।
अमृत-सम गुणकारी, है गाय हमें अति प्यारी।।2।।

322

सर्वे भवन्तु

सर्वे भवन्तु सुखिनः सर्वे सन्तु निरामयाः।
सर्वे भद्राणि पश्यन्तु मा कश्चद् दुःखभाग्भवेत।।
सबका भला करो भगवान्, सब पर दया करो दयावान्।
सबके कष्ट हरो भगवान्, सबका सब विधि हो कल्याण।।
सब वेद पढ़ें सुविचार बढ़ें, बल पाय चढ़ें नित ऊपर को।
अविरुद्ध रहें ऋजु पन्थ गहें, परिवार कहें वसुधा-भर को।।
ध्रुव धर्म धरें पर-दुःख हरें, तन त्याग तरें भवसागर को।
दिन फेर पिता वर दे सविता, हम आर्य करें निज-जीवन को।।
हम आर्य करें जगती-भर को।।

323

समय-समय पर

समय-समय पर आती रहती है आत्मा महान्।
प्यारे भारत में जन्मे थे कृष्णचन्द्र भगवान्।।
भादों मास अष्टमी पहली झुकी अँधेरी रात।
बन्द जेल में करे कंस ने योगी के पितुमात।।
ले वसुदेव चले गोकुल को थी भारी बरसात।
नन्द गोप घर जा पहुँचाया थर-थर काँपे गात।।
कन्या को वापिस ले आये पाये कष्ट महान्।
प्यारे भारत में जन्मे थे कृष्णचन्द्र भगवान्।।1।।

नन्द, यशोदा ने बालक को लाड़-चाव से पाला।
कोई कृष्ण कहे कोई कन्हैया कोई नन्द का लाला।।
मुरलीधर, घनश्याम, कान्ह, मधुसूदन, गोपाला।
मथुरावासी, गोकुलवासी, पुरी द्वारकावाला।।
अपनी बंसी पर भर देता एक सुरीली तान।
प्यारे भारत में जन्मे थे कृष्णचन्द्र भगवान्।।2।।
दूध, दही का श्रीकृष्ण ने बिकना बन्द कराया।
ग्वाल-बाल साथी संग लेकर जत्था एक बनाया।।
छिप-छिप के जो जायें ग्वालिनें दुग्ध सभी लुटवाया।
खाकर माखन-मिश्री अपने को बलवान् बनाया।।
चक्र सुदर्शन का चक्कर उनके लिए आसान।
प्यारे भारत में जन्मे थे कृष्णचन्द्र भगवान्।।3।।
गुरुकुल में शिक्षा पाई थी वैदिक धर्म प्यारा।
पापी, अत्याचारी ब्रज से ढूँढ़-ढूँढ़कर मारा।।
केश पकड़कर कंस राजा को मथुरा बीच पछारा।
प्यारा नन्द, यशोदा का वह था नैनन का तारा।।
महाभारत में बनकर आये अर्जुन के रथवान।
प्यारे भारत में जन्मे थे कृष्णचन्द्र भगवान्।।4।।
आज भूल बैठे भारत में उनकी सभी कहानी।
चोर, जार, व्यभिचारी कहते, यह कितनी नादानी।।
परनारीगामी बतलाते यह कैसी मनमानी।
बतलाते हैं रहीं कृष्ण के सोलह सौ पटरानी।।
याद न रहता श्रीकृष्ण जी का गीता का ज्ञान।
प्यारे भारत में जन्मे थे श्रीकृष्ण भगवान्।।5।।

324

सब जग के आधार

सब जग के आधार—नमस्कार नमस्कार।
आये तेरे द्वार—नमस्कार नमस्कार।
सूर्य और चाँद में तेरा ही उजाला
तूने पहन रखी है सितारों की माला
महिमा अपरम्पार—नमस्कार नमस्कार।
कोयल की कू-कू सबको है भा रही
पंचम के स्वर में मधुर गीत गा रही
यह ही रही पुकार—नमस्कार नमस्कार।
पर्वत की चोटियों को बादल हैं चूमते
पृथ्वी, सूर्य, चाँद, तारे सारे हैं घूमते
नियम अनुसार—नमस्कार नमस्कार।
फुलवाड़ी को देखो कैसे फूल हैं निराले
नीले,पीले और गुलाबी कोमल खुशबू वाले
छाई है बहार—नमस्कार नमस्कार।
आत्मा का रथ कैसा सुन्दर बनाया है
मन, बुद्धि, इन्द्रियों से इसको सजाया है
आठ चक्र, नव द्वार—नमस्कार नमस्कार।
जगत्-जननी माँ हमें तेरा ही सहारा है
तेरे बिना और न कोई भी हमारा है
भव से कर दो पार—नमस्कार नमस्कार।
प्रभु अपनी भक्ति का अधिकार देना
शुभ संकल्प हों सुविचार देना
वेद के अनुसार—नमस्कार नमस्कार।
कहे 'नन्दलाल' सबकी आत्मा पवित्र हो
देह हो निरोग और ऊँचा चरित्र हो
विनति बार-बार—नमस्कार नमस्कार।

325

सत्यार्थप्रकाश महिमा

टेक—सत्यार्थप्रकाश ऋषि की इक अनमोल निशानी है।
सब धर्मों की छानबीन कर, लिखा ग्रंथ लासानी है।
सत्यार्थप्रकाश ऋषि की इक अनमोल निशानी है।
सत्यार्थ० ।।1।।

लिखा गया है ग्रंथ यह सजा समूल चौदह समुल्लासों में।
सभी धर्मों का सार दिया है सत्यार्थप्रकाश में।
किया दूध का दूध है जिसमें, और पानी का पानी है।
सत्यार्थ० ।।2।।

सर्वमतों के ग्रन्थ खोजकर, सच्ची बात है बतलाई।
टीका-टिप्पणी उन पर कर के खोल के रख दी सच्चाई।
ब्रह्मचारी की तर्कशक्ति सब विद्वानों ने मानी है।
सत्यार्थ० ।।3।।

ऋषि ने इसके लिखने का, उद्देश्य है पहले समझाया।
सत्यासत्य का निर्णय करना, परमधर्म है बतलाया।
इसके हर इक शब्द में देखो, कैसी साफ-बयानी है।
सत्यार्थ० ।।4।।

दिया प्रभु ने आदिसृष्टि में, मानव को जो ज्ञान है।
उसी वेद का मण्डन इसमें, किया गया गुणगान है।
जिसको पढ़कर हर जिज्ञासु, बनता पण्डित, ज्ञानी।
सत्यार्थ० ।।5।।

उत्तम नाम है ओ३म् प्रभु का, वेद ईश्वरीय ज्ञान है।
वेद पढ़ने का अधिकारी, विश्व में हर इंसान है।
दयानन्द ने सिद्ध किया, यह परमेश्वर की वाणी है।
सत्यार्थ० ।।6।।

ईश उपासना, सन्ध्यावन्दन, इसमें हमें सिखाया है।
जन्म-मरण से रहित ब्रह्म को, निराकार बतलाया है।
कबरें, मढ़ी, मसान जो पूजे, जड़-बुद्धि अज्ञानी है।
सत्यार्थ० ।।7।।

मदिरा, मांस, नशों का सेवन, इसमें निंदित बतलाया है।
क्या खायें हम भक्ष्याभक्ष्य को, निर्णय कर के समझाया है।
ब्रह्मचर्य, गृहस्थ की महिमा, इसमें खूब बखानी है।
सत्यार्थ० ।।8।।

जन्म से कोई नहीं ब्राह्मण, ऊँच-नीच इंसान है।
वर्ण का निर्णय करने वाला, कर्म-धर्म बलवान् है।
छुआछूत जो करे किसी से, स्वयं नीच अभिमानी है।
सत्यार्थ० ।।9।।

मानव चोला मिला हमें यह, उत्तम कर्म कमाने को।
जन्म अमोलक नहीं यह पाया, खाने और मर जाने को।
सब जीवों में तभी कहाता, सर्वश्रेष्ठ यह प्राणी है।
सत्यार्थ० ।।10।।

नारी - शिक्षा, गोरक्षा में छुपा हुआ इक मर्म है।
स्वतन्त्रता पर मर मिटना, हर देशभक्त का धर्म है।
आज देश के सब लोगों ने, बात ऋषि की मानी है।
सत्यार्थ० ।।11।।

फिर शुद्धि की रीति चलाकर, लाखों का उद्धार किया।
पतित हुए बिछुड़े भाइयों पर, खोल वेद का द्वार दिया।
लेखराम और श्रद्धानन्द ने, दी इस पर बलिदानी है।
सत्यार्थ० ।।12।।

पाप-दुर्ग की नींव हिला दी, खण्डन की तलवार से।
जगा सकल संसार दिया है, सत्यार्थ की शिक्षा से।
हूर, फरिश्ते, भूत-प्रेत का किस्सा खतम कहानी है।
सत्यार्थ० ।।13।।

पाखण्डों का इसके आगे टिकना बहुत मुहाल है।
आर्य-जाति पर करे आक्रमण, किसकी आज मजाल है।
सुप्त हिन्दू को होश में लाने वाला यह सेनानी है।
सत्यार्थ० ।।14।।

326

संसार में जिसका प्रभु से

संसार में जिसका प्रभु से प्यार न होगा।
उसका तो भवसागर में बेड़ा पार न होगा।।
सुबह और शाम जो उसके खुले दर पै न आयेगा,
न मन में प्रेम लायेगा न मस्तक ही झुकायेगा,
ईश्वर के वरदानों का वह हकदार न होगा।।
प्रभु हर एक प्राणी को सदा देता ही देता है,
वह अपने दान के बदले कुछ भी न लेता है,
दुनिया-भर में ऐसा कहीं दरबार न होगा।।
वो दुनिया से निराला है 'पथिक' तू जान ले इतना,
वह शक्ति सबसे ऊँची है अगर तू मान ले इतना,
तुझको उसकी भक्ति से फिर इन्कार न होगा।।

327

सदा फूलता-फलता भगवन्

सदा फूलता-फलता भगवन्, यह याज्ञिक परिवार रहे।
रहे प्यार जो किसी से इनका, सदा आपसे प्यार रहे।।
मिथ्या कर अभिमान कभी न, ज़ीवन का अपमान करें,
देवजनों की सेवा कर के वेदामृत का पान करें,
प्रभु आपकी आज्ञापालन, करता हर नर-नार रहे।।
सदा...

मिले सम्पदा जो भी इनको, उसको माने आपकी,
घड़ी न आने पावे इन पे, कोई भी सन्ताप की,
यही कामना प्रभु आपसे, कर हम बारम्बार रहे।।
सदा…

दुनियादारी रहे चमकती, धर्म निभाने वाले हों,
सेवा के ढाँचे में सबने, जीवन अपने ढाले हों,
बच्चा-बच्चा परिवार का, बनकर श्रवणकुमार रहे।।
सदा…

बने रहें सन्तोषी सारे, जीवन के हर काल में,
हाल-चाल हो ऐसा इनक, रहें मस्त हर हाल में,
ताकि 'देश' बसाया इनका सुखदायी संसार रहे।।
सदा…

328

सदा तुम करते रहो

सदा तुम करते रहो जी प्यारो, ऋषि-ग्रन्थों का पाठ,
ऋषि - ग्रन्थों को पढ़ना परम धर्म है 'पाल'।
तत्त्व - ज्ञान का दर्शन होता मिट जाते भ्रमजाल,
सदा तुम करते रहो जी प्यारो, ऋषि-ग्रन्थों का पाठ।
दयानन्द से माँगी गुरु ने यही दक्षिणा प्यारी,
आर्ष-ग्रन्थ की पठन-प्रणाली भारत में हो जारी।
सदा तुम करते रहो जी प्यारो, ऋषि-ग्रन्थों का पाठ।
भारत की जो अमर संस्कृति का हो दर्शन पाना।
ऋषि-ग्रन्थों को सदा घ्यान से सुनना और सुनाना।
सदा तुम करते रहो जी प्यारो, ऋषि-ग्रन्थों का पाठ।

329

सत्ता तुम्हारी भगवन्

सत्ता तुम्हारी भगवन् जग में समा रही है।
तेरी दया-सुगन्धी हर गुल से आ रही है।।1।।
रवि, चन्द्र और तारे, तूने बनाये सारे।
इन सबमें ज्योति तेरी इक जगमगा रही है।।2।।
विस्तृत वसुन्धरा पर सागर बहाये तूने।
तह जिनकी मोतियों से अब चमचमा रही है।।3।।
दिन-रात, प्रातः-सन्ध्या-मध्याह्न भी बनाया।
हर ऋतु पलट-पलटकर करतब दिखा रही है।।4।।
सुन्दर सुगन्धी वाले पुष्पों में रंग है तेरा।
यह ध्यान फूल-पत्ती तेरा दिला रही है।।5।।
हे ब्रह्म ! विश्व-कर्ता वर्णन हो तेरा कैसे।
जल-थल में तेरी महिमा है ईश ! छा रही है।।6।।

330

सत्संग की गंगा बहती है

सत्संग की गंगा बहती है नहाता क्यों नहीं,
भाग्य तेरा सो रहा उसको जगाता क्यों नहीं?
देख कितने पतित जीवन धुन के कुन्दन हो गये,
लक्ष्य उनको अपने जीवन का बनाता क्यों नहीं?
पाप की नगरी में बसकर सह रहा संकट है क्यों,
धर्म की दुनिया बसा आनन्द पाता क्यों नहीं?
है भरी संसार में तेरे लिये सुख - सम्पदा,
फिर यथोचित लाभ इसका तू उठाता क्यों नहीं?
'देश' अमृत-पुत्र है, भगवान का भूला हुआ।
समझकर कर्त्तव्य को बिगड़ी बनाता क्यों नहीं?

331

समय सुन्दर आज है

समय सुन्दर आज है आया, सबके मन में है हर्ष पाया,
आज प्रेम-विभोर होकर, सारे मिल खुशियाँ मनायें।
सबके मन, चित्त खिल रहे हैं, दिल खुशियों से उछल रहे हैं,
पूर्ण प्रभु की पूर्ण कृपा से, पूर्ण हों शुभ कामनायें।
कितना सुन्दर यज्ञ रचाया, वेद-मन्त्रों को है गाया,
परमपिता की परमदया से, दूर हों सब आपदायें।
आशीर्वाद हम देवें सारे, मित्र-बन्धु सब रिश्ते प्यारे,
प्रभु रक्खे प्रसन्न सदा ही, फूल मिलकर सब बरसायें ।

332

समय आ गया आज

समय आ गया आज नये निर्माण का।
भू-मण्डल में चमके सूरज ज्ञान का।।
शिक्षा का दौर चलेगा, अनपढ़ कोई न रहेगा।
विपरीत वेद-वाणी के, कोई न कभी कहेगा।।
मनुष्य जहान का। 1। भू-मण्डल...
जो छुआछात करेगा, जेलों में कष्ट सहेगा।
जबरन कोई किसी का, ना ताबेदार रहेगा।।
अब बलवान का ।2। भू-मण्डल...
जो मृतक-भोज करेगा, या दहेज कोई लेगा।
जो बाल-विवाह रचावे, तो दण्ड राज खुद देगा।।
काम विधान का।3। भू-मण्डल...
वेदों की ज्योति जलेगी, तम की अब निशा टलेगी।
'नरदेव' तुम्हारा गाना सुन दुनिया कुल बदलेगी।।
शब्द प्रमाण का। 4। भू-मण्डल...

333

संध्या से दोनों समय

संध्या से दोनों समय हर्ष पाऊँ।
संध्या से मन की चपलता मिटाऊँ।।
संध्या से खिलता हृदयरूप - पंकज।
उसे दिव्य-जीवन सुधारस पिलाऊँ।। 1।।
संध्या से सुख - धार बरसे चहुँ ओर।
उसी शांत-धारा में गोता लगाऊँ।।2।।
संध्या से भीतर जगे दिव्य - ज्योति।
उसी को ले मैं जीवन-ज्योति जलाऊँ।। 3 ।।
करे कण्ठ-शोधन सुजल आचमन का।
स्पर्श इन्द्रियों का करूँ, बल बढ़ाऊँ।। 4।।
प्राची से ऊर्ध्वा दिशा तक निरंतर।
विभिन्नास्त्र धर ईश से प्राण पाऊँ।। 5।।

334

सृष्टि के तार-तार में

सृष्टि के तार-तार में, मेरे ओ३म् छिपे बैठे हैं।
यह लोक-लोकांतर सारे, यह दृश्य हैं न्यारे-न्यारे।
तारों की हर झंकार में, मेरे ओ३म् छिपे बैठे हैं।।1।।

है अजर-अमर, अविनाशी, न मिले यह मथुरा-काशी।
हृदय के सत्य-विचार में, मेरे ओ३म् छिपे बैठे हैं।।2।।

योगीजन ध्यान लगावें, ऋषि-मुनि तेरा यश गावें।
भक्ति की मस्त पुकार में, मेरे ओ३म् छिपे बैठे हैं।। 3 ।।

कहीं अंत न तेरा पाया, सब हारे शीश झुकाया।
मुक्ति के ऊँचे द्वार में, मेरे ओ३म् छिपे बैठे हैं।।4।।

335

स्नेह का संदेश ले

स्नेह का संदेश ले, वेद का उपदेश ले,
रक्षाबंधन आ गया।
हरयाली से प्यार ले, सावन की बहार ले,
रक्षाबंधन आ गया।
यही पर्व जब बहनें-भाई फूले नहीं समाते हैं,
फिर टूटे नाते जुड़ते, सद्भाव हरे हो जाते हैं,
राखी का उपहार ले, पावन प्रेम-प्रसार ले,
रक्षाबंधन आ गया।
इन धागों की अनुपम महिमा कवि-कोविद ने गाई है,
इसके बंधन में बँध बने पराए अपने भाई हैं,
कर्त्तव्य का भाव ले, बलिदानों का चाव ले,
रक्षाबंधन आ गया।

336

स्वस्थ रहे संसार में

दोहा—स्वस्थ रहे संसार में, सदा वही इंसान।
जीवन में संयम रखे, खान-पान का ज्ञान।।

सुख से रहना संसार में, तो अच्छा स्वास्थ्य बनाओ।
हर हालत में प्रसन्न रहना।
बात निराशा की मत कहना।
कठिन आपदा हँसकर सहना।।

चिंतन-मनन-विचार में, मत कभी गिरावट लाओ।।1।।
सदा सात्त्विक भोजन करिये।
बिना भूख यह पेट न भरिये।
अधिक खाय बिन मौत न मरिये।।
सुख नियमित आहार में, नित भूख राख के खाओ।।2।।
बिना नींद यह देह अधूरी।
नींद स्वास्थ्य को बहुत जरूरी।
खोई शक्ति करे फिर पूरी।।
क्यों फिरते बेकार में, तुम ठीक समय सो जाओ।।3।।
प्रातः जाग ईश गुण गाओ।
जल पीकर शौचालय जाओ।
नित्यकर्म को नित्य निभाओ।।
रहकर शुद्ध विचार में, बल पौरुष खूब बढ़ाओ।।4।।
सदाचार, संयम मत खोना।
इंद्रियों के वश मत होना।
मानव-तन मत व्यर्थ विगोना।।
वैदिक-धर्म प्रचार में 'नरदेव' सफलता पाओ।।5।।

337

सुख चाहे तो

सुख चाहे तो बुराइयों के जाना बन्दे ! नजदीक नहीं,
बचकर रहना इस दुनिया में पग-पग पर ठग घूम रहे।
दम लगा चरस-गाँजे की जो हाथी-से मद में झूम रहे।।
ऐसे नितंग, मूरख, मलंग देंगे सुखकारी सीख नहीं।
उलटे पथ जाना ठीक नहीं।।
लोगों के धन से उड़ा रहे हैं मौज लफंगे हुड़दंगे।
भूखे बिन वस्त्र दीन-दुखिया सरदी में सुकड़ रहे नंगे।

देना सुपात्र को सदा कभी देना कुपात्र को भीख नहीं।
उलटे पथ जाना ठीक नहीं।।
ग्रह राहु, केतु कहकर जो लोगों को खूब डराते हैं।
सोना, वस्त्र आदि लेकर फौरन फरार हो जाते हैं।।
सँभलो ये शूल-भरे वन हैं ! ये हैं उपवन रमणीक नहीं।
उलटे पथ जाना ठीक नहीं।।
धर्मार्थ, काम, मोक्षफल जो प्राप्त नहीं कर पाते हैं।
सुर-दुर्लभ मानव-तन को वे अज्ञानी वृथा गंवाते हैं।।
'राघव' बिन वेद-ज्ञान मिलती सुख-शान्ति प्रदर्शक लीक नहीं।
उलटे पथ जाना ठीक नहीं।।

338

सुनो प्रभुवर

(कन्या का नामकरण संस्कार)

सुनो प्रभुवर कृपा करके, यह विनती इक हमारी है।
रहे इस बालिका पर, सर्वदा कृपा तुम्हारी है।।
बने वीरांगना विदुषी, सदा मीठे वचन बोले।
अटल सतधर्म के पथ पर, रहे हो लाभकारी है।।
बने सीता, सावित्री, लक्ष्मी, दुर्गा-सी क्षत्राणी।
करे उद्धार भारत का, मिटावे पीर सारी है।।
धर्म-उपदेश को समझे, करे उपकार जीवन में।
करे वह काम दुनिया में, बढ़े यश-कीर्ति भारी है।।
रखा है वेद विधिवत् नाम, यज्ञ-उत्सव मनाया है।
फले-फूले सदा सुख में, यह जो कन्या कुमारी है।।

339

सुखी बसे संसार सब

सुखी बसे संसार सब, दुःखिया रहे न कोय।
यह अभिलाषा हम सबकी, भगवन् पूरी होय।।
विद्या, बुद्धि, तेज, बल सबके भीतर होय।
दूध-पूत, धन-धान्य से वंचित रहे न कोय।।
आपकी भक्ति, प्रेम से मन होवे भरपूर।
राग-द्वेष से चित्त मेरा, कोसों भागे दूर।।
मिले भरोसा नाम का, हमें सदा जगदीश।
आशा तेरे धाम की, बनी रहे मम ईश।।
हमें बचाओ पाप से, कर के दया दयाल।
अपना भक्त बनायकर, हमको करो निहाल।।
दिल में दया उदारता, मन में प्रेम अपार।
धैर्य, हृदय में वीरता, सबको दो करतार।।
हाथ जोड़ विनती करूँ, सुनिये कृपानिधान।
साधु-संगत सुख दीजिये, दया नम्रता दान।।

340

सुख-शान्ति चाहने वाले

सुख-शान्ति चाहने वाले को दुष्कर्म कमाना ठीक नहीं।
सत्यपथ के पुजारी 'प्रेमी' को उलटे पथ पर जाना ठीक नहीं।।

यह तेरी इच्छा पर निर्भर, शुभ कर्म करे या पाप करे।
पर फल पाने में बँधा हुआ, यह न्याय भुलाना ठीक नहीं।।

भला बीज आक का बोकर के, आमों को कैसे पा सकता।
जो बोया उसको पाना है, आक्षेप उठाना ठीक नहीं।।

करता हूँ सावधान, सुन ले उलटे कर्मों को करना मत।
वरना ऐसा दुख पाओगे, जिसको जतलाना ठीक नहीं।।

पिछले शुभ कर्मों के फल से मनुष्य का चोला पाया है।
पापों में फँसकर ऐ प्यारे इसे व्यर्थ गँवाना ठीक नहीं।
यदि हमसे कोई भूल हुई, उसका पग संकट भोग मिले।
परिणाम मिले जब करनी का तो फिर घबराना ठीक नहीं।।

संसार में रहने वाले को यदि हँसना नहीं सिखा सकते।।
तो हँसकर जीने वाले को दुख देके रुलाना ठीक नहीं।।
यह 'विश्वप्रेमी' तुम याद रखो, बतलाया है महापुरुषों ने।
दुनिया में रोता आया था, अब रोते जाना ठीक नहीं।।

341

सुख चाहे यदि

सुख चाहे यदि नर जीवन का, जप ले प्रभुनाम प्रमाद न कर।
है वही सिमरने योग्य, सखा तू और किसी की याद न कर।। 1।।
अस्थिर हैं जग के ठाठ सभी, यदि बिछुड़ गये अचरज ही क्या।
हो लोभ-मोह के वशीभूत सिर धुनकर शोक-विषाद न कर।। 2।।
धन-माल बटोर चाहे जितना, पर इतना ध्यान अवश्य रहे।
अपना घर-द्वार बसाने को, औरों का घर बरबाद न कर।। 3।।
पर-निन्दा को तजकर 'प्रकाश', आदर्श बना निज जीवन को।
सद्ज्ञान प्राप्त कर सज्जन से, दुर्जन से व्यर्थ विवाद न कर।। 4।।

342

सुख में, दुःख में

सुख में, दुःख में, रोग में, ईश्वर भजन किया करो।
जगत् नियन्ता ओ३म् का, नाम सदा लिया करो।
ध्यान लगाओ ईश का, मन में मिठास आयेगी।
परमपिता की भक्ति का अमृत सदा पिया करो।।
सुख में, दुःख में, रोग में···
दुःख पराया देखकर जो कुछ कर सको करो।
देना महान धर्म है कुछ न कुछ दिया करो।
सुख में, दुःख में, रोग में···
बादल घिरें विपत्ति के, मन में कभी न भय करो।
विश्वपति महान की छाया तले जिया करो।
सुख में, दुःख में, रोग में···
उसके भुलाये पाप के मन में विचार आयेंगे।
अपने कुकर्म याद कर कभी तो रो लिया करो।
सुख में, दुःख में, रोग में···

343

श्री रामचन्द्र का जीवन

श्री रामचन्द्र का जीवन महापुरुषों में नीका है।
है जन-जन प्रिय-रामचरित-मानस ना लगता फीका है।।
राग सत्य का पुजारी, पिता-माता का आज्ञाकारी,
एक नारी व्रतधारी, और वीर था महान।
आज राम के पुजारी, पूरे बने व्यंभिचारी,
पिता-माता हैं दुःखारी करते रहते अपमान।
करवाते रहें अखण्ड पाठ रामायण जी का हैं।। 1।।

सीता जैसी नारी, संग वन को सिधारी,
पति - सेवा न बिसारी, चरणों में रही।
आज घर - घर में नार, करें पति से तकरार,
हो के आदत से लाचार साड़ी माँगती नई।
जड़, वृक्ष, कब्र, पाषाण, जलावै दीपक घी का है।। 2।।
वेद-विद्या के सुबोधी, मद्य-मांस के विरोधी।
रहे दुष्टों पर क्रोधी, प्रभु भक्तों पर दयाल।
आज राम के जो दास, बैठे बेच रहे मांस,
पड़े देगची में पास, अन्डे ले रहे उबाल।
दीवारों पर श्रीराम, चित्र हनुमान बली का है।। 3।।
श्रीराम चरित्रवान, किया नहीं धूम्रपान,
क्या भरत हनुमान, नहीं हाथ लगाया।
आज राम के अनुयाई, अक्ल कहाँ बेच खाई,

344

श्रेष्ठ मानव है वही

श्रेष्ठ मानव है वही जो कर्म शुभ करता रहे।
दीन-दुःखियों-निर्बलों के कष्ट नित हरता रहे।।
देश के हित में जिए निज देश-हित मरता रहे।
हो निडर 'नरदेव' प्यारे ईश से डरता रहे।।

345

हमारे देश की महिमा

हमारे देश की महिमा बड़ी सुहानी है।
सब से निराली सब से पुरानी है।
कभी इस देश का दुनिया पे राज होता था।
यहाँ की रीत ही सबका रिवाज होता था।

हजारों-सैंकड़ों गऊएँ घरों में रहतीं थीं।
तभी तो दूध की नदियाँ यहाँ पर बहती थीं।
पड़ोसी इस तरह आपस में प्यार करते थे।
सभी इक-दूसरे पे जाँ निसार करते थे।
किसी दरवाजे को ताला न कोई होता था।
हरेक आदमी बेखौफ हो के सोता था।
न जुआरी न शराबी न चोर होता था।
ऐसा वातावरण ही चहुँ ओर होता था। हमारे देश···

हमारा देश ही मालिक था हर खजाने का।
यही था सोने की चिड़िया, गुरु जमाने का।
फखर हासिल था इसे देव-घर कहाने को।
जहाँ में एक ही यह दर था सर झुकाने को।
हरेक ज्ञान का दाता इसे बताते थे।
कलाएँ सीखने सारे यहीं पे आते थे।
ऋषि-मुनियों का यहीं पे निवास होता था।
ज्ञान भण्डार-भरा जिनके पास होता था।
दिशाएँ गूँजती थीं वेद की ऋचाओं से।
सुगन्धि फैलती थी हवन की हवाओं से। हमारे देश···

यहीं पे राम का आदर्श नजर आया है।
यहीं पे कृष्ण ने गीता का गीत गाया है।
यहीं पे भरत-से भाईयों के लगे मेले हैं।
इसी की गोद में अर्जुन व भीम खेले हैं।
हुए हैं द्रोण व भीषम-से पुरुष लासानी।
दधीचि, हरिश्चन्द्र और करण से दानी।
कहीं हनुमान कहीं विदुर जी की भक्ति है।
कहीं पर ब्रह्मचर्य की अमोघ शाक्ति है।
लुटाईं दौलतें जिस पर सदा बहारों ने।
किया सिजदा इसी धरती को चाँद-तारों ने। हमारे देश···

यहाँ की देवियाँ विदुषी महान होती थीं।
तेज की लाट व अग्नि समान होती थीं।
सती सीता, अनुसूया, शकुन्तला जैसी।
लोपामुद्रा, शुभा सुलभा, मदालसा जैसी।
गार्गी, भारती जब उठ के बात करती थीं।
तो याज्ञवल्क्य व शंकर को मात करती थीं।
जभी कुन्ती या कौशल्या की याद आती है।
तभी सम्मान में गर्दन मेरी झुक जाती है।
'पथिक' इतिहास में यह खोज हमने भारी की।
सदा पूजा हुई इस देश की सन्नारी की। हमारे देश···

346

हर हाल में प्रभु

हर हाल में प्रभु रखवाला तो मुश्किलों से क्या डरना।
जब आसरा जहाँ से आला तो मुश्किलों से क्या डरना।
देखे संगी - साथी सारे अपने और पराए।
पर दुनिया के मालिक जैसा कोई नज़र न आए।
पल्ला हाथ में उसी का सँभाला तो मुश्किलों से क्या डरना।
हर हाल में प्रभु रखवाला···
जिसने सृष्टि रचना कर के सुन्दर खेल रचाया।
बड़ी अनोखी महिमा उसकी अन्त न जाए पाया।
होवे सर पे जो दीन-दयाला तो मुश्किलों से क्या डरना।
हर हाल में प्रभु रखवाला···
जग में और नशे हैं जितने लावें संकट भारी।
ज़िल्लत और ग़रीबी अन्दर बीते आयु सारी।
प्रभु नाम का पिया हो प्याला तो मुश्किलों से क्या डरना।
हर हाल में प्रभु रखवाला···

मार्ग में बिखरे हों काँटे चाहे घोर अँधेरा।
सुन ले ओ मतवाले राही कदम न डोले तेरा।
करे राहों में 'पथिक' वह उजाला तो मुश्किलों से क्या डरना।
हर हाल में प्रभु रखवाला…

347

हम आर्यों का हे प्रभो!

हम आर्यों का हे प्रभो! जीवन पुनीत हो।
विश्वास आपका ही धर्म में प्रतीत हो।।

सन्ध्या, हवन-यज्ञ व स्वाध्याय नित करें।
प्रचलित समस्त विश्व में वेदोक्त रीति हो।।

वातावरण विशुद्ध विशद विश्व का बने।
हो राग-द्वेष दूर, परस्पर में प्रीति हो।।

बढ़ते ही रहें पाँव सदा कर्मक्षेत्र में।
बरसात बवण्डर हो, धूप हो या शीत हो।।

फहराएँ ध्वजा ओ३म् की संसार में 'प्रकाश'।
हो हार असुर-दल की, आर्यों की जीत हो।।

348

हम आर्यनारियाँ

हम आर्यनारियाँ अब कुछ करके दिखाएँगी।
पुरुषार्थ, त्याग द्वारा निज बिगड़ी बनाएँगी।।

अज्ञान-कीच में जो नारी फँसी हुई हैं।
देकर सुनीति-शिक्षा सन्मार्ग सुझाएँगी।।
घर की सम्हाल करना है मुख्य कार्य अपना।
आए समय कठिन तो रणक्षेत्र में आएँगी।।
निज शील-शिष्टता से, सेवा मधुर वचन से।
परिजन पड़ोसियों के हिय-पुष्प खिलाएँगी।।
अंग्रेजी सभ्यता के विकराल जाल में फँस,
मर्याद, धर्म-गौरव अपना न गँवाएँगी।।

349

हम आये शरण तुम्हारी

हम आये शरण तुम्हारी, हम आये शरण तुम्हारी।। टेक।।
तुम हो सारे जग के पालक, माता-पिता तुम हम हैं बालक।
अब रक्षा करो हमारी, हम आये शरण तुम्हारी।।1।।
काम-क्रोध से हमें बचाओ, टूटी नौका पार लगाओ।
रैन बड़ी अँधियारी, हम आये शरण तुम्हारी।।2।।
इस कुटिया में अमृत भर दो, रोम-रोम प्रकाशित कर दो।
तेरे बने पुजारी, हम आये शरण तुम्हारी।।3।।
पतितों को गले लगायें, दीन-दुखियों के कष्ट मिटायें।
बनकर हम हितकारी, हम आये शरण तुम्हारी।।4।।
मीठे-मीठे वचन सुनाएँ, फूल बनें सबको मुस्कायें।
होकर हम बलकारी, हम आये शरण तुम्हारी।।5।।
बुरे - भले हैं तेरे भगवन्, 'आशानन्द' है तेरे अर्पण।
भिक्षा डालो भंडारी, हम आये शरण तुम्हारी।।6।।

350

हर दिल में है

हर दिल में है वह बसा हुआ, जो यहाँ नहीं तो कहीं नहीं।
न भटक तलाश में जा-बजा जो यहाँ नहीं तो कहीं नहीं।।
हर शाखो वर्ग में वह है निहाँ हर गुल में गुंचे में वह अयाँ।
सौ बार यह कहता है बागबाँ जो यहाँ नहीं तो कहीं नहीं।
वह ज़मी में भी है मकाँ में भी, जो यहाँ नहीं तो कहीं नहीं।
वह है कौन कहता कि है नहीं, बिना उसके कोई भी शै नहीं।
जिसे सूझ वाला दिमाग हो और इल्मे-दिल का चिराग हो।
तो ज़रूर उसका सुराग हो, जो यहाँ नहीं तो कहीं नहीं।
मेरी आँख में इसका ही नूर है, मेरे दिल में उसका सरूर है।
मुझे यह यकीं तो जरूर है, जो यहाँ नहीं तो कहीं नहीं।।
वही हर जगह में है जलवागर हर शै में आता है वह नज़र।
उसे ढूँढ़ ले दिल ही में तू 'अमर' जो यहाँ नहीं तो कहीं नहीं।।

351

हमें वैदिक धर्म

हमें वैदिक धर्म अति प्यारा है।
आँखों का ये तारा, यही दिल का सहारा।।
सभी कुछ ये हमारा, हमें वैदिक०।।1।।
शान्ति, सुख - खान, ज्ञान गरिमा महान्।
सूर्य सम भासमान, गा रहे गुणी सुजान।।
हमें वैदिक धर्म अति प्यारा।।2।।
आर्यजनों ने इसी धरम-हित लाखों कष्ट उठाए।
शङ्कर, भट्ट कुमारिल ने निज जीवन भेंट चढ़ाए।।

बाल हकीकत, वैरागी ने अंग - अंग कटवाए।
पूछा, क्यों मरते हो? तब यह मुख से शब्द सुनाए।।
हमें वैदिक धर्म अति प्यारा है।।3।।
दयानन्द ऋषिवर ने इसके लिए घोर विष खाया।
लेखराम ने तेज छुरी से अपना पेट फटाया।।
श्रद्धानन्द जी ने गोली से अंग-अंग छिदवाया।
मरने का कुछ सोच नहीं, हँस-हँसकर यह फरमाया।।
हमें वैदिक धर्म अति प्यारा है।।4।।
सत्य सनातन वेद धर्म की ही हम शरण गहेंगे।
इसके ही मन-वचन-कर्म से सेवक भक्त रहेंगे।।
इसके ही पावन-प्रचार हित संकट सभी सहेंगे।
मरते दम भी हम 'प्रकाश' मुख से ये शब्द कहेंगे।।
हमें वैदिक धर्म अति प्यारा है।।5।।

352

हमें तो एक वैदिक धर्म

हमें तो एक वैदिक धर्म ही प्राणों से प्यारा है।
यही धन और सम्पत्ति, यही जीवन हमारा है।।
आदि सृष्टि में ईश्वर ने, कृपा करके दिया हमको।
यही सुख-शान्तिदाता, यही मुक्ति का द्वारा है।।1।।
यही सच्चा सनातन धर्म, है ऋषियों ने बतलाया।
इसी ने डूबते को पार भवसागर से तारा है।।2।।
ईश्वरी धर्म वेदों का, सच्चाई से भरा-पूरा।
मृतक सम आत्माओं को, यही अमृत की धारा है।।3।।
अधोगति है इसे तजकर, ज़रा इतिहास को देखो।
इसी ने ही सदा बिगड़ा हुआ जीवन सुधारा है।।4।।
और मार्ग नहीं सुख-शान्ति सच्ची है दिला सकता।
प्रभु तक पहुँच जाने का, यही सबको सहारा है।।5।।

कटाये सर बुजुर्गों ने, इसी सद्धर्म के ऊपर।
हमें निन्दा कभी इसकी, नहीं सुनना गवारा है।।6।।
प्राण बलिदान कर देंगे, मगर इसको न छोड़ेंगे।
इसी के वास्ते हमने, मनुज का जन्म धारा है।।7।।
यह आलमगीर वैदिक धर्म, है महिमा अकथ जिसकी।
कहा संक्षेप में यह जो, 'किशोरी' ने विचारा है।।8।।

353

हम रुकना-झुकना

हम रुकना - झुकना क्या जानें।
हम बढ़ते हैं सीना ताने।।
हम सैनिक वीर शहीदों के।
परहित में जिनके शीश कटे।।
हम दयानन्द के दीवाने...
जो गया राज में नेहरू के।
हम वीर हैं वीर सुमेरू के।।
हम वेद ज्योति के परवाने...
हम हँस - हँस के दुःख झेलेंगे।
सर्वस्व धर्म पर दे देंगे।।
ये लेखराम से मस्ताने...
हम कर्म वचन के सच्चे हैं।
हम धुन अपनी के पक्के हैं।।
सब दुनिया ही हम को जाने...
दुःख आता है तो आने दो।
सुख जाता है तो जाने दो।।
हम वीर हैं डरना क्या जानें।
हम रुकना - झुकना क्या जानें...

354

हर्ष मनाएँ, मंगल गाएँ

(गृह-प्रवेश पर)

हर्ष मनाएँ, मंगल गाएँ, मिलकर सब नर-नार,
आज किया है शुभ संस्कार।
वेदमन्त्रों से यज्ञ रचाया, ईश्वर का धन्यवाद है गाया।
परमपिता वह हम सब ढूँढ़ रहे जिसका आधार।
पहला सुख निरोगी काया दूजा सुख है घर की छाया।
विद्वानों ने बतलाया है सचमुच सोच - विचार।
स्वस्थ, सुखी हों इसके प्राणी हो न कभी धन-जन की हानि।
धर्म मधुर शीतल छाया पा फले सदा परिवार।
पंच यज्ञ यहाँ जाएँ रचाए, फलें वेद की मर्यादाएँ।
भूखा भोजन पाए, संन्यासी का हो सत्कार।
शोभा हो इस घर की गाय, बछड़ी-बछड़े खेलें-खायें।
बहती रहे शुद्ध घी - दूध - दही की इसमें धार।
यहाँ शस्य धन-धान्य भरा हो, देख सभी का चित्त हरा हो।
सौ हाथों से कमा, सहस्त्र से परहित देवें वार।
सेवा का आदर्श बने यह, देश जाति का हर्ष बने यह।
सत्य-कर्म की महिमा से हो, जग में यश-विस्तार।

355

हम सब मिलके दाता

हम सब मिलके दाता आए तेरे दरबार।
भर दे झोली सबकी तेरे पूरण भण्डार।।

होवे जब संध्याकाल निर्मल होके तत्काल,
अपना मस्तक झुका के करके तेरा ख्याल।
तेरे दर पे आके बैठा सारा परिवार।।1।।
भर दे…

लेके दिल में फरियाद करते हम तुमको याद,
जब हों मुश्किल की घड़ियाँ तुमसे माँगें इमदाद।
सबसे बढ़ के ऊँचा जग में तेरा दरबार।।2।।
भर दे…

चाहे दिन हों विपरीत, होवे तुझसे ही प्रीत,
सच्ची श्रद्धा से गाएँ तेरी भक्ति के गीत।
होवे सबका प्रभु जी तेरे चरणों में प्यार।।3।।
भर दे…

तू है सब जग का वाली, करता सबकी रखवाली,
हम हैं रंग-रंग के पौधे तुम हो हम सबके माली।
'पथिक' बगीचा है यह तेरा सुंदर संसार।।4।।
भर दे…

356

हम कभी माता-पिता का

हम कभी माता-पिता का ऋण चुका सकते नहीं।
इनके तो अहसाँ हैं इतने, हम गिना सकते नहीं।
वो कहाँ पूजा में शक्ति, वो कहाँ फल जाप का।
हो तो हो इनकी कृपा से खात्मा संताप का।
इनकी सेवा से मिले धन, ज्ञान, बल, लंबी उमर।
स्वर्ग से बढ़कर है जग में आसरा माँ-बाप का।
इनकी तुलना में कोई वस्तु भी ला सकते नहीं।।1।।

देख लें हमको दुःखी तो भर लें अपने नैन ये।
इक हमारे सुख की खातिर तड़पते दिन-रैन ये।
भूख लगती प्यास ना और नींद भी आती नहीं।।
कष्ट हो तन पर हमारे, हो उठें बेचैन ये।
इनसे बढ़कर देवता भी सुख दिला सकते नहीं।।2।।
पढ़ लो वेद और शास्त्र का भी एक यह ही मर्म है।
योग्यतम संतान का यह सबसे उत्तम कर्म है।
इनके चरणों में यह तन-मन-धन लुटाना धर्म है।
जगत् में जब तक रहें, सेवा करें माँ-बाप की।
यह 'पथिक' वह सत्य है जिसको मिटा सकते नहीं।।3।।

357

हमने ली है प्रभो

हमने ली है प्रभो इक तुम्हारी शरण।
हे पिता और कोई सहारा नहीं।।
पतित - पावन प्रभो आसरा दो हमें।
आसरा और कोई हमारा नहीं।।
न बुद्धि न भक्ति न विद्या का बल।
हृदय पै चढ़ा पाप-कर्मों का मल।।
बिन तुम्हारी दया के न सकते सँभल।
तुमने किस-किसको स्वामी उबारा नहीं।।
हुए मोह - माया के वश में यहाँ।
फँसे लोभ, क्रोध और अहंकार में।।
पड़ी नैया अपनी है मँझधार में।
नजर आता कोई किनारा नहीं।।
अविद्या है यह कैसी छाई हुई।
सभी कर्म, गुण की सफाई हुई।।

आस तुमसे है ईश्वर लगाई हुई।
यही द्वार है और चारा नहीं।।
यहाँ वेदपाठी न ज्ञानी रहे।
न योद्धा रहे और न दानी रहे।।
बचा लो पिता ! हे पिता लो बचा।
और दर पे तो जाना गवारा नहीं।।
यह विनती है मेरी पिता मान लो।
अनाथों के दुःखों को पहचान लो।
तुम्हीं सबके अज्ञान को जान लो।
हाथ आगे किसी के पसारा नहीं।।

358

हृदय से मेरे भगवन्

हृदय से मेरे भगवन् ! इक ओ३म् नाम निकले।
चलते-फिरते व सोते इक ओ३म् नाम निकले।।
गारों वा पर्वतों से और उनकी चोटियों से।
हर ज़र्रे-ज़र्रे में से इक ओ३म् नाम निकले।।
नाड़ी से और नसों से, आँखों की पुतलियों से।
हर अंग-अंग में से इक ओ३म् नाम निकले।।
मरते समय भी भगवन् ! जब प्राण हों लबों पर।
आखिर समय भी मुख से इक ओ३म् नाम निकले।।

359

हम यही चाहते हैं आज

हम यही चाहते हैं आज, हम यही चाहते हैं आज। टेक
बच्चा-बच्चा हो स्वदेश का, देश-भक्त बलशाली,
कटि में बँधी भुजाली, कांधे हो बन्दूक दुनाली,
गुण्डों के गरूर हों ढीले, काँपे क्रूर कुचाली,
कभी न हो घटना कोई, अपमानित करने वाली,
कटै न गाय गरीब, लाल-ललना की लुटै न लाज। हम०।।1।।
भेद-भाव के भूत भयंकर के सिर मारें गोली,
एक - दूसरे के हों सब सच्चे, स्नेही हमजोली,
एक बनें सब ब्राह्मण, क्षत्री, भंगी, बनिया, कोली,
एक इष्ट, एक आचार, एक धर्म सिरताज। हम०।।2।।
मातायें अभिमन्यु-कृष्ण सम वीर पुत्र जन्मायें,
तज विलासिता, आडम्बर निज जीवन सरल बनायें,
लेकर कठिन कृपाण निडर हों, युद्ध-क्षेत्र में आयें,
लक्ष्मीबाई, दुर्गा सम जग में जौहर दिखलायें,
बलि हो जाये निज सतीत्व, गौरव गुमान के काज। हम०।।3।।
भ्रष्टाचार दूर हो, दुर्व्यसनों का कढ़े दिवाला,
जीवन सदाचार, संयम के साँचे में हो ढाला,
सेवा करें सभी की पीकर, देश-प्रेम का प्याला,
रहे न कोई शत्रु, देश-द्रोही का हो मुँह काला,
मानवता जी उठे दानवता के सिरताज। हम०।।4।।
भारत देश हमारा प्यारा, हम हैं इसके स्वामी,
कंगाली हो दूर, न आने पावे कभी गुलामी,
बनें देश के वीर सिपाही, स्वतन्त्रता के हामी,
अन्न, वस्त्र हों खूब, न हो घी-दूध-दही की खामी,
हो 'प्रकाश' सर्वत्र शान्ति-सुख, भोगें पूर्ण स्वराज। हम०।।5।।

360
हजारों हाथों वाले

हजारों हाथों वाले हमको भरोसा प्रभो तेरा।
तूफानों ने घेर लिया है, चारों ओर अँधेरा।
पास हमारे हीरे-मोती, हैं अनमोल खजाना।
दाएँ-बाएँ जंगल झाड़ी, न कोई ठौर-ठिकाना।
धाक लगाए छुपकर बैठा पग-पग पै चोर-लुटेरा।
हमको भरोसा प्रभो तेरा—**हजारों हाथों वाले**—
नील गगन पै उमड़ पड़ी हैं ये घनघोर घटाएँ।
रात अँधेरी लम्बी राहें मंजिल कैसे पाएँ।
न कोई दीपक, न कोई तारा, है काफी दूर सवेरा।
हमको भरोसा प्रभो तेरा—**हजारों हाथों वाले**—
दीन-जनों के तुम रखवाले, असहायों के सहाई।
हमने तुम्हारे द्वार पै आके अब तो आस लगाई।
'पथिक' करो इस मन-मन्दिर में हे नाथ आन बसेरा।
हमको भरोसा प्रभो तेरा—**हजारों हाथों वाले**—

361
होता है शेरनी को

होता है शेरनी को एक ही सपूत पूत,
डरते हैं जीव जिससे जंगल तमाम के।
होता है खरापन कभी रुकने का नहीं,
खोटे दाम चलते नहीं एक भी छदाम के।
कूकरी, सूकरी को होती हैं सन्तान बहुत,
तो भी स्वप्न देखे ना कभी आराम के।
दिव्य गुणपुंज, पितृभक्त हो सपूत एक,
'राघव' कहै दस-पाँच कपूत किस काम के।

362

होता न आर्यसमाज

होता न आर्यसमाज कहीं
सन्मार्ग हमें फिर कौन बताता ?
तर्क - कसौटी से कौन हमें फिर
सत्य-असत्य का बोध कराता ?
कौन कहाँ फिर घोर घमंडियों
धूर्त पाखण्डियों के गढ़ ढाता ?
एक अखण्ड अगोचर ईश की
कौन हमें फिर भक्ति सिखाता ?

363

होता है सारे विश्व का कल्याण यज्ञ से

होता है सारे विश्व का कल्याण यज्ञ से।
जल्दी प्रसन्न होते हैं, भगवान् यज्ञ से।।
ऋषियों ने ऊँचा माना है, स्थान यज्ञ का।
करते हैं दुनिया वाले सब, सम्मान यज्ञ का।
दर्जा है तीन लोक में, महान् यज्ञ का।
जाता है देवलोक को, इंसान यज्ञ से।। होता…
जो कुछ भी डालें यज्ञ में, खाते हैं अग्निदेव।
सबको प्रसाद यज्ञ का, पहुँचाते अग्निदेव।
बदले में एक के अनेक, दे जाते अग्निदेव।
बादल बनाके भूमि पै, बरसाते अग्निदेव।
पैदा अनाज होता है, भगवान् यज्ञ से।
होता है सार्थक वेद का, विज्ञान यज्ञ से।। होता…

शक्ति, तेज, यश भरा, इस शुद्ध नाम में।
साक्षी यही है विश्व के, हर नेक काम में।
पूजा है इसको श्रीकृष्ण, भगवान् राम ने।
होता है कन्यादान भी, इसी के सामने।
मिलता है राज्य, कीर्ति, सन्तान यज्ञ से।। होता···
सुख-शान्तिदायक मानते हैं, सब मुनि इसे।
वशिष्ठ, विश्वामित्र और नारद मुनि इसे।
इसका पुजारी कोई भी, पराजित नहीं होता।
भय यज्ञकर्ता को कभी, किंचित् नहीं होता।
होती हैं सारी मुश्किलें, आसान यज्ञ से।। होता···
चाहे अमीर है कोई, चाहे गरीब है।
जो नित्य यज्ञ करता है, वह खुशनसीब है।
हम सब में रहे सर्वदा, यज्ञीय भावना।
'जख्मी' की सच्चे दिल से है, ये श्रेष्ठ कामना।
होती है पूर्ण कामना, महान् यज्ञ से।। होता···

364

हो नहीं माने मेरा मनुवा

हो नहीं माने मेरा मनुवा, मैं तो वेद-धर्म अपनाऊँगी।
सन्तोषी का व्रत नहीं करना, बिना बात क्यों भूखा मरना।
एक ईश का नाम सुमरना, जीवन सफल बनाऊँगी।।1।।
पींर और पैगम्बर झूठे, ये सारे आडम्बर झूठे।
लम्बोदर चण्डेश्वर झूठे, कभी न भोग लगाऊँगी।।2।।
ये भारत माँ शेरों वाली, इन शेरों की धाक निराली।
करते भारत की रखवाली, इनको नहीं भुलाऊँगी।।3।।
देवी के मन्दिर नहीं जाऊँ, नहीं प्रतिमा पै फूल चढ़ाऊँ।
आर्यसमाज से पंडित लाऊँ, घर पर हवन कराऊँगी।।4।।

हाथ जोड़कर करूँ नमस्ते, कार्य करूँ सब हँसते-हँसते।
चलकर सत्य धर्म के रास्ते
प्रातः पाँव ससुर के छूकर, सासु के चरण दबाऊँगी।।5।।
वैदिक-धर्म श्रेष्ठ कहलाता, सारा मिथ्या ढोंग मिटाता।
कभी जन्म नहीं लेय विधाता, यह सबको समझाऊँगी।।6।।

365

होते हैं स्वाध्याय से ही

होते हैं स्वाध्याय से ही सर्व संशय निवृत्त,
श्रद्धा बढ़ती है, आत्मा जागरूक होती है।
1—होता सत्य ज्ञान प्राप्त स्वाध्याय से ही पीयूष,
ईश्वर मिलन की हीय में हूक होती है।
2—आसुरी वृत्तियाँ विनष्ट करने को रुचि,
स्वाध्याय की रामबाण-सी अचूक होती है।
3—स्वाध्याय से मूक भी होते हैं मुखरित यहाँ,
योजना प्रपंचियों की टूक-टूक होती है।

366

हाथ से हो काम

हाथ से हो काम भगवन् दिल में तेरा नाम हो।
शाम से हो हर सुबह और हर सुबह से शाम हो।।
जब तलक यह साँस तब तक खेल यह चलता रहे,
दीप तेरे प्यार का दिल में मेरे जलता रहे।
काम जिसको समझे दुनिया वो मेरा विश्राम हो।।
हाथ से हो काम···

ठोकरें खाऊँ न तेरे दर्शनों को दर - बदर,
जिस तरफ जाए निगाह जलवा तेरा आए नज़र
हर बशर हो रूप तेरा हर जगह तेरा धाम हो।।

हाथ से हो काम…

367

हे आर्य बन्धुओ !

हे आर्य बन्धुओ ! उठो जागरण की यह बेला आई है।
कर्त्तव्य-क्षेत्र में डट जाओ, क्यों व्यर्थ उदासी छाई है?
क्यों बहकाने में आए हो, अपने को हीन नहीं मानो।
सब भाँति समर्थ शक्तिशाली तुम हो, अपने को पहचानो।।
तुम जागरूक तो जागरूक है जनता भी यह सच जानो।
है कार्य असम्भव नहीं कोई, यदि करने की दिल में ठानो।।
तुमने ही तो जादू-टोना, मिथ्या भ्रम - भूत भगाए हैं।
तुमने चंगुल से विधर्मियों के ललना, लाल बचाए हैं।।
तुमने ही शुद्धि संगठन के भारत में बिगुल बजाए हैं।
तुमने ही दुखी, अनाथ, दीन विधवा दल दुःख मिटाए हैं।।
तुमने ही देश - विदेश में वैदिक संदेश सुनाए हैं।
तुमने ही धार्मिक शिक्षाहित गुरुकुल-कालिज खुलवाए हैं।।
तुमने ही पाखण्डी, मिथ्या मत-पन्थों के गढ़ ढाए हैं।
तुमने सद्धर्म प्रचार - हेतु सीने पर खंज़र खाए हैं।।
तुमने ही भारत में पावन नव जीवन-ज्योति जगाई है।
हे आर्य बन्धुओ! उठो जागरण की यह बेला आई है।।
शासन निज़ाम ने जनता पर, अन्याय किये जब मनमाने।
तब चले हैदराबाद तुम्हीं धारण कर बलिदानी बाने।।
भर दिये जेलख़ाने, सीने संगीनों के आगे ताने।
घुटने टेके थे निजाम ने, तुम वही आर्य हो मर्दाने।।

तुम चढ़े तख्त पर फाँसी के, बन आजादी के दीवाने।
मर मिटे देश के हित ऐसे, जैसे दीपक पर परवाने।।
तुम स्वराज के हित लाखों की संख्या में गए जेलखाने।
जो चोट हृदय खाई तुमने, बेदर्द स्वार्थी क्या जाने !
तुमने कण्टकाकीर्ण वन में मृदु सुमन सुगन्धित दिये खिला।
तुमने ही तोड़ा जाति-पाँति और छूतछात का कठिन किला।।
सच तो यह ब्रिटिश कुशासन की तुमने दी पुख्ता नींव हिला।
तुमने स्वदेश-हित किये त्याग, पर कुछ भी श्रेय तुम्हें न मिला।।
वीरों की ऐसी उपेक्षा होना असह्य, दुखदाई है।
हे आर्य बंधुओ ! उठो जागरण की यह बेला आई है।।
कुछ सोच-समझ हे आर्यवीर! अब भी बचाव की सूरत है।
हो स्वाभिमान कुछ तो तुझमें, नहीं तू मिट्टी की मूरत है।।
ऋषि दयानन्द - उद्देश्य - पूर्ति करने का यही मुहूरत है।
शुचि आर्यसमाज—कार्यक्रम की दुनिया में बड़ी ज़रूरत है।।

368

हे देव ! आपके स्वागत को

(कन्या की ओर से वर का स्वागत)

हे देव ! आपके स्वागत को, मैं सुमन-माल ले आज खड़ी।
अखिलेश्वर की अनुकम्पा से, आई है सुन्दर सुखद घड़ी।।
दिनकर के निहारते ही ज्यों, खिल जाती कमलों की अवली।
दर्शन कर आज आपके त्यों, खिल उठी हमारी हृदय-कली।।
आशा के जल से सींच हरी, की मैंने जो जीवन-डाली।
वह आज आपके चरणों में, मैंने है अर्पित कर डाली।।
मेरी इस जीवन-बगिया के, बन गए आज से तुम माली।
है निर्भर तुम पर ही करना, पामाली अथवा रखवाली।।

है यही विनय मैं हूँ अबोध, त्रुटियों पर देना ध्यान नहीं।
कर सकी आपके स्वागत का, किंचित समुचित सामान नहीं।।
इस सुमन-माल में ही गुम्फित, अनुराग-भरा मेरा मन है।
स्वीकार करो, स्वीकार करो, आदर के साथ समर्पण है।।

369

हे पूज्य पिता !

हे पूज्य पिता ! आपका गुणगान करें हम।
तब भक्ति-सुधा-रस का सदा पान करें हम।।
अभिमान, वैर तज के बनें प्रेम - पुजारी।
असहाय, दुखी, दीन का कल्याण करें हम।।1।।
करके कृपा प्रदान करो दिव्य दृष्टि वो।
दर्शन हृदय में आपका भगवान् करें हम।।2।।
अन्याय, दुराचार, दुर्व्यसन से दूर हों।
सब भाँति मातृभूमि का उत्थान करें हम।।3।।
प्रिय आर्य सभ्यता के प्रचारक 'प्रकाश' हों।
सर्वस्व वेद धर्म पै बलिदान करें हम।।4।।

370

हे राम तेरे भक्तजन

हे राम तेरे भक्तजन, क्या-क्या बनाते फिर रहे।
आकर जरा भी देखना, कैसे लजाते फिर रहे।
माता-पिता के वचन का पालन किया था आपने।
यहाँ सैकड़ों माता - पिता दुख उठाते फिर रहे।।1।।
आपके जीवन चरित्र को, स्वांग का दर्जा दिया।
घर-घर दिखाते फिर रहे, पैसा कमाते फिर रहे।।2।।

धर भेष लेते आपका, करते तमाशा रात-दिन।
भ्रात लक्ष्मण जानकी, सबको नचाते फिर रहे।।3।।
सन्ध्या हवन का नाम ना, शुभ कर्म करना ध्यान ना।
सिगरेट, बीड़ी, चरस का, धुआँ उड़ाते फिर रहे।।4।।
खाये थे वन में बेर, जाकर भीलनी के प्रेम से।
यहाँ ऊँचा और नीचा बताकर जुल्म ढाते फिर रहे।।5।।
आये 'स्वरूपानन्द' फिर से राम जैसी आत्मा।
जायें समझ जो राम का है नाम गाते फिर रहे।

371

हे दयामय हम

हे दयामय हम सबों को शुद्धताई दीजिये।
दूर करके हर बुराई को भलाई दीजिये।।

ऐसी कृपा और अनुग्रह हम पै हो परमात्मा।
हों सभासद् इस सभा के सब के सब धर्मात्मा।।

हो उजाला सब के मन में ज्ञान के प्रकाश से।
और अँधेरा दूर सारा हो अविद्या नाश से।।

खोटे कर्मों से बचें और तेरे गुण गायें सभी।
छूट जायें दुःख सारे सुख सदा पायें सभी।।

सारी विद्याओं को सीखें ज्ञान से भरपूर हों।
शुभ कर्म में होवें तत्पर दुष्ट गुण सब दूर हों।।

यज्ञ, हवन से हो सुगन्धित अपना भारतवर्ष देश।
वायु, जल सुखदायी होवें जायें मिट सारे क्लेश।

वेद के प्रचार में होवें सभी पुरुषार्थी।
होवे आपस में प्रीति और बनें परमार्थी।।

लोभी और कामी-क्रोधी कोई भी हम में न हो।
सर्व व्यसनों से बचें और छोड़ देवें मोह को।।

अच्छी संगत में रहें और वेद मार्ग पर चलें।
तेरे ही होवें उपासक और कुकर्मों से बचें।।

कीजिए 'केवल' हृदय शुद्ध अपने ज्ञान से।
मान भक्तों में बढ़ाओ सब का भक्ति-दान से।।

372

हे ईश्वर, हे जगत्पिता

हे ईश्वर, हे जगत्पिता हम सब तेरे गुण गाएँ।
मन-मन्दिर में सदा तुम्हारे नाम की जोत जलाएँ।
हे ईश्वर, हे जगत्पिता...

नाथ कृपा हम सब पर करना हम बालक हैं तेरे।
करो उजाला सब के मन में करके दूर अन्धेरे।
ज्ञान की आँखें हमको दे दो मन्जिल अपनी पाएँ।
हे ईश्वर, हे जगत्पिता...

जग के पालनहार प्रभु हम आए शरण तिहारी।
दुखियों के दुख हरने वाले सुन लो टेर हमारी।
दे दाता वरदान हमें जग में शुभ कर्म कमाएँ।
हे ईश्वर, हे जगत्पिता...

सत्य कथन की शक्ति दे दो झूठ कभी न बोलें।
हर प्राणी से न्याय करें और सदा बराबर तोलें।
जो हम औरों से चाहें वह खुद करके दिखलाएँ।
हे ईश्वर, हे जगत्पिता...

यही कामना सब के मन की भगवन् कर दो पूरी।
जन्म सफल करने की आशा रह न जाये अधूरी।
'पथिक' तुम्हारे चरणों में हम अपना शीश झुकाएँ।
हे ईश्वर, हे जगत्पिता···

373

हे अनन्त देव तू

हे अनन्त देव तू महान से महान है।
विश्व की हर एक चीज़ में विराजमान है।
हे अनन्त देव तू···
तू असीम अज अजर-अमर अनादि तत्त्व है।
अर्चनीय, वन्दनीय, अद्वितीय सत्व है।
सकल गुणनिधान, अतुल सर्वशक्तिमान है।
हे अनन्त देव तू···
तेजमय आदित्यवर्ण अन्धकार से परे।
दिव्य पुरुष दीन की समस्त दीनता हरे।
प्राणवान् प्राणियों के प्राण का भी प्राण है।
हे अनन्त देव तू···
निर्विकल्प, निर्विकार नित्य निराकार तू।
सृष्टिकर्ता धर्ता हर्ता और सर्वाधार तू।
सत्य शुद्ध बुद्ध मुक्त ब्रह्म तत्त्व ज्ञान है।
हे अनन्त देव तू···
साधकों के ध्यान में उपासकों के गान में।
दया धर्मधारियों में दानियों के दान में।
'पथिक' भक्ति-भावना में सहज विद्यमान है।
हे अनन्त देव तू···

374

हे पिता ! आपकी शिक्षा

हे पिता ! आपकी शिक्षा पर ध्यान सदैव धरूँगी।
कुल कीर्ति-वृद्धि हो जिससे, मैं वह शुभ-कार्य करूँगी।।

किस लाड़-प्यार से पालन, मेरा आपने किया है।
दुःखों से हुआ न परिचय, सुख सभी प्रकार दिया है।।

माता ने भी मेरे हित, आपत्ति अपार उठाई।
पालन-पोषण करके मैं, छोटी से बड़ी बनाई।।

सुत से बढ़कर देखा तुमने, मुझ कन्या को जाना है।
मेरे सुख में सुख मेरे दुःख में ही दुःख माना है।।

हे पिता ! एक पल को भी, मैं की न आपने न्यारी।
अब दूर हो रही कितनी, यह सुता आपकी प्यारी।।

बस आज कुछ घड़ी को ही मैं यहाँ ठहर पाऊँगी।
मैं पिता ! तुम्हारी चिड़िया, परदेश चली जाऊँगी।।

अपनापन खोकर अब मैं, उनकी ही कहलाऊँगी।
उनके ही हित मैं अपना, सब कुछ तजकर जाऊँगी।।

बचपन से अब लो जिनके मैं पढ़ी साथ हूँ खेली।
वे छूट रही हैं सारी, मेरी प्रिय बहिन-सहेली।।

वह गैया-बछिया प्यारी, कोयलिया-कीर-कपोती।
सब बिदा कर रहे मुझको हैं भरे आँख में मोती।।

पर यह विश्वास हृदय को, मेरे है धीर बँधाता।
अब पूज्य श्वसुर-सासू जी, मेरे होंगे पितु-माता।।

गुणवती नन्दरानी जी आदिक सब स्नेह रखेंगी।
आश्वासन देंगी मुझको, भगिनी समान निरखेंगी।।

कर गहा जिन्होंने मेरा, वे शुभचिन्तक होंगे।
हे पिता ! धैर्य उर रखिये, जगदीश्वर रक्षक होंगे।।

जो भूल हुईं जीवन में वे सभी भूल जाना।
कर लेना याद मुझे टूक, मत मुझे भूल जाना।।

375

हे नाथ! तू बड़ा है

हे नाथ ! तू बड़ा है, और बेमिसाल है।
महिमा तेरी का जानना, सबको मुहाल है।।
ऋषियों ने नेति-नेति कहा, अन्त ना मिला।
सबमें समा रहा है, तू इतना विशाल है।।1।।
अद्भुत असंख्य सृष्टियाँ, तूने सभी रचीं।
कारीगरी का तेरा तो, बेहद कमाल है।।2।।
सब चल रहे हैं नियम में, तेरे बंधे हुए।
उसके उलाँघने की, किसकी मजाल है।।3।।
तेरी चमक है अग्नि में, सूरज में चाँद में।
सारे में जगमगा रहा, तेरा जलाल है।।4।।
है दानियों का दानी, अनाथों का नाथ तू।
जिस पे कृपा हो तेरी, वह सब विधि निहाल है।।5।।
हे दीनबन्धु ! कर रहा विनती यही 'किशोर'।
दासों का और दीनों का तू ही दयाल है।।6।।

376

हे आर्य !

हे आर्य ! वेद अमृत पी पावन हो लो।
ऋषि दयानन्द की श्रद्धा से जय बोलो!
सेवा का व्रत लेकर कर्मक्षेत्र में आओ।
पीड़ित जनता के सब सन्ताप मिटाओ।।
शुचि वेद - संस्कृति जगती में फैलाओ।
ऋषिवर का घर-घर में सन्देश सुनाओ।।
क्यों असत् मार्ग में वृथा भटकते डोलो।
ऋषि दयानन्द की श्रद्धा से जय बोलो!

377

हे मना, तू जाप कर

हे मना, तू जाप कर, उस ओ३म् सच्चे नाम का।
योग साधना कर सदा, अभ्यास प्राणायाम का।।
यह बड़ा दुर्लभ समय, क्यों व्यर्थ खोता है इसे ?
फिर रहा भूला हुआ, नहीं फिक्र है अंजाम की।।
वेद के अनुकूल उस, ईश्वर की भक्ति के बिना।
सोचकर बतला जरा, फिर यह जन्म किस काम का।।
कुछ नहीं अब तक बना, अन्तिम समय अब आ गया।
शीघ्र कुछ कर ले अभी, नहीं वक्त यह आराम का।।
मिलेगी तुझको सफलता, होगा बड़भागी तभी।
दर्श जब हो जायेगा, तुझको प्रभु सुख - धाम।।
वेद की शिक्षा यही है, सुन-समझ इसको 'किशोरी'।
एक ईश्वर - प्रेम है, कारण तेरे विश्राम का।।

378

हे प्रभो ! परम पिता !

हे प्रभो ! परम पिता ! तुम गुणों की खान हो।
तुम अनादि, तुम अनन्त, पूर्ण तुम महान् हो।।
चन्द्र-सूर्य-से विशाल लोक तुममें हैं बसे!
प्राणियों के प्राण तुम सर्वशक्तिमान् हो।।
कौन ऐसा कर्म है जो छिपाया जा सके।
सब जगह सदैव जब आप विद्यमान हो।।
नित्य भोजनादि से प्राणियों को पालते।
तुम विधाता, दाता तुम, तुम दया-निधान हो।।
ढूँढ़ना तुम्हें 'प्रकाश' क्यों गया, प्रयाग में।
वो हृदय में पाएगा, जिसको सच्चा ज्ञान हो।।

379

हे भगवान् !

हे भगवान् ! देश अपने में, वह शुभ दिन कब आएगा।
हो नष्ट अविद्या-अन्धकार, जग प्रकाशमय हो जायेगा।
फूट बेल घर-घर में छाई, हैं शत्रु भाई के भाई।
दम्भी देशद्रोहियों का, मिट्टी में मान मिलायेगा।। 1।।
भेद-भाव का भूत चढ़ा है, ऊँच-नीच का भाव बढ़ा है।
पतितों को पुनः उठा करके बिछड़ों को गले लगायेगा।। 2।।
उत्तम एक विचार नहीं है, धर्म कर्म से प्यार नहीं है।
देश-धर्म पर तन, मन, धन, अर्पण करना सिखलायेगा।। 3।।
दुखिया, दीन, अनाथ बेचारा, रहा बहा दृग अश्रुधारा।
आश्रय बन इन दीन अनाथों को गोदी बिठलायेगा।। 4।।

380

हे प्रेममय प्रभो !

हे प्रेममय प्रभो ! तुम्हीं सब के आधार हो।
तुमको परम पिता प्रणाम बार-बार हो।।1।।
ऐसी कृपा करो कि हम सब धर्मवीर हों।
वैदिक पवित्र धर्म का जग में प्रचार हो।।2।।
सन्देश देश - देश में वेदों का दें सुना।
सद्भाव और प्रेम का सब में प्रसार हो।।3।।
असहाय के सहाय हों, उपकार हम करें।
अभिमान से बचें, हृदय निर्भय उदार हो।।4।।
फूले - फले संसार में यह रम्य वाटिका।
कर्त्तव्य अपने का सदा हमको विचार हो।।5।।
स्वाधीनता के मन्त्र का जप हम सदा करें।
सेवा में मातृ-भूमि के तन-मन निसार हो।।6।।

381

हे प्रभु ! हम तुमसे

हे प्रभु ! हम तुमसे वर पावें।
विश्व जगत् को आर्य बनावें।।
फैलें सुख, सम्पत्ति फैलावें।
आप बढ़ें तब राज्य बढ़ावें।।
वैर - विघ्न को मार भगावें।
प्रीति - रीति की नीति चलावें।।

382

हे दयामय ! आप ही

हे दयामय ! आप ही संसार के आधार हो।
आप ही कर्तार हो हम सब के पालनहार हो।।
जन्मदाता आप ही माता-पिता भगवान् हो।
सर्वसुखदाता, सखा, भ्राता हो तन धन प्राण हो।।
आपके उपकार का हम ऋण चुका सकते नहीं।
बिना कृपा के शांति-सुख का सार पा सकते नहीं।।
दीजिए ऐसी मति करें शुभ कर्म हम संसार में।
मन हमारा धर्ममय हो और तन लगे उपकार में।।

383

हे ईश ! सब सुखी हों

हे ईश ! सब सुखी हों कोई न हो दुखारी।
सब हों निरोग भगवन् धनधान्य के भण्डारी।।
सब भद्र भाव देखें, सन्मार्ग के पथिक हों।
दुखिया न कोई होवे सृष्टि में प्राणधारी।।

384

हे ज्ञानवान भगवन्

हे ज्ञानवान भगवन् हमको भी ज्ञान दे दो।
करुणा के चार छींटे, करुणानिधान दे दो।।
सुलझा सकें हम अपने जीवन की उलझनों को।
प्रज्ञा, ऋतम्भरा और बुद्धि का दान दे दो।।1।।

दाता तुम्हारे दर पर किस चीज की कमी है।
चाहो तो निर्धनों को, दौलत की खान दे दो।।2।।

अपनी मदद हमेशा खुद आप कर सकें जो।
इन बाजूओं में शक्ति, हे शक्तिमान दे दो।।3।।

हे ईश तुम हो सबकी, बिगड़ी बनाने वाले।
जीवन सफल बने जो, थोड़ा-सा ज्ञान दे दो।।4।।

डर है 'पथिक' तुम्हारा, रास्ता न भूल जायें।
भक्तों की मण्डली में, हमको भी स्थान दे दो।।5।।

385

हे प्रभु आनन्ददाता

हे प्रभु आनन्ददाता, ज्ञान हमको दीजिये।
शीघ्र सारे दुर्गुणों को दूर हमसे कीजिये।।
लीजिए हमको शरण में, हम सदाचारी बनें।
ब्रह्मचारी, धर्मरक्षक, वीर, व्रतधारी बनें।।
कार्य जो हमने उठाये आपकी ही आस से।
ऐसी कृपा करिये प्रभो सब पूर्ण होवें दास से।।

386

हे जगदीश, असत्य

हे जगदीश, असत्य छुड़ा मुझको सत मारग ओर चला दो।
दूर करो अज्ञान सभी उर में, अब वैदिक दीप जला दो।।
भीत व रोग हरो तन का, सुख-शांति सुधा रस सोम पिला दो।
माँग रहा वरदान यही 'नरदेव' प्रभो कर आप भला दो।।

387

हे वन्दनीय ईश्वर !

हे वन्दनीय ईश्वर ! तेरी शरण में आया।
तू है स्वयं प्रकाशित, तेरी त्रिलोक माया।।
जग के तुम्हीं जनक हो, पालक विनाशकारी।
हे नाथ ! अब दया कर, सुध शीघ्र लो हमारी।। 1।।
भीषण तुझसे भीत, और भय भी भय खाये।
जीवन को गतिशील, रसज्ञ पवित्र बनावे।।
सर्वोपरि सर्वेश, सच्चिदानन्दस्वरूपम।
रक्षण के रखवार सभी में दिव्य अनूपम।। 2।।
सुमिरत, भजत साधना द्वारा तुमसे नेह लगाऊँ।
घट-घट व्यापी की छाया में, श्रेय मार्ग पर जाऊँ।।
एकमात्र अवलम्ब सभी का है तू आश्रयदाता।
तेरानाम-निगम-नौका से, भवसागर तर जाता।। 3।।

388

हे दयामय !

हे दयामय ! आपका हमको सदा आधार हो।
आपके भक्तों से ही भरपूर यह परिवार हो।।
छोड़ देवें काम को, और क्रोध को मद-मोह को।
शुद्ध और निर्मल हमारा, सर्वदा आचार हो।।1।।
प्रेम से मिल करके सारे, गीत गावें आपके।
दिल में बहता आपका ही, प्रेम पारावार हो।।2।।
जय पिता, जय-जय पिता, हम जय तुम्हारी गा रहे।
रात दिन घर में हमारे, आपकी जयकार हो।।3।।
पास अपने हो न धन तो, उसकी कुछ परवा नहीं।
आपकी भक्ति से ही, धनवान यह परिवार हो।।4।।

389

हे जगत्पिता

हे जगत्पिता भगवन् हमें दो ज्ञान।
तू ईश्वर प्यारा, दुनिया में एक सहारा।।
बचपन में होश न आया है, जीवन में पाप कमाया है।
अब जाऊँ कहाँ, विषयों ने मुझे मारा।। दुनिया में···
दिल मेरा तो यह कहता है, तू मन-मंदिर में रहता है।
दिन-रात भटकता रहा, मैं दर-दर मारा।। दुनिया में···
पापों से भगवन् हमें बचा, वेदों का सच्चा भक्त बना।
पाखण्ड, झूठ से सब ही करें किनारा।। दुनिया में···
मँझधार में है बेड़ा मेरा, कृपा कर आश्रय है तेरा।
'नन्दलाल' पाप में बीता जीवन सारा।। दुनिया में···

390

हे प्रभु !

हे प्रभु ! तुझ सा न कोई, विश्व का रखवाल है।
एक तू सारे जगत् का, कर रहा प्रतिपाल है।। 1।।
सर्वदा सर्वत्र व्यापक, शुद्ध और चेतन महा।
कान बिन सब सुन रहा तू विश्व-भर का हाल है।। 2।।
है सभी कारीगरों में मुख्य कारीगर तू ही।
हाथ बिन सब रच रहा, सारे जगत् का जाल है।। 3।।
आदि सृष्टि में दिया, उपदेश सब वेदों का ज्ञान।
वाक् इन्द्रिय के बिना, कितना बड़ा वाचाल है।। 4।।
सर्वदृष्टा और तू सर्वज्ञ होने से प्रभो !
आँख बिन देखे सभी दुनिया की चालो-ढाल है।। 5।।

दौड़ने वालों से पहले है वहाँ मौजूद तू।
चल रहा बिन पद अहा! कैसी अनोखी चाल है।।6।।
भर रहा धन-धान्य से, सब के तू ही परिवार को।
पास कौड़ी है नहीं, पर सब से मालामाल है।।7।।
तेरी सानी का कोई भी, दूसरा पाया नहीं।
तू कभी जन्मा नहीं है और न तेरा काल है।।8।।
है तेरी माया अलौकिक, किस तरह गायन करें।
तुच्छ बुद्धि यह तेरा सेवक 'किशोरी लाल' है।।9।।

391

है वह इंसान सच्चा

है वह इंसान सच्चा जो किसी के काम आता है।
दुखी होता दुखी को देखकर आँसू बहाता है।
1–विषय और वासना में ही समय अपना गँवाये जो।
कमाये पाप से दौलत बुराइयों में लुटाये जो।
वह नर इंसानियत के नाम पर धब्बा लगाता है।।
2–हजारों आदमी बिन औषधि बिन अन्न मरते हैं।
न तन पर उनके हैं वस्त्र न बच्चे उनके पढ़ते हैं।
है वह धनवान सच्चा जो दुखी के दुख मिटाता है।।
3–न भाई-बन्धु और बेटे न पत्नी साथ जायेगी।
कमाई पाप की हरगिज़ न तेरे काम आयेगी।
धर्म है एक साथी अन्त में जो काम आता है।।
4–धर्म की राह में तन, मन व धन अपना लुटाये जो।
ऋषिवर की तरह संसार-भर में नाम पाये जो।
उसी का नाम फिर इतिहास के पन्नों में आता है।।
5–तेरा बातों से ही 'नन्दलाल' बेड़ा पार न होगा।
केवल गीतों के लिखने से तेरा उद्धार न होगा।
वह होगा पार तन, मन, धन धर्म पर जो लुटाता है।।

392

है गाय हमें अति प्यारी

है गाय हमें अति प्यारी।
है गाय हमें अति प्यारी।
नृप दिलीप, श्रीकृष्ण मुरारी,
अर्जुन, भीमसेन बलधारी,
थे गऊ-भक्त पुजारी। है गाय···
चरती घास, नीर पी लेती,
हमको मधुर दूध है देती,
मातृ सम गुणकारी। है गाय···
हिन्दू, मुस्लिम, सिख, ईसाई,
करती सबकी सदा भलाई,
महिमा इसकी न्यारी। है गाय···
उपकारी माता से बढ़कर,
उस गरीब गाय के तन पर,
चलती आज कटारी। है गाय···
रहा नहीं अब राज विदेशी,
अब तो है सरकार स्वदेशी,
फिर क्यों गोवध जारी। है गाय···

393

है कितनी अद्‌भुत लीला

है कितनी अद्‌भुत लीला, विश्व को बांधा नियम में है,
रमे हैं विश्व से कण-कण, रहे फिर भी वह न्यारे हैं।
जीवन हो वेद के अनुसार यदि हम सबका ऐ 'सेवक',
धर्म आधार से हो तो बनें जीवन उजियारे हैं।
दान - भजन - सत्संग करें, है जीवन का सार,
जीवन उत्तम है वही जिसमें पर - उपकार।

394

हुआ ध्यान में जो

हुआ ध्यान में जो ईश्वर के मगन, उसे कोई क्लेश लगा न रहा।
जब ज्ञान की गंगा में नहाया, तो मन में मैल जरा न रहा।।
परमात्मा को जब आत्मा में लिया देख ज्ञान की आँखों से।
प्रकाश हुआ मन में उसके कोई उससे भेद छिपा न रहा।।
पुरुषार्थ ही इस दुनिया में सब कामना पूरी करता है।
मनचाहा फल उसने पाया जो आलसी बन के पड़ा न रहा।।
दुःखदायी हैं सब शत्रु हैं विषय हैं जितने दुनिया के।
वही पार हुआ भवसागर से जो जाल में इनके फँसा न रहा।।
यहाँ वेद-विरुद्ध जब मत फैले, पत्थर की पूजा जारी हुई।
जब वेद की विद्या लुप्त हुई फिर ज्ञान का पांव जमा न रहा।।
यहाँ बड़े - बड़े महाराज हुए, बलवान हुए, विद्वान् हुए।
पर मौत के पंजे से 'केवल' कोई दुनिया में आके बचा न रहा।।

395

हिन्दुओ ! तुममें

हिन्दुओ ! तुममें सत्य धर्म की उल्फ़त होती।
देश की फिर भला यह क्यों गिरी हालत होती।।
फैलते क्यों भला दुनिया में हजारों फ़िरके।
एक ईश्वर की जो घर-घर में इबादत होती।।
क़ौम के लाल करोड़ों क्यों विधर्मी होते।
शुद्ध कर उनको मिलाने की गर आदत होती।।
आँख भी तुमसे मिलाता मजाल थी किसकी।
दूध-पानी-सी अगर तुममें मुहब्बत होती।।
काहिलो-नातवाँ दुनिया में क्या कर सकते हैं!
मार खाते ही क्यों गर जिस्म में ताकत होती।।

396

हिन्दी अपने देश की भाषा

हिन्दी अपने देश की भाषा हिन्दी से हम प्यार करेंगे।
हिन्दी भाषा में ही अपने जीवन का व्यवहार करेंगे।
हिन्दी अपने देश की भाषा···
सारा भारत एक राष्ट्र है हिन्दी इसकी भाषा है।
हिन्दी भारत का गौरव है जन-गण-मन की आशा है।
सारी पृथ्वी के ऊपर हम हिन्दी का विस्तार करेंगे।
हिन्दी अपने देश की भाषा···
बिखरे मोती मिल जाते हैं एक सूत्र मिल जाने से।
देश हमारा एक रहेगा हिन्दी को अपनाने से।
आदरणीय महापुरुषों के सपनों को साकार करेंगे।
हिन्दी अपने देश की भाषा···

आशा क्या विश्वास है इक दिन हिन्दी को सम्मान मिलेगा।
माता को अपने बच्चों से माता का ही स्थान मिलेगा।
हिन्द देश में रहने वाले हिन्दी का सत्कार करेंगे।
हिन्दी अपने देश की भाषा···
आओ सारे हिन्दी मिलकर हिन्दी को अपनाएँ हम।
जो हम वाणी से कहते हैं वह करके दिखलाएँ हम।
उठो 'पथिक' सौगन्ध उठाकर हिन्दी का प्रचार करेंगे।
हिन्दी अपने देश की भाषा···

397
हिम्मत न हारिये

हिम्मत न हारिये, प्रभु न बिसारिये।
हँसते - मुस्कराते हुए जिंदगी गुजारिये।।
हँसते-मुस्कराते हुए जीना जिसको आ गया,
दुखियों के दिलों को सीना जिसको आ गया।
ऐसे देवता के चरण सदा पखारिये।
उनकी तरह नेक बन जिंदगी गुजारिये।। हिम्मत न···
काम ऐसे कीजिए जिसमें हो सबका भला।
बातें ऐसी कीजिए जिसमें हो अमृत भरा।
मीठी बोली बोल के प्रेम से पुकारिये।
कड़वे बोल बोल के ना जिंदगी गुजारिये।। हिम्मत न···
मुश्किलों, मुसीबतों का करना है मुकाबला।
हर वक्त कहिए तेरा शुक्र है परमात्मा।
जैसे प्रभु राखे वैसे जिंदगी गुजारिये।
गिले-शिकवे करके ना जिंदगी गुजारिये।। हिम्मत न···
अच्छे कर्म करते हुए दुःख अगर हैं आ रहे।
पिछले पाप कर्मों का भुगतान ही भुगता रहे।

आगे मत उठाइये पिछले बोझ उतारिये।
गलतियों से बचते हुए जिंदगी गुजारिये।। हिम्मत न...
दिल की नोट-बुक पर बातें नोट कीजिए।
करके अमल बनके कमल जिंदगी गुजारिये।
जग में जगमगाती हुई जिंदगी गुजारिये।। हिम्मत न...

398

हम ही करें ना ध्यान

हम ही करें ना ध्यान, तो भगवान क्या करे।
दुख-दर्द का हमारे वो, दरमान क्या करे।।

हम फँसके लोभ, मोह में गुनहगार बन गए।
वो जिंदगी की मुश्किलें, आसान क्या करे।।

हबसो-सोनफस के पाप में, पुतले बने हैं हम।
सुख-शांति का दिल में वो, सामान क्या करे।।

इक-दूसरे के खून का, प्यासा है हर बशर।
जो स्वार्थी है देश का, कल्याण क्या करे।।

रिश्वत, ब्लैक, झूठ का, बाजार है गरम।
हैराँ हुआ शैतान अब, शैतान क्या करे।।

अब संत, गुरु सैकड़ों खुद को कहें खुदा।
बिगड़े जहाँ के तौर तो, रहमान क्या करे।।

जो रहबर हमारे हैं, रहजन बने हुए।।
वो रास्ती का अब 'रवि' सामान क्या करे।।

399

है जिसने सारे विश्व को

है जिसने सारे विश्व को धारण किया हुआ।
वह है हर एक वस्तु के अंदर रमा हुआ।
मिलता नहीं है इसलिए अज्ञानियों को वह।
अज्ञान का है बुद्धि पे परदा पड़ा हुआ।
दुनिया के दुःख-रूप समुद्र से है वह पार।
जगदीश से है प्रेम अति जिनका लगा हुआ।।
सच्ची खुशी से रहते हैं वह जन सदा अलग।
मन जिनका विषय-योग में होवे फँसा हुआ।।
मन तो मलीन वैसा ही मूर्ख रहा तेरा।
गंगा में रोज़ जाके नहाया तो क्या हुआ।।
खोते हैं खेल-कूद में जो उमर रायगां।
अफसोस उनकी बुद्धि को न जाने क्या हुआ।।
अज्ञानियों से रहता है 'केवल' वह दूर-दूर।
खुल जावें ज्ञान-चक्षु तो वह है मिला हुआ।।

400

हर जगह मौजूद है पर

हर जगह मौजूद है पर वह नजर आता नहीं।
योग-साधन के बिना उसको कोई पाता नहीं।।1।।
मरने और जीने के बंधन से बरी है वह सदा।
उसका कोई सुत, दारा और पिता, माता नहीं।।2।।
गानविद्या से अगर कुछ लाभ है मद्देनजर।
फिर जगत्-स्वामी के तू गुणवाद क्यों गाता नहीं।।3।।

जो जगत्कर्ता की मन से आज्ञा है पालता।
कोई भी दुख-दर्द उसको शक्ल दिखलाता नहीं।।4।।
रास्ती को जिसने छोड़ा; कजरवी की अख्त्यार।
मंजिले-मकसूद तक उसका कदम जाता नहीं।।5।।
मुस्तहक का हक दबा लेने की कोशिश जिसने की।
कौन है जो पेचोताबे-गम से घबराता नहीं।।6।।
है समझ जिनको वे उनको जानते हैं कम-समझ।
जो यह कहते हैं कोई कर्मों का फलदाता नहीं।।7।।
कुछ भी पर-उपकार में मिलती नहीं तुमसे मदद।
हैफ अपने दिल में तू ऐ 'उर्फ' शर्माता नहीं।।8।।

401

हजारों बार मानव-जन्म पाया

हजारों बार मानव-जन्म पाया।
मगर हर बार उसे यूँ ही गँवाया।।
हैं नाना रूप इन नैनों से देखा।
न सुन्दर देव मुझे कोई दृष्टि आया।।
न जाने कितने रस चाखे रसना ने।
अभी रस आज तक चख न पाया।।
बिछा है जाल अपशब्दों का कानों में।
तेरा कीर्तन किसी ने न सुन पाया।।
थके हैं हाथ पर करके कर्म इतने।
किसी गिरते को इनसे न उठाया।।
ये चंचल मन विकल्पों में पड़ा।
न शिव-संकल्प में इसको लगाया।।

समझता था जिसे धन-माल अपना।
न चलती बार कुछ भी हाथ आया।।
हजारों बार मानव-जन्म पाया।
मगर हर बार उसे यूँ ही गँवाया।।

402

हरदम है तैयार तू

हरदम है तैयार तू पाप कमाने के लिए।
कुछ तो समय निकाल प्रभु-गुण गाने के लिए।

गर्भकाल में कौल किया था, नाम जपूँगा मैं तेरा।
इस झूठी दुनिया में आकर, नाम भूल गया मैं तेरा।
ऋषि-मुनि सब आते हैं, समझाने के लिए।।1।।

जब तक तेल, 'दिये' में बाती, जगमग-जगमग हो रहा।
जल गया तेल, बुझ गई बाती, ले चल-ले चल हो रहा।
चार जने मिल जाते हैं, ले जाने के लिए।।2।।

हाड़ जैसे सूखी लकड़ी, केश जले जैसे घास रे।
कंचन जैसी काया जल गई, कोई न आया पास रे।
अपने - पराये रोते हैं दिखलाने के लिए।

403

हे जगदीश्वर हे भगवान्

हे जगदीश्वर हे भगवान्। बहुत निराली तेरी शान।
विश्वविधाता ईश महान्। बहुत निराली तेरी शान।।
अमर अनादि अनन्त अनूपा, नित्य सनातन सत्य स्वरूपा।
अलख निरंजन शक्तिमान, बहुत निराली तेरी शान।।

मात-पिता, बन्धु और भ्राता।
रक्षक, पालक तू सुख दाता।
तू सबका प्राणों का प्राण।
बहुत निराली तेरी शान...

मंगल-जनक अमंगल हारी।
कष्ट-विदारक पर-उपकारी।
दीन-दयाकर कृपानिधान।
बहुत निराली तेरी शान...

पतित सुपावन शंकर स्वामी, परम सहायक अंतर्यामी।
'पथिक' करे तेरा गुणगान, बहुत निराली तेरी शान...।।

404

है विदाई की यह शुभ घड़ी

है विदाई की यह शुभ घड़ी, जाओ प्रीतम-वतन लाड़ली।
सखी, भाभी, भैयाओं की तुम हो प्यारी-दुलारी लली।।
सोने-चाँदी के जेवर हैं जो शोभा तन की बढ़ाते लली।
लाज़, विद्या, विनय, शीलता, सच्चे गहने कहाते लली।।
इनकी महिमा जगत में बड़ी।
है विदाई की यह शुभ घड़ी।।1।।

धर्म-बन्धन में अब बँध गई, नया परिवार तुमको मिला।
इस गृह-वाटिका में नया फूल सुरभित, सुगंधित खिला।।
है सुखद शांति की फुलझड़ी।
है विदाई की यह शुभ घड़ी।।2।।
सीता, सावित्री, लक्ष्मी के सम अपना जीवन बिताओगी तुम।
पति-घर ही नहीं लाड़ली सुयश जगती में पाओगी तुम।।
शुभ - शिक्षा की है ये लड़ी।
है विदाई की यह शुभ घड़ी।।3।।
रखना प्रभु का विश्वास तुम विघ्न-बाधा सभी दूर हो।
प्राप्त विद्या व धन-सम्पदा सभी साधन भी भरपूर हों।।
द्वार लक्ष्मी रहेगी खड़ी।
है विदाई की यह शुभ घड़ी।।4।।

405

हे! प्रिये यह अटल

हे! प्रिये यह अटल व्रत किया ध्रुव सम,
सत्य पथ से कदम न हटाऊँगा मैं।
ले तेरे शीश पर हाथ धरकर कहूँ,
कड़े वक्त में भी निभाऊँगा मैं।।
श्रेष्ठ गृहस्थ आश्रम की डगर पर चलें,
सर्व भांति हृदय में बिठाऊँगा मैं।
लाज दोनों कुलों की रखेंगे प्रिये,
स्वप्न में भी नहीं दिल दुखाऊँगा मैं।।

406

ज्ञान की जोत

ज्ञान की जोत मन में जगा दो प्रभो।
राह भटके हुओं को दिखा दो प्रभो।
क्या करें कुछ समझ में नहीं आ रहा।
बात बिगड़ी हुई है बना दो प्रभो।
ज्ञान की जोत मन में जगा दो प्रभो…
हम सभी लोग आपस में मिलकर रहें।
प्रेम - गंगा हृदय में बहा दो प्रभो।
ज्ञान की जोत मन में जगा दो प्रभो…

सब के अन्तःकरण जगमगाने लगें।
बस अविद्या का परदा हटा दो प्रभो।
ज्ञान की जोत मन में जगा दो प्रभो…
फिर किसी और उलझन में उलझें न हम।
मन की उलझन से दामन छुड़ा दो प्रभो।
ज्ञान की जोत मन में जगा दो प्रभो…
प्यास मन की बुझे एक ही घूँट से।
अपनी भक्ति का अमृत पिला दो प्रभो।
ज्ञान की जोत मन में जगा दो प्रभो…
आ गए हैं 'पथिक' दर पे आशा लिए।
अपने चरणों में हमको बिठा दो प्रभो।
ज्ञान की जोत मन में जगा दो प्रभो…

407

ज्ञान का सागर

ज्ञान का सागर चार वेद यह वाणी है भगवान की।
इसी से मिलती सब सामग्री जीवन के कल्याण की।
ज्ञान का सागर···

सब सच्ची विद्याएँ जग में प्रकट वेद से होती हैं।
यहीं से जाकर सब नदियाँ पृथ्वी का आँगन धोती हैं।
उसी को जीवन सार मिला जिसने इसकी पहचान की।
ज्ञान का सागर···

सृष्टि एक अदालत है और न्यायाधीश विधाता है।
यहीं पे ही हर प्राणी अपने कर्मों का फल पाता है।
वेद के अन्दर सब रचना है विधि के अमर विधान की।
ज्ञान का सागर···

वेद का पढ़ना - पढ़ाना परम धर्म कहलाता है।
सुनना और सुनाना भी कर्त्तव्य बताया जाता है।
वेद ही असली दौलत है दुनिया के हर इन्सान की।
ज्ञान का सागर···

धन्य-धन्य भारत भूमि जिस पर वेदों का गान हुआ।
वेद का अमृत पिया-पिलाया तब यह देश महान् हुआ।
'पथिक' पुण्य भूमि है यह तो ऋषियों की सन्तान की।
ज्ञान का सागर···

आर्य परिवार योजना